

₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

मई 2014

★ उपनिवेशीकरण की काली किताब
–इग्नासियो रामोने

★ पूंजीवाद और आर्थिक शोषण
–डॉ॰ सआदतुल्लाह हुसैनी

★ दया-सागर हज़रत मुहम्मद (स.)
–डॉ॰ फ़ज़ल हुमैन

★ भारत में चुनाव की समस्याएं
–मुहम्मद निज़ामुद्दीन

★ मोदी को समर्थन क्यों ?
–सी॰ के॰ रहमानी



جامعۃ الصّفۃ ورنگل

دعوت دین واقامت دین کیلئے ایک تعلیمی تحریک

الحمدللہ جامعۃ الصفۃ ورنگل اپنے مقاصد کی تکمیل کا جہاں گیارہواں سال مکمل کررہا ہے وہیں پر تحریکی وغیرتحریکی حلقوں میں بھی ایک معروف ومنفرد ادارے کی حیثیت اختیار کرچکا ہے۔2005ء تا 2012ء کے عرصے میں بفضلہٖ تعالیٰ 59 طلباء حفظ قرآن کی تکمیل کرچکے ہیں۔جب کہ گزشتہ تین برسوں میں چھ طلباء دستار فضیلت سے سرفراز ہوکر تحریک اسلامی کی سعی وجہد میں اپنا عملی کردار نبھارہے ہیں۔

جامعہ کے شعبہ عالمیت میں عربی اول تا ششم جماعتیں قائم ہیں جس میں تشنگان علم وخادمان دین اپنے علم کی پیاس بجھارہے ہیں تاکہ معاشرے میں وہ اپنا منصبی فریضہ ادا کرسکیں۔کوشش کی جارہی ہے کہ فارغین جامعہ میں دین کی صحیح فکر، اقامت دین کی تڑپ، عصری علوم سے اتنی واقفیت، مہارت وبصیرت پیدا کی جائے کہ وہ زمانے کے ہر چیلنج کا مطلوبہ اسلوب میں مقابلہ کرسکیں۔

جامعہ میں اس وقت ریاست آندھراپردیش کے مختلف اضلاع کے علاوہ دیگر کچھ مقامات کے طلباء بھی زیر تعلیم ہیں اور تقریباً سارے ہی طلباء دارالاقامہ میں مقیم ہیں۔ان کی رہائش، طعام وتعلیم کے اخراجات اہل خیر حضرات کے تعاون وسرپرستی سے مکمل کیے جاتے ہیں۔(اللہ تعالیٰ انہیں جزائے خیر عطا فرمائے) طلباء کو انگریزی وعلاقائی زبان تلگو بھی پڑھائی جاتی ہے تاکہ وہ برادران وطن میں دعوت دین کا کام انجام دے سکیں۔اس کے علاوہ جامعہ میں کمپیوٹر لیب بھی موجود ہے۔طلباء کی بڑھتی ہوئی تعداد کے پیش نظر دوسری منزل (ہاسٹل) کی تعمیر ضروری ہوگئی ہے جو چھ ہزار اسکوائر فٹ پر مشتمل ہے جس کی تعمیر کا تخمینہ ماہرین نے فی مربع فٹ -/600 روپے لگایا ہے۔اس طرح کل رقم تقریباً (36) لاکھ روپے ہوگی۔ادارے کا ماہانہ خرچ تقریباً -/1,75,000 روپے ہے۔سالانہ اخراجات اور تعمیر کے لئے ادارہ دردمندان ملت وبہی خواہان تحریک سے دست تعاون کی امید بھی رکھتا ہے۔(تعمیر کیلئے کچھ رقم جمع ہوئی ہے اور کچھ رقم کی ضرورت ہے)

نوٹ: کاکتیہ یونیورسٹی اور دیگر کالجوں میں اعلیٰ عصری علوم کیلئے شہر ورنگل آنے والے طلباء کی دینی واخلاقی تربیت اور بہتر رہائش کے علاوہ حصول تعلیم میں یکسوئی کے پیش نظر جامعۃ الصفہ کے ہاسٹل میں رہائش کی سہولتیں فراہم کی گئی ہیں۔چنانچہ جامعہ کے ہاسٹل میں پروفیشنل کورسس میں تعلیم حاصل کرنے والے طلباء مقیم ہیں۔الحمدللہ اسکے اچھے اثرات مرتب ہورہے ہیں۔

تعاون کی شکلیں ◈ شعبہ حفظ کے طلباء کی کفالت کیلئے سالانہ فی طالب علم -/14000 روپے۔◈ شعبہ عالمیت کیلئے فی طالب علم -/18000 روپے۔◈ تعمیری کام کیلئے 6 ہزار مربع فٹ تخمینہ (36) لاکھ روپے فی مربع فٹ -/600 روپے۔◈ اساتذہ وغیر تدریسی عملہ کی تنخواہ کیلئے ماہانہ -/70000 روپے۔

سرپرست جامعہ حضرت مولانا سید جلال الدین عمری مدظلہٗ امیر جماعت اسلامی ہند — ناظم جامعہ محمد خواجہ عارف الدین

پیغام عمل طلباء جامعہ کی دینی وفکری تربیت اور عملی جدوجہد کیلئے ناظم جامعہ جناب محمد خواجہ عارف الدین کی بعد نماز عشاء روز آنہ کی گئی فکری واصلاحی تقریروں کے مجموعے "پیغام عمل" (کتابی شکل) کو عام طور پر تحریکی حلقے میں کافی پسند کیا گیا ہے چنانچہ اب اس کا دوسرا ایڈیشن بھی شائع کردیا گیا ہے۔جامعہ الصفۃ کے علاوہ مکتبہ اسلامی سب ڈپو چھتہ بازار حیدرآباد سے حاصل کیا جاسکتا ہے۔(قیمت -/150 روپے)

JAMIA-TUS-SUFFFAH
Deshaipet Road, Warangal - A. P., India - 506002
Ph: +91-870-2424576, Cell: +91-9849004547 | e-mail:arifjts@yahoo.com
A/c.No.444351498 Indian Bank Mandi Bazar, Warangal A.P. INDIA

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 23 अंक 11 मई 2014

और ऐ नबी, इन्हें दुनिया की ज़िन्दगी की वास्तविकता इस मिसाल से समझाओ कि आज हमने आसमान से पानी बरसा दिया तो ज़मीन की पौध ख़ूब घनी हो गयी और कल वही वनस्पति भुस बनकर रह गयी जिसे हवाएं उड़ाए लिए फिरती हैं। अल्लाह को हर चीज़ पर प्रभुत्व प्राप्त है। –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

09818799223, 011-26949430

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

मतदान के दोहे

सोच-समझकर साथियो, देना अपना वोट ।
पांच वर्ष वरना मिले, मीत चोट पर चोट ।।

बने वोट की चोट से, लोकतंत्र मज़बूत ।
मूलमंत्र सबका यही, मारो चोट अकूत ।।

मत का दाता चुप सही, नहीं उसे संतोष ।
नेताओं के काम पर, सुलग रहा है रोष ।।

नारे-वादे सब सुने, सुन-सुन हुई थकान ।
रोज़गार सबको मिले, करो तभी मतदान ।।

वोटर सब कुछ जानता, बनता है अनजान ।
उदासीन होकर करें, ख़ुद ही कम मतदान ।।

प्रश्न चिन्ह लगने लगा, चुनाव बना मज़ाक़ ।
कटती कम मतदान से, लोकतंत्र की नाक ।।

होता कम मतदान है, चुनाव में हर बार ।
पाकर सीमित वोट फिर, बनें जीत हक़दार ।।

अब गिरते मतदान पर, मिलकर करो विचार ।
मतदान ज़रूरी बने, होगा तभी सुधार ।।

क़ीमत तू पहचान ले, बड़ा क़ीमती वोट ।
वोटर की ताक़त यही, करो समय पर चोट ।।

रहता देख चुनाव में, वोटर ही बलवान ।
उसे मनाते दल सभी, कर उसका गुणगान ।।

वोटर की चांदी हुई, आया है मतदान ।
पांच साल फिर न मिले, मारो अब मैदान ।।

बदलो तख़्तोताज को, बदलो ख़ुद तस्वीर ।
करना सब मतदान तुम, बदले फिर तक़दीर ।।

■ **रोहित यादव**

सैदपुर, मंडी अटेली-123021 (हरि०)



कहां क्या है ?

मतदान के दोहे (कविता)	–रोहित यादव	3
कुरआन ज्योति		5
वे चीज़ें जिनसे रोका गया है (हदीस मंजरी)		6
जनता को भ्रमित न कीजिए (संपादकीय)		7
धर्म के मर्म को समझिए (आपके पत्र)		9
दया-सागर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰)	–डॉ॰ फ़रहत हुसैन	13
एक बहुआयामी व्यक्तित्व (संस्मरण)	–मौलाना हफ़ीज़ुर्रहमान आज़मी	15
वह बोता है आज भी ज़मीन में अठन्नी (कविता)	–ब्रज गोयल राय 'चंचल'	19
भारत में चुनाव की समस्याएं (दृष्टिकोण)	–मुहम्मद निज़ामुद्दीन	21
बदलाव (कहानी)	–श्रुति शर्मा	23
उसकी तह तक (कविता)	–डॉ॰ सुरेश उजाला	25
कांटा (कविता)	–अरुण कुमार श्रीवास्तव	25
उपनिवेशीकरण की काली किताब (विशेष आयोजन)	–इग्नासियो रामोने	26
पूंजीवादी साम्राज्य और आर्थिक शोषण	–डॉ॰ सआदतुल्लाह हुसैनी	29
आर्थिक आज़ादी के लिए मतदाता वृत्ति की ज़रूरत (उद्‌गार)	–रोशनलाल अग्रवाल	33
भिखारी ठाकुर (साहित्यिकी)	–विद्या प्रकाश	36
मोदी को समर्थन क्यों ? (विचार)	–सी॰के॰ रहमानी	37
बिच्छू कोबरा गैंग... (फेसबुक उवाच)	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	39
महिला उत्पीड़न-समस्या क्यों ? (ज्वलंत सामयिक)	–डॉ॰ एम॰ अजमल	41
हानिकारक हैं प्लास्टिक उत्पाद (स्वास्थ्य चर्चा)	–डॉ॰ अनुराग श्रीवास्तव	45
यातायात (कविता)	–ओम प्रकाश बजाज	46
उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका (बालवीथी)	–संपादन प्रभाग	47
शक्तिशाली जीव है घोंघा	–जूही श्रीवास्तव	48
सुनो मेरी बात (कविता)	–यशपाल जैन 'आदर्श'	50

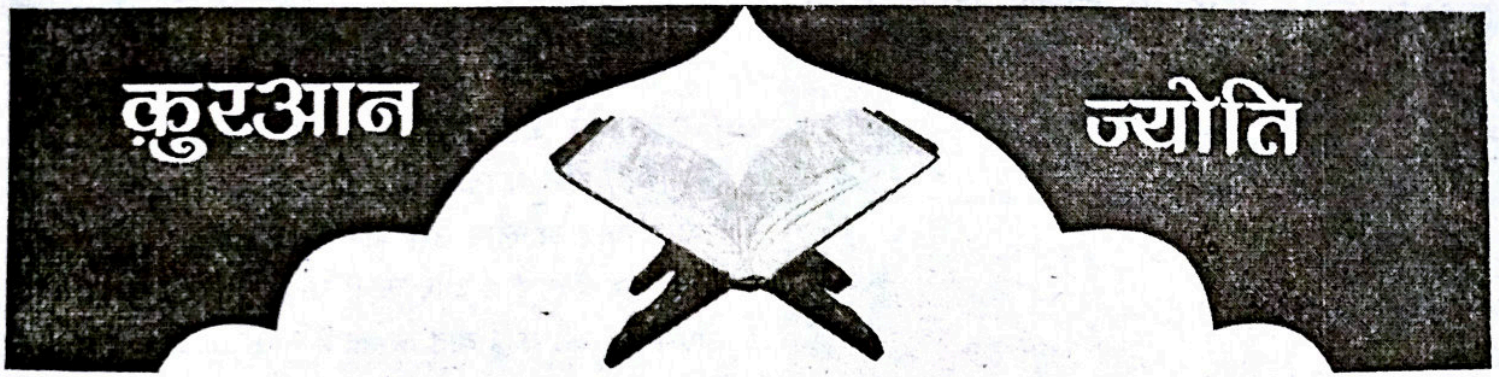

(52) उनसे कहो, "तुम हमारे मामले में जिस चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हो वह इसके सिवा और क्या है कि दो भलाइयों में से एक भलाई है ।[52] और हम तुम्हारे मामले में जिस चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हैं वह यह है कि अल्लाह स्वयं तुमको सज़ा देता है या हमारे हाथों दिलवाता है ? अच्छा तो अब तुम भी प्रतीक्षा करो और हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करते हैं ।"

(53) उनसे कहो, "तुम अपने माल चाहे राज़ी-ख़ुशी ख़र्च करो या नागवारी के साथ[53], बहरहाल वे स्वीकार न किये जाएंगे, क्योंकि तुम फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) लोग हो ।"
(54) उनके दिये हुए हाल के स्वीकार न होने का कोई कारण इसके सिवा नहीं है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इन्कार किया है, नमाज़ के लिए आते हैं तो कसमसाते हुए आते हैं और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं तो अनिच्छा के साथ ख़र्च करते हैं ।

–क़ुरआन, 9 : 52-54

---

52. मुनाफ़िक़ीन अपनी आदत के अनुसार इस अवसर पर भी कुफ़्र और इस्लाम के इस संघर्ष में भाग लेने के बजाय अपनी समझ में ख़ूब सोच-विचार कर दूर बैठे हुए यह देखना चाहते थे कि इस संघर्ष का नतीजा क्या होता है, रसूल (सल्ल॰) और रसूल के साथी (रज़ि॰) जीतकर आते हैं या रूमियों की सैनिक शक्ति से टकराकर टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं । इसका उत्तर उन्हें यह दिया गया कि जिन दो नतीजों में से एक के प्रकट होने का तुम्हें इन्तिज़ार है, ईमान वालों के लिए तो वे दोनों ही सरासर भलाई हैं वे अगर विजयी हों तो उसका भलाई होना तो स्पष्ट ही है, लेकिन अगर अपने उद्देश्य की राह में जानें लड़ाते हुए वे सब के सब हलाक हो जाएं तब भी दुनिया की निगाह में चाहे यह भारी असफलता हो, परन्तु वास्तव में यह भी एक दूसरी सफलता है, इसलिए कि ईमान वाले की सफलता और विफलता की कसौटी यह नहीं है कि उसने कोई देश जीत लिया या नहीं, या कोई शासन स्थापित कर लिया या नहीं, बल्कि उसकी कसौटी यह है कि उसने अपने अल्लाह के कलिमे को उच्च करने के लिए अपने मन व मस्तिष्क और शरीर व प्राण की सारी शक्तियां लड़ा दीं या नहीं । यह काम अगर उसने कर दिया तो वास्तव में वह सफल है, भले ही दुनिया की दृष्टि से उसकी कोशिश का परिणाम शून्य ही क्यों न हो ।

53. कुछ मुनाफ़िक़ ऐसे भी थे जो अपने आपको ख़तरे में डालने के लिए तो तैयार न थे, लेकिन यह भी न चाहते थे कि इस जिहाद और इसकी कोशिश से बिल्कुल ही दूर रहकर मुसलमानों की दृष्टि में अपना सारा महत्व खो दें और अपने निफ़ाक़ (कपटभाव) को एलानिया ज़ाहिर कर दें । इसलिए वे कहते थे कि हम सामरिक सेवा के लिए तो इस समय छूट चाहते हैं लेकिन माल से सहायता करने के लिए हाज़िर हैं ।

For Information On
City Shops, Roads, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com



वे चीज़ें जिनसे रोका गया है

पीठ पीछे निन्दा का निषेध और ज़ुबान की हिफ़ाज़त का आदेश

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "जो व्यक्ति अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसे चाहिए कि भली बात कहे या चुप रहे ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू मूसा (रज़ि॰) से रिवायत है वे कहते हैं : मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), कौन-सा मुसलमान सर्वश्रेष्ठ है ? आपने कहा : "वह जिसकी ज़ुबान और जिसके हाथ से मुसलमान सुरक्षित रहें ।"
–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत सह्ल बिन सअद (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जो व्यक्ति मुझे अपने दोनों जबड़ों के बीच की चीज़ (ज़ुबान) और अपने दोनों पावों के बीच की चीज़ (गुप्तांग) के विषय में ज़मानत दे, तो मैं उसे ज़न्नत की ज़मानत देता हूं ।"
–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्होंने नबी (सल्ल॰) को यह कहते हुए सुना : "एक बन्दा बात करता है और विचार नहीं करता कि बात अच्छी है या नहीं वह उसके कारण दोज़ख़ में उससे कहीं अधिक दूर तक गिर जाता है जितना कि पूर्व और पश्चिम के बीच दूरी है ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "कभी बन्दा अल्लाह तआला की ख़ुशी की बात करता है और उसे उसके महत्व का ज्ञान नहीं होता । अल्लाह उस बात के कारण उसके दर्जों को ऊंचा कर देता है । और कभी बन्दा अल्लाह तआला की अप्रसन्नता की कोई बात कहता है और उसे उसकी गंभीरता की ख़बर नहीं होती उसकी उस बात के कारण जहन्नम में गिर जाता है ।" –बुख़ारी

● हज़रत सुफ़ियान बिन अब्दुल्लाह (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्होंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मुझे आप कोई ऐसी बात बताइए जिसे मैं मज़बूती से पकड़ लूं । आपने कहा : "कहो : मेरा रब अल्लाह है, फिर इस पर जम जाओ ।" मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मेरे विषय में आप किस चीज़ का अधिक भय रखते हैं ? तो आपने अपनी ज़ुबान को पकड़ लिया, फिर कहा : "इससे ।"
–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

● हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "बिना अल्लाह के स्मरण के ज़्यादा बातें न किया करो क्योंकि अल्लाह तआला के स्मरण के बिना ज़्यादा बातों से दिल कठोर हो जाता है और लोगों में सबसे अधिक दूर वह होता है जिसका दिल कठोर है ।" –तिरमिज़ी

● हज़रत उक़बह बिन आमिर (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मुक्ति किस चीज़ के द्वारा प्राप्त होती है ? आपने कहा : "अपनी ज़ुबान को क़ाबू में रखो और अपने घर को काफ़ी समझो और अपने गुनाहों पर रोया करो ।"
–तिरमिज़ी

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

जनता को भ्रमित न कीजिए

लोकसभा का ताज़ा चुनाव अजब-ग़ज़ब है । जो लोग ग़ैर सांप्रदायिक 'घोषित' और पोषित माने जाते थे, उन्होंने भी सांप्रदायिकता की क़तार में खड़े होकर सबको आश्चर्य में डाल दिया है । अभी तक संभ्रांत लेखिका मधु पूर्णिमा किश्वर एक साफ़-सुथरी छवि वाली मानी जाती थीं, वही अब गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को पाक-साफ़ बताने में व्यस्त हैं । उन्होंने अजीबोग़रीब दावा किया है कि मोदी के डी॰एन॰ए॰ में साम्प्रदायिकता नहीं है, बल्कि गोधरा के बाद हुए दंगों को भड़काने का काम कांग्रेस ने किया था । मधु किश्वर ने विगत दिनों दो अप्रैल को अपनी नयी पुस्तक 'मोदी मुस्लिम्स एंड मीडिया-वायसेज़ फ्राम नरेन्द्र मोदीज़ गुजरात' के विमोचन के अवसर पर पत्रकारों से कहा कि यह बिल्कुल ग़लत आरोप है कि गोधरा कांड के बाद हुए गुजरात के दंगों में मोदी का हाथ था, क्योंकि वर्ष 2002 की फ़रवरी में वे उस समय के बजट को अंतिम रूप देने में व्यस्त थे । यह कहते समय वे इस सामान्य बात को भूल गयीं कि मुख्य षड्यंत्रकर्ता घटना के समय वहां मौजूद नहीं रहता । इन लेखिका महोदया ने बिना किसी सबूत के यह भी कह दिया कि गोधरा में साबरमती एक्सप्रेस ट्रेन जलाने की घटना से जुड़े लोगों के पाकिस्तानी खुफ़िया एजेंसी आई॰एस॰आई॰ से ताल्लुक़ थे और उनमें से कई कांग्रेस से भी जुड़े थे । किश्वर ने कहा कि मोदी ने कभी हिन्दुत्व की बात नहीं की बल्कि उन्होंने हमेशा पांच करोड़ गुजरातियों की बात की जिनमें मुस्लिम भी हैं । उन्होंने राज्य के मुसलमानों से जुड़े कई मसलों को भी सुलझाया है, लेकिन वे यह बताने में असमर्थ रहीं कि किन मसलों को उन्होंने सुलझाया है । वस्तुस्थिति यह है कि उन्होंने केवल दमन किया है ।

किश्वर ने यह भी कहा कि अगर कोई मोदी पर ग़लत करने का आरोप लगाता है तो उसे उनके सही कामों के लिए उनकी तारीफ़ करने का साहस भी दिखाना चाहिए । गुजरात में पूरी शांति है और वहां वर्ष 2002 के बाद से कोई दंगे नहीं हुए । उन्होंने इस तरह के आरोप लगाने वाली कांग्रेस पार्टी पर प्रहार करते हुए कहा अगर मोदी की दंगों में संलिप्तता होती, तो कांग्रेस ऐसा करने वाले समाजवादी पार्टी नेता मुलायम सिंह यादव की तरह उन्हें भी गले लगा लेती । अपनी पुस्तक की चर्चा करते हुए किश्वर ने कहा कि यह मोदी के शासन उन पर हुए मीडिया कवरेज दंगों जैसे मुद्दों तथा उच्चतम न्यायालय से उन्हें 2002 दंगों के मामले में मिली क्लीन चिट आदि के बारे में उनके गहरे अध्ययन का परिणाम है । यह पुस्तक मानुषी पब्लिकेशन्स, नयी दिल्ली द्वारा प्रकाशित है, जिसकी क़ीमत 401 रुपये है । वास्तव में यह पुस्तक लोकसभा चुनाव के मद्देनज़र मोदी के छवि सुधार अभियान का हिस्सा है । प्रकाशन समय के अंतर को छोड़ दें, तो यह लगभग वैसी ही पुस्तक है, जैसी एम॰वी॰ कामथ ने लिखी थी । उस पुस्तक का नाम है 'नरेन्द्र मोदी : मैन एट द मोमेंट' । इसमें मोदी के जीवन के कुछ पहलू हैं, लेकिन उनकी और मधु की पुस्तक की थीम एक-सी है । वह है मोदी की विद्रूपता की सफ़ाई ! मधु ने भ्रमों के निराकरण में अतिशयोक्ति से भी काम लिया है । अंतिम अध्याय में यह फ़रमा कर पुस्तक को काल्पनिक बना देतीं हैं कि मोदी के विचार गांधी जी और गौतम बुद्ध जी से जुड़ते हैं ! इसकी भूमिका लिखने वाले सलीम ख़ान (फ़िल्म अभिनेता सलमान ख़ान के पिता) ने भी जो बातें कहीं हैं,

(शेष पृष्ठ 11 पर)

मकतबा अलफहीम मऊ

की नई हिंदी इस्लामी पुस्तकें

मुख्तसर तफसीर अहसनुल बयान	450/=	सुन्नत के मसाइल इकबाल कीलानी	80/=
बुलूगुल मराम	275/=	तौहीद के आंसू	65/=
नबूवत की किरनें मौ० सफीउरहमान मो०	275/=	हमारी दावत किताब व सून्नत	40/=
हुकूकुलएबाद सलाहुददीन यूसुफ	55/=	चेहरे का पर्दा मुस्तहब या वाजिब //	20/=
हुकूकुल औलाद सलाहुददीन यूसुफ	50/=	मुहम्मद(स०) हिन्दू किताबों में	65/=
हुकूकुज़्ज़ौजैन सलाहुददीन यूसुफ	32/=	तावीज़ गंडा की हक़ीक़त	25/=
सैय्यदना अबू बक्र सिद्दीक रज़ि:	25/=	और मैं मर गया	32/=
सैय्यदना उमर फारूक रज़ि:	25/=	मसला उर्स और ग्यारहवीं	25/=
सैय्यदना उसमान गनी रज़ि:	25/=	इस्लाम और इमान के अरकान	80/=
सैय्यदना अली मुर्तज़ा रज़ि:	25/=	किताबुत्तौहीद	75/=
इस्लाम पर ४० एतेराज़ात और उसके जवाबात	80/=	कुरआन की शीतल छाया	85/=
कुरआन और विज्ञान डा. ज़ाकिर नाइक	50/=	अल्लाह और उसके रसूल की पहचान	50/=
इस्लाम और हिन्दू धर्म में समानताएं //	50/=	जादू का इलाज	85/=
क्या कुरआन ईश्वरीय ग्रन्थ है //	60/=	कलमा-ए-तौहीद अर्थ, महत्तव, फज़ीलत	28/=
विशेष धर्मों में ईश्वर की कल्पना //	28/=	इस्लाम एक नज़र में	50/=
इस्लाम में औरतों के अधिकार //	60/=	इस्लाम खालिस क्या है	22/=
इस्लाम आतंकवाद या भाईचारा //	50/=	इस्लामी अक़ीदा	22/=
मांसाहार उचित या अनुचित //	60/=	मुसलमान का अक़ीदा(पाकेट)	12/=
जन्नत का बयान इकवाल कीलानी	120/=	मासूरह दुआएं	30/=
जहन्नम का बयान इकबाल कीलानी	130/=	हिसनुल मुसलिम(उच्चारण सहित)	40/=
नमाज़ के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=	हिसनुल मुसलिम	35/=
तौहीद के मसाइल इकबाल कीलानी	120/=	परदा	35/=

आप घर बैठे किताबें VPP डाक द्वारा मँगा सकते हैं। एकाउंट में रक्म ट्रांस्फर करने पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा किताबें भेजने की सुविधा है।

MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com

धर्म के मर्म को समझिए

'कान्ति' पत्रिका का हर अंक समय से मिल रहा है और इस तत्परता के लिए संपादक मंडल को अशेष धन्यवाद । पत्रिका में दी गयी सभी रचनाएं प्रेरणादायी होती है । इस्लामी सद्क्रान्ति ने बेतरतीब बिखरे समाज को एक दृढ़ता, स्थायित्व, सुचालन प्रदान किया । उस ज़माने में इस तरह का कार्य सोचना, उसे फलीभूत करना, मंज़िल तक पहुंचाना कोई आसान काम नहीं था, पर इस हिमालयी कार्य को आदरणीय महानतम, अद्वितीय व्यक्तित्व वाले महापुरुष हज़रत मुहम्मद साहब ने कर दिखाया और बड़े संघर्ष के बाद उस जंगली समाज, उस बिखरे कुनबे को सच्चाई की राह पर लाने का सद्कार्य किया । लोगों की आंखें खुली और उसके बाद सुधार कार्य आगे भी उनकी देख-रेख में संपन्न हुआ ।

'कान्ति' के मार्च 2014 अंक में प्रकाशित 'विशेष आयोजन' के तहत हज़रत मुहम्मद साहब के बारे में कइयों ने अपने सुविचार रखे । इन्हें पढ़कर सोचना पड़ा कि हर जाति, हर धर्म के लोगों ने मुहम्मद साहब और इस्लाम धर्म की बारीकियों, गुणवत्ता को समझा व परखा है ।

इस पूरे आलेख को पढ़ने के बाद मेरे मन में भी एक विचार उठ रहा है कि आज दुनिया का हर इन्सान किसी न किसी धर्म को मानता है, और हर धर्म ने मनुष्यों को एक संग मिल-जुलकर प्रेमभाव से रहने की शिक्षा दी है, पर अपने सीने पर हाथ रखकर ईमानदारी से कोई बताए कि क्या उसने शत-प्रतिशत अपने धर्म को समझा है ?

धर्म ग्रंथों में निहित मानवोपकारी संदेशों को पढ़कर क्या अच्छे काम किये हैं ? दुनिया में इतने सारे धर्मों के होते हुए भी कहीं किसी स्थान पर अमन-शांति नहीं । धर्म के नाम पर आज भी हज़ारों-लाखों लोग कट-मर रहे हैं । लोगों को अपना अहम, अहंकार, दुर्बुद्धि आदि कुरूचिपूर्ण सोच-विचार त्याग कर मानवोपकारी सन्देशों को अपने जीवन में उतारना होगा ।

'स्वास्थ्य चर्चा' के अंतर्गत 'फ़ायदेमंद है हरी चाय, पढ़कर काफ़ी जानकारी मिली । सच कहूं तो इसे पढ़ने के बाद मैंने इस पर अमल भी किया । बाज़ार में ग्रीन टी उपलब्ध है चाहे तो कोई ख़रीद सकता है । और वैसे भी दूध-पानी चाय को एकसंग नहीं खौलाना चाहिए । बेमतलब का उबलना चाय को हानिकारक बना देता है । कुछ दिनों से ग्रीन टी का प्रचार-प्रसार हर पत्र-पत्रिका में किया जा रहा है, यह अच्छी बात है । लेखक ज्योतिर्मय आनन्द जी को इस लेख के लिए धन्यवाद । यहां एक बात और कहती चलूं-जैसे जापान में हरी चाय का प्रचलन है, वैसे ही पूरे चीन देश में भी ग्रीन टी चलती है ।

चीन देश घूमने के दौरान हमें पन्द्रह दिनों में कहीं भी, एक बार भी दूध चीनी चाय का सम्मिश्रण देखने को नहीं मिला । जैसे जापानी मस्त हैं, वैसे चीनी लोग भी हेल्दी और मोटापे से बचे हुए हैं । ग्रीन टी से जहां बहुत-सी बीमारियां दूर रहती हैं वहीं मोटापा भी दूर रहता है ।

'फेसबुक उवाच' के तहत 'समलैंगिकता व उदारवाद !' पढ़ने को मिला । समलैंगिकता को जायज़ और उचित ठहराना बिल्कुल ग़लत है । प्रकृति के ख़िलाफ़ जाने का परिणाम कभी सही नहीं हो सकता । डॉ॰ मुहम्मद अहमद जी का कहना शत-प्रतिशत सही है । यह एक विकृत स्वच्छन्द और अमर्यादित सोच है, यहां तक कि हर धर्म ने भी इसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठायी है, पर आश्चर्य ! ईसाइयों के सबसे बड़े धर्मगुरु पोप फ्रांसिस ने इसे कैसे उचित क़रार दिया ? उनके इस समर्थन से समलैंगिक लोगों का उत्साह बढ़ना लाज़िमी है । अब इस सोच को क्या कहा जाए...।

ख़ैर चलिए इसके विपरीत हमारे भारत में समलैंगिक होना क़ानून व समाज की नज़र में ग़ैर-क़ानूनी व कलंकित घोषित कर दिया गया । बड़ा शोर-गुल, हो-हल्ला मचा । न्यूज़ चैनलों में इस क़ानून के विरोध में सैकड़ों हज़ारों की संख्या में लोगों ने सड़क पर उतर अपना आक्रोश प्रकट किया तथा अख़बारों में तरह-तरह की बयानबाज़ी भी हुई । ऐसे प्रतिवादी लोगों को देख बड़ा अफ़सोस, क्षोभ व आश्चर्य हुआ । क्या इक्कीसवीं सदी व आधुनिकता की आड़ में हम अपने पारिवारिक सुख-चैन व अपनी आस्था से मुख नहीं

मोड़ रहे ? जो समलैंगिक हैं उनके साथ उनका पूरा परिवार व समाज भी जुड़ा है । क्या जानते-बूझते वे उन्हें तकलीफ़ नहीं दे रहे ?

दरअस्ल हम बेहद असंतोषी, खुदग़र्ज़, आत्म केन्द्रित जीव हो गये हैं । बंधे-बंधाये नियमों को तोड़ना और अपनी मनमर्ज़ी ही सर्वोपरि हो गयी है–नदी का एक किनारा नि:श्वास लेकर कहता है–''संपूर्ण सुख सामने किनारे पर ही है ।'' नदी का दूसरा किनारा आहें भर कर कहता है, ''दुनिया में जितना सुख है वह सामने वाले किनारे पर है ।'' दरअस्ल लोगों ने सुख व उसकी प्राप्ति का मार्ग ही ग़लत चुन लिया है...।

माला वर्मा

हाजी नगर, 24 परगना उत्तर,

(प॰ बंगाल)-742135

नैतिक मूल्यों से दूर होती शिक्षा

मासिक पत्रिका 'कान्ति' का मार्च 2014 का अंक मुझे प्राप्त हुआ । 'मुद्दा' के अंतर्गत शीर्षक 'उपेक्षित न हों समाज सुधार' लेखक भरत डोगरा का मैंने सरसरी दृष्टिकोण से अध्ययन किया । श्री डोगरा जी के विचारों का पूर्णतया समर्थक हूं । मैंने इसका निष्कर्ष जो निकाला, संक्षिप्त रूप में इस प्रकार है ।

शिक्षा का मौजूदा ढांचा सामाजिक एवं राष्ट्रीय संकटों के प्रति ज़िम्मेदारी नहीं बनाता है । नक़ल न तो ज्ञान है और न ही सत्य, जबकि नक़ल कर मिलने वाले अंक ज्ञान एवं सत्य के रूप में स्थापित होते हैं । यानी जिस शिक्षा से भ्रम को दूर करने की आशा की जा रही थी, वहीं भ्रम का विस्तार कर रही है । मौजूदा सामाजिक परिप्रेक्ष्य आत्मबोध की दहलीज़ तक पहुंचाने में सक्षम नहीं है । लोगों की सोच में आत्मविश्वास, स्वाभिमान, आत्मबल में बढ़ोत्तरी होने के बजाय अंधविश्वास और पोंगापंथी (निराधार झूठ-कपट) हावी हो रही है । जिन माता-पिता ने पाल-पोसकर बड़ा किया, उनका तिरस्कार कर झक बने पाखंडियों के पास अपना आत्म-सम्मान गिरवी रख देते हैं ।

भारतीय संस्कृति को वैश्वीकरण, भूमंडलीकरण का नाम देकर इसकी आड़ में षड्यंत्रों की संरचना हो रही है । ग्लोबल विलेज या वैश्विक गांव जो आंख से अंधा पर नाम नयन सुख वाली कहावत चरितार्थ करता है । उदारीकरण के नाम पर हमारी पारंपरिक जीवन पद्धति संयमित आचार व्यवहार, शिष्ट और मर्यादित जीवनशैली आदि को नष्ट-भ्रष्ट करके, युवा पीढ़ी को उपभोक्तावाद मौज-मस्ती का पाठ पढ़ाया जा रहा है, भ्रमित किया जा रहा है । आधुनिक शिक्षा के नाम पर एक ऐसा षड्यंत्र जिसमें ग़लत का विरोध तो दूर सही का साथ खड़े होने की मानसिकता का अभाव पैदा कर दिया है ।

रामस्वरूप झैवर

भीलवाड़ा (राज॰)

अभ्यास बढ़ाये आत्मविश्वास

अभ्यास से ही किसी काम में पारंगत हुआ जा सकता है । अभ्यास व्यक्ति को पूर्ण बनाता है । जहां अभ्यास नहीं, वहां आत्मविश्वास डोल जाता है । व्यक्ति अभ्यास और प्रयास से ही पूर्ण या परफेक्ट होता है ।

अंजू को अंग्रेज़ी सीखने की प्रबल इच्छा थी । इसके लिए वह कड़ी मेहनत भी करती थी । फिर भी उसकी अंग्रेज़ी में ख़ास सुधार नहीं हो पाया था । बहुत प्रयास से भी जब उसकी अंग्रेज़ी में सुधार नहीं हो पाया तो वह टूट गयी । उसका आत्मविश्वास डोलने लगा । वह इस असफलता से डरकर अभ्यास करना ही भूल गयी । अभ्यास ही ऐसा मंत्र है, जिससे किसी भी क़िले को जीता जा सकता है ।

सोनाक्षी ने उसे लगातार अभ्यास करते रहने पर ज़ोर दिया । उसने हिम्मत जुटा कर फिर से अभ्यास करना शुरू किया । धीरे-धीरे उसकी अंग्रेज़ी में काफ़ी सुधार होता गया । आज अंजू अंग्रेज़ी में इतनी मज़बूत पकड़ बना ली है कि वह अब कहीं भी बेहिचक अंग्रेज़ी बोल लेती है । उसकी नौकरी भी अच्छी कंपनी में लग गयी है । चाहे खेल का मैदान हो या शिक्षा का क्षेत्र हर जगह पर कठिन परिश्रम के साथ अभ्यास और प्रयास का होना भी बहुत अहम होता है ।

विकास कई बार प्रतियोगिता परीक्षा में बैठ चुका है । लगातार असफल होने से निराशा के भंवर में फंसकर उसका आत्मविश्वास खो गया, लेकिन उसने अभ्यास नहीं छोड़ा । उसके जैसे कितने हैं जो असफल होकर भी प्रयास और अभ्यास को निरंतर जारी रखे हुए हैं ।

जहां अभ्यास है वहां असफलता टिक ही नहीं पाती है । आप जितना अभ्यास करेंगे उतना आत्मविश्वास से काम को अंजाम देंगे ।

हर खेल से पहले अभ्यास करवाया जाता है ताकि

खिलाड़ियों का उत्साह और आत्मबल बढ़ें । जीतने की चाह तो अभ्यास से ही आती है ।

आप जितना अभ्यास करेंगे उतना ही आत्मविश्वास के साथ उसे संपूर्ण करने में आप सक्षम होंगे । अभ्यास से ही व्यक्ति पूर्ण होता है । कहा जाता है प्रैक्टिस मेक मैन परफेक्ट । यह उक्ति हर व्यक्ति पर फिट बैठती है ।

हर व्यक्ति जीरों से शुरू करता है और अपने कार्य में अभ्यास और प्रयास से सफलता के शिखर पर जा पहुंचता है ।

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजात आपने यह कहावत सुनी होगी । यह कहावत हमें अभ्यास करते रहने की प्रेरणा देती है । कैसे मिट्टी का घड़ा पत्थर पर भी अपना निशान बना देता है ।

किसी भी कार्य को पूर्ण और कुशलता से करने के लिए अभ्यास अतिआवश्यक है । इससे ही आप अपने कार्य में कुशल होते हैं । जितना अभ्यास आप करते जाते हैं उतनी कुशलता आपके काम आती जाती है ।

जीतने के लिए अभ्यास अत्यावश्यक है । असफलता झेलने वालों के लिए तो अभ्यास ही वह अमोघ औषधि है जिससे वह कोई भी क़िला जीत सकता है । किसी भी क्षेत्र में विजय होने के लिए अभ्यास करते रहें । जितना अभ्यास उतनी कुशलता और विश्वास से आप काम को निपुणता से करेंगे ।

याद रखें, अभ्यास ही आत्मविश्वास को बढ़ाता है और इससे आपकी सफलता की मंज़िल आसान होती है ।

मुहम्मद अफ़ज़ल
हज़ारी बाग़, झारखंड़

नवज्योति

'कान्ति' एक सजग और सशक्त मशाल है, जो सच्चाई की राह पर नये-नये कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं, मैं 'कान्ति' की पाठक होने के साथ-साथ उसमें लिखे गये नये आयामों का विश्लेषण भी करती हूं । आपके अंकों में महिलाओं तथा संस्कृति को संजो कर रखने की पहल की जा रही है, जो निर्विवाद एक सार्थक प्रयास है । आज के समय जहां हमने कहीं न कहीं अपने मूल्यों को धूमिल किया है, वहीं 'कान्ति' समाज के लिए विशेषकर युवा वर्ग के लिए नयी उम्मीद और जोश को उजागर करने हेतु अडिग है । ऐसी बहुत कम पत्रिकाएं हैं जहां मूलता और नवीनता का ध्यान रखा जाता है । 'कान्ति जिस प्रकार नये संपादकों को अपनी प्रतिभा देखाने का अवसर प्रदान करती है वह प्रशंसनीय है । मेरे लिए आपका प्रत्येक अंक पठनीय व ज्ञानवर्धक है । धर्म के प्रति एक निर्मल दृष्टिकोण व राष्ट्र को उजागर करने हेतु आपके प्रयास आपके लेखों में स्पष्ट दिखते हैं । 'कान्ति' वह प्रकाश है जिसके प्रभाव से समाज में उजाला है ।

समाज का गंदा चेहरा हम सबके सामने आकर हम से सवाल करता है कि आख़िर क्यों हुई इस देश की आत्मा इतनी मैली ? 'कान्ति' ने यह सिद्ध कर दिया है कि क़लम की ताक़त चाहे तो सारे संसार को एक नयी दिशा दे सकती है बिना किसी रक्तपात के । हम सब जानते हैं कि आज हमारे चारों ओर कितना अनाचार है पर ग़लत को ग़लत कहने से नहीं बल्कि सही करने से फ़र्क़ पड़ता है और 'कान्ति' देश की आत्मा और चेहरे दोनों को ख़ूबसूरत बनाने हेतु अग्रणी है । बहुत सारी शुभकामनाएं हैं हमारी 'कान्ति' के साथ, अनन्त काल तक रोशन रहे 'कान्ति' यही दुआ है हमारी ।

दीप्ति सक्सेना
पुणे, महाराष्ट्र

जनता को भ्रमित न कीजिए

(पृष्ठ 7 का शेष)

वे किसी न्यायप्रिय, विवेकशील के गले नहीं उतरने वाली हैं । कुल मिलाकर किश्वर का यह प्रयास निंदनीय है । साथ ही मोदी को सत्ता में लाने का उनका एक वीडियो बनाने का अन्य कुप्रयास भी निंदनीय है, जिसमें गांधीजी के पौत्र राजमोहन गांधी, जो पूर्वी दिल्ली से 'आप' के लोकसभा प्रत्याशी हैं, का चरित्र हनन किया गया है । वीडियो में वह शख़्स जिसे राजमोहन गांधी ने बचपन में रंगमंच की शिक्षा दिलवायी थी, मधु के पास पहुंचकर कहता है कि 'आप' पार्टी का गठन गांधी ने सी॰आई॰ए॰ के साथ मिलकर करवा दिया है । यह आरोप भी लगाया गया है कि गांधी हिन्दुओं को ईसाई बनाते हैं । यह वीडियो यूट्यूब के इस लिंक पर मौजूद है https:// www.youtube.com/watchv= Dh3ELCJFIdo#t=1055 । स्पष्ट है, जनता को भ्रमित करने के ये प्रयास किसी भी दृष्टि से उचित नहीं हैं । इन पर रोक लगनी चाहिए ।

हमारी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें

इस्लाम एक सामान्य परिचय	—शैख़ अली तंतावी	90.00
इस्लाम एक स्वयंसिद्ध ईश्वरीय जीवन व्यवस्था	—राजेन्द्र नारायण लाल	25.00
प्यारे नबी की पाक ज़िन्दगी	—एजाजुल हक़ क़ुद्दूसी	30.00
इतिहास के साथ यह अन्याय	—बी॰ एन॰ पाण्डे	7.00
मेरे दावती तजुर्बात (प्रथम)	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	25.00
ग़लत फ़हमियों का निवारण	—डॉ॰ ज़ाकिर नाइक	25.00
क़ुरआन और हम मुसलमान	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
क़ुरआन का पैग़ाम	—ख़ुर्रम मुराद	10.00
क़ुरआन पर अनुचित आक्षेप	—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	15.00
हमें ख़ुदा कैसे मिला?	—अब्दुल ग़नी फ़ारूक़	100.00
इस्लाम आतंक या आदर्श?	—स्वामी लक्ष्मी शंकराचार्य	40.00
इस्लाम और इनसान (1-6)	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	84.00
दलित समस्या जड़ में कौन?	—इन्तिज़ार नईम	140.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और भारतीय धर्म-ग्रंथ	—डॉ॰ एम॰ ए॰ श्रीवास्तव	18.00
इस्लामी सभ्यता	—मुंशी प्रेम चन्द्र	5.00
क़ुरआन पुकारता है "ऐ लोगो..."	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
आधुनिक नारी	—नुज़हत यासमीन	10.00
इस्लाम एक मात्र रास्ता	—मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	12.00
शैतानी धोखे के विभिन्न रूप	—डॉ॰ सैयद शाहिद अली	40.00

हमारी सभी पुस्तकें मर्कज़ी मक्तबा इस्लामी पब्लिशर्स से भी प्राप्त की जा सकती हैं।

MADHUR SANDESH SANGAM

E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025

E-mail : madhursandeshsangam@yahoo.co.in, Ph. : 9212356332

दया-सागर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

■ डॉ० फ़रहत हुसैन

ईश्वर अत्यन्त क्षमा करने वाला है, इसलिए उसे क्षमा करने वाले मनुष्य पसन्द हैं और इसी का आदेश पवित्र कुरआन में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और आस्थावान लोगों को दिया गया–

"(ऐ नबी) तुम उनसे क्षमा का बर्ताव करो और उनके लिए मुक्ति की दुआ करते रहो।" (कुरआन, 3:159)

"वे लोग जो संपन्नता और तंगी, हर परिस्थिति में (ईश मार्ग में) ख़र्च करते हैं और गुस्से को पी जाते हैं और लोगों के साथ क्षमाशीलता का व्यवहार करते हैं, तो अल्लाह भलाई करने वाले ऐसे लोगों को पसन्द करता है।"

(कुरआन, 3:134)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) स्वयं बहुत क्षमा करते थे। आपने अपने कट्टर दुश्मनों को भी उस समय माफ़ कर दिया जब आप उन पर पूरा नियंत्रण पा चुके थे। इसी प्रकार की दीक्षा आप अपने अनुयायियों को भी देते थे। एक व्यक्ति ने नबी (सल्ल०) से पूछा कि मैं अपने सेवक को अधिकतम कितनी बार क्षमा करूं। आपने कहा, "प्रत्येक दिन सत्तर बार।" (हदीस : तिर्मिज़ी)

सबके साथ दयाभाव

इस्लाम का अमन व शान्ति का सन्देश सभी इन्सानों के लिए है, कुरआन के प्रारंभिक अंश में सभी इन्सानों से संबोधन है–

"ऐ लोगो ! बन्दगी करो अपने पालनहार की जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया।"

(कुरआन, 2:21)

परन्तु इन्सान को आचार-विचार की स्वतंत्रता भी दी गयी है, इसके अनुसार वह चाहे तो इस्लाम को अपनाये अथवा अस्वीकार करे। कुरआन में अल्लाह फ़रमाता है–

"कह दो : "यह सत्य है तुम्हारे रब की ओर से। तो अब जो कोई चाहे माने और जो चाहे इन्कार कर दे।"

(कुरआन, 18:29)

यह भी घोषणा कर दी गयी कि इस्लाम स्वीकार करने के लिए दबाव नहीं डाला जाएगा–

"दीन (धर्म) में कोई ज़बरदस्ती नहीं।"

(कुरआन, 2:256)

दूसरे धर्म के लोगों के पूज्य को बुरा कहने से रोक दिया गया–

"ये लोग अल्लाह के सिवा जिनको पुकारते हैं उन्हें बुरा-भला न कहो।" (कुरआन, 6:108)

तटस्थ व उदासीन ग़ैर-मुस्लिमों से अच्छा व्यवहार करने की ताकीद की गयी।

"अल्लाह तुमको उन लोगों के साथ एहसान करने और न्याय का व्यवहार करने से मना नहीं करता जो तुम से धर्म के बारे में नहीं लड़े और तुमको तुम्हारे घरों से नहीं निकाला।" (कुरआन, 60:8)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के समय में पहली ग़ैर-मुस्लिम प्रजा 'नजरान' के ईसाइयों की थी। आप (सल्ल०) ने लिखित घोषणा-पत्र द्वारा उन्हें जो अधिकार दिये थे उनका सार इस प्रकार है–

1. उनके जान-माल और जायदाद सुरक्षित रहेंगे।
2. उनके धार्मिक प्रबंध अपरिवर्तित रहेंगे।
3. उनसे सैन्य सेवा नहीं ली जाएगी।
4. उनके देश पर सैन्य कार्यवाही नहीं होगी।
5. मुक़द्दमों में न्याय होगा, कोई अत्याचार न होने पाएगा।
6. ब्याज पूर्ण रूप से प्रतिबंधित होगा।

इस्लाम के दूसरे शासनाध्यक्ष हज़रत उमर (रज़ि०) के ज़माने में जब यरुशलम पर विजय प्राप्त हुई तो वहां की ईसाई प्रजा को लगभग यही अधिकार प्रदान किये थे।

ईसाई विद्वान सर आर्नल्ड ने अपनी पुस्तक 'Preachings of Islam' में इसी तथ्य को इंगित किया है–स्वयं मुहम्मद (सल्ल०) ने कई ईसाई क़बीलों से समझौते किये जिनके अनुसार आपने उनकी सुरक्षा का ज़िम्मा लिया, उन्हें अपने धर्म पर आज़ादी के साथ अमल करने की गारंटी दी, उनके

धार्मिक नेताओं के उन तमाम अधिकारों और सत्ता को बाक़ी रखा जो उन्हें इस्लाम से पहले प्राप्त थी । (पृ॰ 48)

महिला वर्ग पर विशेष दयालुता

डॉक्टर उस मरीज़ की ओर तुरन्त ध्यान देता है जो नाज़ुक व आपात स्थिति में हो । इस्लाम ने महिला वर्ग पर इसी लिए विशेष दयालुता की क्योंकि यह वर्ग भी दबा-कुचला और शोषण का शिकार था । अरब में नारी का अस्तित्व ही अभिशाप माना जाता था और बेटी का पैदा होना एक अपशकुन था, जिन्हें दुनिया में जीने का अधिकार नहीं था । ऐसी प्रतिकूल व विषम परिस्थिति में हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने नारी-जगत के लिए एकदम अनुकूल वातावरण बनाया, यह किसी चमत्कार से कम नहीं । अफ़सोस कि लोगों के दुष्प्रचार का हम भी शिकार हैं, इसलिए इस्लाम की शीतल छाया से लाभांवित नहीं हो पाते । इस्लाम ने नारी-जगत पर जो अद्वितीय अनुकम्पा और कृपा की है, यहां पर उसकी एक झलक ही प्रस्तुत की जा सकती है ।

1. औरत भी वैसी इन्सान है जैसा मर्द है (कुरआन, 4:1) और दोनों वर्ग आध्यात्मिक उन्नति कर सकते हैं–

"उनके रब ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और कहा कि मैं तुममें से किसी कर्म करने वाले के कर्म को अकारथ नहीं करूंगा चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, तुम सब आपस में एक-दूसरे से हो ।" (कुरआन, 3:195)

2. कुरआन ने इस अवधारणा को समाप्त किया कि नारी स्वर्ग में नहीं जाएगी । (कुरआन, 4:124)

3. ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के कथनानुसार–

● दो बेटियों के पालन-पोषण पर परलोक में हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का साथ होने की सूचना । बेटी के पैदा होने के स्थान को फ़रिश्तों द्वारा घेर लेना ।

● बेटियां माता-पिता के लिए नरक से आड़ का माध्यम ।

● मां के पैरों तले जन्नत (स्वर्ग)।

● सन्तान द्वारा सेवा-भाव में माता को प्राथमिकता ।

● दुनिया की नेमतों में बड़ी नेमत नेक (व चरित्रवान) पत्नी ।

● कन्या-वध घोर व जघन्य अपराध ।

4. आर्थिक क्षेत्र में नारी को सबसे पहले अधिकार इस्लाम ने ही दिया–

● विवाह के समय महर (विवाह धन-राशि) अनिवार्य। (कुरआन, 4:4)

● पिता, पति और पुत्र की छोड़ी हुई सम्पत्ति में उत्तराधिकार ।

● बेटी, पत्नी, मां और बहन–हर हैसियत में उस पर जीविकोपार्जन या वित्तीय बोझ नहीं–यह ज़िम्मेदारी पिता, पति, पुत्र, भाई की होगी ।

● महिला को प्राप्त धन-सम्पत्ति पर उसका पूर्ण मालिकाना अधिकार ।

● वह अपने धन से कारोबार स्वयं कर सकती है या कहीं निवेश कर सकती है ।

5. सामाजिक अधिकार–

● निकाह के लिए लड़की की रज़ामन्दी ज़रूरी है ।

● यदि पति नाकारा या अत्याचारी हो तो ख़ुलअ (तलाक़ प्राप्त करने) का अधिकार है ।

● विधवा तथा तलाक़शुदा औरतों को विवाह का अधिकार, बल्कि प्रोत्साहन ।

● दीवानी और फ़ौजदारी क़ानूनों में मर्द-औरत के अधिकार एक जैसे हैं ।

साहित्य समाचार

डॉ॰ मुहम्मद अहमद सहित तीन संपादक महोदयों को दी गयी "संपादक श्री" की उपाधियां

फ़रीदकोट (पंजाब) : अंग्रेज़ी, हिन्दी और पंजाबी साहित्य के विकास व प्रसार के लिए तत्पर एकमात्र ग़ैर-सरकारी साहित्यिक संस्था "आलराउंड अकादमी" की ओर से तीन पत्रिकाओं के संपादक महोदयों को 'संपादक श्री' की उपाधि प्रदान की गयी है ।

पत्रिका 'कान्ति' के संपादक डॉ॰ मुहम्मद अहमद, पत्रिका 'अध्यात्म अमृत' के संपादक श्री कृष्णचन्द्र टवाणी और पत्रिका 'कौशिकी' के संपादक श्री कैलाश झा 'किंकर' को हिन्दी साहित्य में उत्कृष्ट संपादन के लिए उक्त उपाधि प्रदान की गयी है । पंजाब के ज़िला फ़रीदकोट में स्थापित आलराउंड अकादमी के अध्यक्ष श्री अमित कुमार लाडी ने उक्त सभी तीन संपादक महोदयों को संपादक श्री की उपाधि मिलने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं ।

एक बहुआयामी व्यक्तित्व

❖ मौलाना हफ़ीज़ुर्रहमान आज़मी

सन 1961 ई० के आरंभ में जामिया दारुस्सलाम उमराबाद से शिक्षा प्राप्त करने के फ़ौरन बाद मैंने दिल्ली जाने का इरादा किया, तो मेरे उस्ताद मौलाना सैयद अमीन साहब (मरहूम) ने मज़ाकिया लहज़े में कहा कि क्या आप मंत्री बनने के लिए दिल्ली जा रहे हैं ? तो मैंने उत्तर दिया, 'नहीं तख़्तो-ताज की आरज़ू, नहीं बज़्मे शाह की जुस्तजू । जो नज़र से दिल को संवार दे, मुझे उस गिदा की तलाश है ।'

'दावत' के संपादक जनाब मुहम्मद मुस्लिम साहब की महानता के बारे में मैंने बहुत-कुछ सुन रखा था, अत: जामा मस्जिद, लालक़िला, क़ुतुबमिनार को देखने से पहले मौलाना मुहम्मद मुस्लिम साहब से मुलाक़ात करने की इच्छा प्रबल हुई । सूईवालान, गली कूताना न०, 1525 में एक हवेलीनुमा इमारत की सीढ़ियों पर खड़ा मैं सोच ही रहा था कि अन्दर जाने के शिष्टाचार क्या होंगे ? यही सोच ही रहा था कि एक सीधे-साधे बुज़ुर्ग बाहर निकल रहे थे ।

मैंने उनसे कहा कि मैं मद्रास से आ रहा हूं और मौलाना मुस्लिम साहब से मिलना है । उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और कमरे में पड़ी हुई एक कुर्सी पर बैठा दिया । क़रीब दस मिनट के बाद मेरी कुर्सी के बग़ल वाली कुर्सी पर वही साहब बैठ गये और मुझ से कहा कि फ़रमाइए । मैंने बताया कि मैं मौलाना मुस्लिम साहब से मुलाक़ात करना चाहता हूं ।

उन्होंने कहा कि निस्संकोच बात कीजिए, मैं ही मुस्लिम हूं । उनके आभायुक्त चेहरे को देखकर मुझे लगा कि मेरे साथ मज़ाक़ हो रहा है । मैंने अपने आस-पास बैठे हुए लोगों की तरफ़ देखा, तो उन्होंने विश्वास दिलाया कि आप से वार्तालाप मौलाना साहब ही कर रहे हैं ।

मैं काम की तलाश में दिल्ली आया था । मेरे एक प्रिय मित्र नूरुलहसन आज़मी ने बताया था कि दिल्ली में काम की कमी नहीं है काम करने वालों की कमी है । मौलाना मुस्लिम साहब से बात करने के बाद मैंने फ़ैसला किया कि मैं उनकी सरपरस्ती में काम करूंगा । मैंने काम करने की इच्छा प्रकट की और मौलाना साहब ने फ़ौरन हां कर दी । मुझे ऊपरी मंज़िल में ले गये और नियुक्ति की कार्यवाही की ।

दूसरे दिन से मैंने मौलाना के संरक्षण में अपनी सारी अनुभवहीनता के बावजूद हिम्मत के साथ काम करना शुरू किया । जब तक मैं वहां काम करता रहा मेरे ख़्वाबो-ख़याल के यक़ीन में वृद्धि होती रही । सहानुभूति, हमदर्दी कोई एक हो तो मैं गिनाऊं । फिर मौलाना की सहानुभूति केवल मुझ तक ही न थी बल्कि उनकी सहानुभूति का दायरा अपने जान-पहचान अपने-बेगाने, नये-पुराने, दूर-नज़दीक सबके साथ एक समान था ।

अगले दिन काम पर मैं गया तो सबसे पहले मेरा परिचय कराया गया । 'दावत' अख़बार के कार्यालय में काम करने वाले लोगों की संख्या लगभग पचीस थी । स्टाफ़ के सारे लोग एक-दूसरे से बहुत मुहब्बत करते थे । चाय, पानी, काफ़ी और साफ़-सफ़ाई के कामों के लिए नियुक्त युवक तहसीन बहुत ही फुर्तीला व मिलनसार थे । चार उपसंपादक थे । वे केवल सुर्ख़ियां लिखने का काम करते थे और क़ातिब लेख का नक़ल करते थे । चूंकि मैं प्रूफ़रीडर था, इसलिए मेरा सीधा सम्पर्क क़ातिबों से ही था । अब केवल एक क़ातिब अब्दुर्रज़्ज़ाक का नाम याद रह गया है, वह भी इसलिए कि वे ग़लतियां बहुत करते थे और उनके दिलचस्प लतीफ़ों से बड़ा आनन्द आता था ।

आधी सदी से कुछ अधिक ही समय बीत चुका, मगर कुछ यादें ऐसी ताज़ा हैं कि जैसे वह कल-परसों की ही बातें हों । उसी दौर में मई या जून 1961 ई० में मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान शिवहारवी (रह०) की तहरीक और रात-दिन के अनथक प्रयासों से 'मुस्लिम कन्वेंशन' का एक ऐतिहासिक इजलास बड़े पैमाने पर आयोजित हुआ । दैनिक 'अल-जमीअत' ने उसकी सफलता की प्रशंसा की, तो दैनिक

'नयी दुनिया' ने असफलता के लेख लिखे । इन दोनों के बीच दैनिक न्यूज़ पेपर 'दावत' ने न्याय के साथ इजलास की सच्ची घटनाओं को पेश किया, जिसकी प्रशंसा हर संगठन के लोगों ने की ।

मौलाना मुस्लिम साहब को मैंने बहुत क़रीब से और बहुत ग़ौर से देखा । आपने मेरी भाषाशैली का सुधार भी किया । मौलाना मुस्लिम साहब को जानने वाले तो बहुत होंगे, लेकिन पहचानने वाले शायद उंगलियों पर गिने जा सकते हैं । आज की भौतिकवादी दुनिया ने इन्सान के व्यक्तित्व की क़द्रों की क़ीमत जांचने के बड़े सतही मानदंड बना रखे हैं और उन्हीं आधारों पर छोटे-बड़ों का निर्धारण हुआ करता है ।

उदाहरण के रूप में एक अख़बार और पत्रिका के संपादक के मानदंड के लिए अख़बार की कुल प्रकाशित संख्या या संपादक के वेतन का मानदंड निर्धारित है । संपादक का वेतन कितना है या अख़बार जितनी संख्या में प्रकाशित होगा, उसके संपादक के व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जाएगा । मौलाना मुस्लिम साहब उर्दू अख़बार के संपादक थे और अख़बार भी ऐसा कि विशिष्ट उद्देश्य उसके सामने था । अत: विरोधी बहुत थे ।

मुस्लिम साहब के वेतन के बारे में न पूछिए मगर यह अवश्य स्वीकार कीजिए कि वे बड़े आदमी थे । न केवल बड़े बल्कि बहुत बड़े आदमी थे, क्योंकि बुद्धिमानों के निकट आदमी का बड़प्पन उसके नैतिक चरित्र, उसके सेवाभाव, विचार व कार्यशैली तथा सत्यनिष्ठा से है और ये सारे गुण मौलाना मुस्लिम साहब में कूट-कूटकर भरे हुए थे । मुस्लिम साहब ने बड़े खुले दिल के साथ मुझ बेनामोनिशान को अपने साथ रख लिया और छोटे-मोटे बहुत से काम मेरे सुपुर्द कर दिये । मेरा ख़याल है कि मेरी तनख़्वाह भी उनकी ख़ाली जेबों से ही दी गयी होगी । मौलाना के सीमित वेतन के भागीदारों की सूची का अनुमान किसी को नहीं था । मुस्लिम साहब की कहानियां व क़िस्से हातिमताई की तरह मर्कज़ के हर व्यक्ति की जुबान पर हुआ करती थी ।

अल्पसंख्यकों के सबसे बड़े अख़बार 'दावत' के प्रधान संपादक के शरीर पर ऊपर से नीचे तक दो वस्त्र हुआ करते थे । लोग उस वक़्त उसका मूल्य दो या तीन रुपये बताया करते थे । वे वस्त्र नये नहीं होते थे, बल्कि दिल्ली के कुतुब रोड के कबाड़ी की दुकान से ख़रीदे हुए पुराने कपड़े होते थे । आपके सहायक और अधीनस्थ कर्मचारी आपकी इस सादगी और विनम्रता पर पश्चाताप व शर्म का इज़हार भी कर लेते थे ।

वे अपने मिशन के लिए हर समय तत्पर रहते थे । विचार और जीवन-उद्देश्य के मानदंडों पर वे लोगों को जांचते-परखते थे । तंगदिल इन्सान जिस शान का लिबास पहन ले या ऊंची से ऊंची कुर्सी पर विराजमान हो जाए, मुस्लिम साहब के नज़दीक वह 'कंगाल' ही हुआ करता था ।

मैंने मुस्लिम साहब जैसा आत्मविश्वासी बहुत कम लोगों को देखा है । बड़े से बड़े आदमी का स्वागत आप समान रूप से किया करते थे । आपसे मुलाक़ात के लिए आने वालों में बड़े-बड़े रईस, पदाधिकारी, बुद्धिजीवी, एम०पी०, वाइस चांसलर और कभी-कभी मंत्री भी होते थे । आप उन लोगों से इस तरह मिलते जिस तरह आप अपने जैसे कार्य करने वाले लोगों से मिला करते थे । आपके मुलाक़ातियों में बहुत बड़े लोग भी होते थे और बहुत छोटे भी, लेकिन आप से मिलने के बाद जहां छोटा आदमी यह समझता कि उसका आदर-सत्कार हुआ, वहीं बड़ा आदमी यह समझता कि मुस्लिम साहब का व्यक्तित्व कम रुत्बे का नहीं है ।

मुस्लिम साहब का व्यक्तित्व निश्छलता व सहानुभूति की बदौलत सारे वर्गों में लोकप्रिय रहा । बड़े-बड़े घरानों के झगड़े आपने इस तरह निपटाये कि किसी को कानों कान ख़बर तक न हुई । दूसरी तरफ़ आपने निम्न वर्ग व दलित वर्ग के लोगों के हौसलों को भी बढ़ाया । आपने अपने लेखों के माध्यम से बुद्धिजीवी वर्ग के दिलों पर शासन किया, तो सेवाभाव के द्वारा दलितों व सफ़ाई कर्मियों को भी अपना मुरीद बना लिया । उनकी लावारिस अर्थियों को आपने कंधा देकर उनके गंतव्य स्थान तक पहुंचाया ।

मैं मुस्लिम साहब की निगरानी में दैनिक 'दावत' से संबद्ध था । प्रूफ़ रीडिंग किया करता था । एक दिन मैं कुर्सी पर बैठा प्रूफ़ पढ़ रहा था कि पीछे से मुस्लिम साहब मेरे कंधों पर अपने हाथ रखकर इस तरह खड़े हो गये कि मैं उनके सम्मान में खड़ा न हो जाऊं पूछने लगे कि सब ख़ैरियत है । घर से ख़त आया, सब लोग अच्छे हैं, ख़र्च के लिए पैसे हैं, इत्यादि । इस तरह वे अपने अधीन काम करने

वालों का बराबर ध्यान रखते थे ।

दिल्ली में मेरा खाना-पीना होटल से होता था । ईदुल अज़हा के अवसर पर जामा मस्जिद के इलाक़े के सारे होटल बन्द थे । खुले भी होते तो अकेले खाना, खाना मेरे लिए कठिन था । घर से दूर होने का पहली बार मुझे दुख हो रहा था । बीस वर्ष बाद ऐसी ईद आयी थी । घर वालों और दोस्तों से दूर कि याद आते-आते थक जाती थी । लगता था कि दूसरे दिन का सूरज बड़ी देर से निकला ।

कार्यालय पहुंचा तो मेरे मेहरबान मुस्लिम साहब मेरा चेहरा देखते ही क्षमा-याचना के रूप में कहने लगे कि कल मैं आप से खाने के लिए कहना भूल गया था । सचमुच मुझ से बड़ी भूल हुई, जिससे आपको काफ़ी दुख पहुंचा होगा । कम से कम आज हमारे साथ खाना ज़रूर खाइए । ईदुल अज़हा का दिन था, इसलिए आपके दस्तरख़्वान पर गोश्त नज़र आ गया, वरना सुनते थे कि सूखी रोटी के साथ कभी दाल, कभी चटनी, तो कभी केवल प्याज़ से ही दस्तरख़्वान को सजाना पड़ता था ।

मौलाना मुस्लिम साहब ने मुझे समीक्षा के लिए तीन किताबें दीं, जिनमें हाफ़िज़ फ़ारूक़ी बांसपुरी का एक दीवान भी था । बदनाम सफ़ीक़ के एक उपन्यास 'होती है सहर पैदा' पर मेरी समीक्षा को आपने पसन्द किया । एक अंग्रेज़ी लेख What we miss Judge Hitlar को अनुवाद के लिए दिया । मैंने अपने ज्ञान के हिसाब से अनुवाद तो किया, मगर वह अच्छा अनुवाद न हो सका । लेकिन मौलाना मुस्लिम साहब ने उस अनुवाद को एडिट और संशोधन करके प्रकाशित किया । मौलाना मुस्लिम साहब के सुपुत्र मुहम्मद असलम उस समय 8 या 10 वर्ष के रहे होंगे । दोपहर का खाना आपके लिए वही लाते ।

जब तक आप खाने से फ़ारिग़ होते आपकी कुर्सी पर बैठकर कुछ लिखना शुरू कर देते । एक बार मैंने पूछा कि क्या लिखते हो ? कहने लगे, लीडिंग आर्टिकल अर्थात संपादकीय । होनहार बच्चे के चेहरे से प्रतिभा चमक रही थी । सन 1965 ई० में मुस्लिम साहब हज से वापस हो रहे थे तो मैंने एक पारकर क़लम मुहम्मद असलम साहब के लिए दिया, तो आप लेने के लिए तैयार न थे । मैंने कहा कि मैं आपको कहां दे रहा हूं, अगर बच्चा इन्कार कर दे, तो आप शौक़ से वापस कर दें ।

मदीना मुनव्वरा के चार वर्षीय जीवन में मैंने विभिन्न शीर्षकों पर लेख भेजे । लगता था प्रकाशन से पहले आप उन्हें बड़े ग़ौर से पढ़ते थे और उन लेखों को संशोधित करके उनमें जान डाल देते थे । मदीना मुनव्वरा के 'क़ब्रिस्तान बक़ीअ' पर मेरा एक लेख था । 17, हज़ार सहाबा और अहले बैअत की एक बड़ी संख्या यहां दफ़न है, लिखकर मैंने ग़ालिब के एक शेर के साथ–

'मक़्दूर हो तो ख़ाक से पूछूं कि ऐ लईम'

लिखकर भेज दिया, तो शेर में 'लईम' की जगह ख़ाली छोड़ दी कि मदीना की बाबरकत ज़मीन को लईम कहने का साहस मुझ में न हो सकता था । लेख प्रकाशित होकर आया तो देखा कि शेर इस तरह लिखा था, 'मक़्दूर हो तो ख़ाके मदीना से पूछ लो ।'

सैयद क़ुतुब (रह०) की शहादत पर मैंने एक लेख दारुस्सलाम उमराबाद से भेजा । क़ाफ़ी प्रतीक्षा के बाद भी प्रकाशित न हुआ, तो मैंने ज़रा सख़्त लहज़े में ख़त लिख दिया, तो फ़ौरन जवाब मिला, जो इस तरह है–

बिस्मिल्लाह-23 सितम्बर 1967 ई० बिरादर अज़ीज़, अस्सलामु अलैकुम

सैयद क़ुतुब पर आपका लेख यहां नहीं पहुंचा, आपके ख़त में खिन्नता व उदासीनता झलक रही है, जिसका प्रभाव मुझ पर भी पड़ा और मेरे सामने आपका बुझा और मुरझाया हुआ चेहरा आ गया, जो आपके अस्ल चेहरे से बिल्कुल अलग था । इसका कुछ न कुछ सबब मैं भी हुआ हूं, जिसके लिए माफ़ी का इच्छुक हूं । बेहतर होगा कि आप उसकी नक़ल भेज दें, उम्मीद है कि आप अच्छी तरह होंगे । वस्सलाम

मुख़लिस, मुहम्मद मुस्लिम

मुझे पत्रकारिता के क्षेत्र में काम करने का शौक़ जुनून की हद तक था । मैंने कुछ ही महीने मुहम्मद मुस्लिम साहब के साथ गुज़ारे थे कि मदीना मुनव्वरा में इस्लामिया यूनीवर्सिटी' का शुभारंभ हुआ । दुनिया के हर देश से छात्र दाख़िले के लिए जा रहे थे । खुद मौलाना मुहम्मद मुस्लिम साहब की इच्छा थी कि मैं जामिया इस्लामिया में दाख़िला ले लूं । हरमैन शरीफ़ैन में इबादत का अवसर मिलेगा । बुद्धिमानों और ज्ञानियों से मुलाक़ातें होंगी और उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलेगा । इन सबके बावजूद मैं पत्रकारिता छोड़ने को तैयार न था । मौलाना मुस्लिम साहब ने मुझे घंटों समझाया कि पत्रकारिता का ख़याल मैं दिल से

निकाल दूं । अरब साम्राज्य में रहकर अच्छी किताबों का अनुवाद शुरू कर दूं, तो इससे मुझे संतोष भी मिलेगा और दुनिया उर्दू के बारे में भली-भांति परिचित भी हो जाएगी ।

अंतत: मुझे मौलाना मुहम्मद मुस्लिम साहब की बात माननी पड़ी । एक छोटी-सी अवधि में मेरा अधिकतर समय मुस्लिम साहब के साथ ही व्यतीत हुआ । कार्यालय में तो साथ रहता ही था, लेकिन जब शाम के समय आप छोटे-बड़ों से मुलाक़ात के लिए बाहर निकलते, तो मैं आपके साथ होता । उन मुलाक़ातों की एक-एक बात मेरे मन-मस्तिष्क में एक अविस्मरणीय घटना की तरह सुरक्षित है । मेरी हैसियत एक ख़ामोश तमाशाई की थी ।

उनका अख़्लाक़, चरित्र, शिष्टाचार, सादगी, नम्रता-विनम्रता, वाकपटुता और सत्यनिष्ठा से प्रभावित तो बहुत हुआ, मगर दुख इस बात का है कि मेरा मिज़ाज ही कुछ ऐसा बंजर था कि मैं आपके किसी गुण को अपना न सका, क्योंकि उसको अपनाने के लिए जिस त्याग और बेनफ़्सी की ज़रूरत थी मैं उससे वंचित था ।

सन 1965 ई॰ में शाह फ़ैसल ने भारत के छह पत्रकारों को अरब आने का निमंत्रण भेजा था । चार लोग तो अंग्रेज़ी समाचार पत्र के संपादक थे । पांचवें साहब एक अंग्रेज़ी पत्रिका 'सिरात' के संपादक ग़ालिब फ़िदाई थे । छठे हमारे मौलाना मुहम्मद मुस्लिम साहब थे । यह प्रतिनिधिमंडल दस दिन शाही मेहमान रहा ।

ग्यारहवें दिन प्रतिनिधिमंडल के पांच सदस्य वापस भारत आ गये और मुस्लिम साहब हज की नीयत से वहीं रुक गये । वे शाबान के आख़िरी दिन थे या रमज़ान शुरू हो चुका था । दस दिन जिस दुनिया में आप गुज़ार कर आये थे, वह सपनों की दुनिया थी । दस दिनों की शाही मेहमानी में नक़द रक़म भी इतनी मिली थी कि मुस्लिम साहब हज तक के चार महीने निश्चिंतता के साथ गुज़ार सकते थे, मगर आदत से मजबूर थे, पैसों से आप दोस्ती कर ही नहीं सकते थे, पैसा आपके हाथों में कांटा बनकर चुभता रहता था ।

मैं चार वर्ष मदीना मुनव्वरा में गुज़ार चुका था । वहां के लोगों को अमीरतरीन समझते थे, मगर मुस्लिम साहब ने दो ही दिनों में निर्धनों व मुहताजों का न केवल पता लगा लिया, बल्कि शाही उपहारों का एक बड़ा भाग उन निर्धनों को दे दिया । मुसाफ़िर हैं चार महीने अजनबी देश में गुज़ारने हैं, सफ़र की अवस्था में पग-पग पर कुछ न कुछ ख़र्च हो ही जाता है ।

आपका हाथ दूसरों की सहायता करने के लिए जिस तरह खुला रहता था, बिल्कुल उसी तरह आपका दिल-दिमाग़ भी सत्य को सुनने और उसे स्वीकार करने के लिए खुला रहता था । हज के दौरान मस्जिदे नबवी में चालीस नमाज़ों का एहतिमाम आप किये हुए थे । पांचवें या छठे दिन मैंने कहा कि हमारे हदीस के शिक्षक शेख़ नासिरुद्दीन अलबानी (रह॰) फ़रमाते हैं कि चालीस नमाज़ों की हदीस सही नहीं है । बात ज़ुबान से निकली और मुस्लिम साहब ने यह एहतिमाम छोड़ दिया । अब आपकी नमाज़ें विभिन्न मस्जिदों, मस्जिदे कुबा, मस्जिदुलफ़तह, मस्जिद क़िब्लतैन और मस्जिदे सबा में होने लगीं ।

इसी अवधि में आभायुक्त चेहरे वाले एक बुज़ुर्ग को देखकर उनके संबंध में आपने मुझ से पूछा, तो मैंने बताया कि यह मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद गोंदलवी हैं, आजकल हदीस हमें यही पढ़ाते हैं । मुस्लिम साहब ने पूछा कि यह वही तो नहीं, जिन्होंने जमाअत इस्लामी हिन्द के विरुद्ध एक किताब लिखी थी ? अगर वही हैं तो उनसे ज़रूर मिलना चाहिए, क्योंकि जमाअत के विरुद्ध आज तक जिसने लिखा, उसमें यही एक जानदार पत्रिका मैंने देखी । यह बातचीत हमारे मध्य हो ही रही थी कि हाफ़िज़ साहब हमारे क़रीब पहुंच आये ।

मैंने आगे बढ़कर एक-दूसरे का परिचय कराया । मुस्लिम साहब ने उस पुस्तिका के बारे में सवाल किया और हाफ़िज़ साहब ने प्रमाण के साथ जवाब दिया । फिर दोनों विभिन्न विषयों पर सड़क के किनारे बातें करते रहे । बातचीत के दौरान मुहम्मद मुस्लिम साहब ने मस्जिदे नबवी में चालीस नमाज़ों वाली बात मालूम की । हाफ़िज़ साहब ने चार-छह उदाहरणों के द्वारा उस हदीस को सही बताया । मुस्लिम साहब ने दूसरे दिन फ़ज्र से चालीस नमाज़ों को पूरा करने की नीयत तोड़ दी ।

हज के दिनों में मिना की मस्जिद 'अलख़ैफ़' जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने के लिए जा रहे थे कि रास्ते में एक हिन्दुस्तानी मौलवी ने फ़रमाया कि मस्जिद में न जाएं वहां ज़ुहर व अस्र 'जमा' और क़स्र के साथ पढ़ी जाती है । मुस्लिम साहब ने कहने वाले को देखा और फिर मस्जिद में दाख़िल होने वाली भीड़ को देखा और फिर उस बुज़ुर्ग से

फ़रमाया कि ऐसी बाबरकत वाली मस्जिद में लाखों नमाज़ियों की नमाज़ अल्लाह तआला रद्द नहीं कर सकता । फिर मेरा हाथ पकड़े हुए मस्जिद के अन्दर चले गये ।

मुस्लिम साहब कई बार हमारे छात्रावास में आये और हमारे ठाट-बाट को देखा, तो उन्हें बड़ी निराशा हुई । हम समझ रहे थे कि हमारा भला चाहने वाले हमारी शानदार आरामगाह से प्रसन्न होंगे, लेकिन उनकी प्रतिक्रिया जानना चाहा तो बड़ी उदासीनता के साथ कहा कि मुझे डर है कि आप लोग वापस होकर वह काम न कर सकेंगे, जो काम यहां आने से पहले किया करते थे ।

मौलाना मुहम्मद मुस्लिम साहब एक स्पष्टवादी और अनुभवी पत्रकार थे । हमारे रहन-सहन को देखकर आपने जो आलोचना की वह निस्सन्देह 99 प्रतिशत सच साबित हुई । क्योंकि हम भारतीयों में अधिकतर छात्र परिश्रम करके जीवन गुज़ारने वाले थे, मगर शिक्षा पूर्ण करने तक हमारे सोच-विचार और जीवन में बहुत कुछ परिवर्तन आ चुका था ।

सन 1973 ई० में मुस्लिम साहब ने मजलिसे मुशावरत के पदाधिकारियों के साथ सारे देश का दौरा किया । उमराबाद भी आपका आगमन हुआ । प्रतिनिधिमंडल के लिए भोजन का आयोजन किया गया, मगर मौलाना मुस्लिम साहब मेरे घर पर ही मेरे साथ खाना खाये । मेरे बच्चों से बातचीत की और उन्हें कुछ रुपये देकर विवशता प्रकट करने लगे कि आप लोगों के लिए मैं अपने साथ कुछ न ला सका । यही मौलाना मुस्लिम साहब से मेरी आख़िरी मुलाक़ात थी । उसके बाद मेरी आंखों ने आपको नहीं देखा ।

लेखकों एवं रचनाकारों से

''कान्ति'' में प्रकाशनार्थ जो रचनाएं हमें मिलती हैं, उनकी स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना अथवा रचनाओं की वापसी के लिए अपना पता लिखा लिफ़ाफ़ा डाक टिकट सहित अवश्य भेजें । इसके अभाव में रचनाओं के विषय में हम आपको जानकारी देने में असमर्थ हैं । ध्यान रहे कि पर्याप्त डाक टिकट लगाकर प्रकाशनार्थ सामग्री भेजें, ताकि डाक, बैरंग न हो । आशा है, आपका सहयोग मिलता रहेगा । **-संपादक**

कविता

वह बोता है आज भी ज़मीन में अठन्नी...

स्टील के गुलाब
सीमेंट की बेलें
और प्लास्टिक की कोंपलों से
डीज़ल और पेट्रोल की गंधाती सुगंध
कभी महसूस की है आपने ?
अब आम की बौर पर
कोयल नहीं कूकती
बाघ ही नहीं/मर गये हैं गिद्ध भी...
पेस्टी साइड्स युक्त चारा खाकर
इंजेक्शनों के ज़रिए
अपनी मज्जा तक से दूध निचुड़वा कर
मर चुकी भैंसों का दूषित गोश्त खाकर...
धूल धूसरित वह बच्चा
अब भी कूड़े के ढेर पर बीनता है कबाड़
कीलें, प्लास्टिक की बोतलें/और
प्रगति की रांह पर तीव्रता से बढ़ते देश के...
सरकारी विज्ञापन छपे/रद्दी अख़बारों के पन्ने...
वह आज भी
मेरे बचपन की तरह
बोता है
ज़मीन में अठन्नी
ताकि उसके सपने में
अठन्नियों का एक बड़ा-सा/पेड़ उग सके
क्या करे वह ?
उसके
और उसके दोस्तों की मांए
नरेगा के राजकाज के लिए
मज़दूरी पर गयी हैं
शायद
पिता भी ।

ब्रज गोपाल राय 'चंचल'
राम नगर-कोसीकलां
ज़िला-मथुरा-281403 (उ०प्र०)

हज़रत मुहम्मद(सल्ल०) की जीवनी

हज़रत मुहम्मद(स०) जीवन और संदेश	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	12.00
प्यारे नबी कैसे थे?	इरफ़ान ख़लीली	20.00
प्यारे नबी ऐसे थे !	माइल ख़ैराबादी	10.00
जगत-गुरु	अबू ख़ालिद	40.00
जीवनी हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	मु० इनायतुल्लाह सुब्हानी	115.00
बड़ों की माँए	माइल ख़ैराबादी	12.00
रह्मतुल-लिल-आलमीन	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
विश्व-नायक	डॉ० कौसर यज़दानी नदवी	36.00
विश्व-नेता हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
हज़रत मुहम्मद : एक संक्षिप्त परिचय	डॉ० मुहम्मद अहमद	06.00
हज़रत मुहम्मद एक महान समाज सुधारक	प्रो० मिर्ज़ा रफ़ीउद्दीन अहमद	10.00
हज़रत मुहम्मद का आदर्श	श्री नाथूराम	16.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल० का संदेश	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
हज़रत मुहम्मद सल्ल०के संदेशों के मूल तत्त्व	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	04.00
आख़िरी नबी (सल्ल०)	हमूदा अब्दुल आती	06.00
अल्लाह के रसूल का व्यावहार अपने शत्रुओं के साथ	मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	10.00
क्रान्ति-दूत हज़रत मुहम्मद सल्ल०	नईम सिद्दीक़ी	70.00

परिवार इस्लाम की नज़र में

औरत और इस्लाम	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	24.00
औरत और प्राकृतिक नियम	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
इस्लाम और बर्थ कंट्रोल	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	60.00
नारी और इस्लाम	मक़बूल अहमद फ़लाही	06.00
परदा	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	100.00
परिवार इस्लाम की नज़र में	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	10.00
बहुविवाह	मौलाना सय्यद हामिद अली	50.00
माँ-बाप के अधिकार	मौलाना सय्यद लुत्फ़ुल्लाह क़ादरी	28.00
मुस्लिम पर्सनल ला और समान सिविल कोड	शम्स पीरज़ादा	12.00
मुस्लिम पर्सनल ला धार्मिक व सामुदायिक...	मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही	10.00
मुस्लिम लड़कियों की शिक्षा समस्या...	उमर अफ़ज़ल	40.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) Fax: 26947858
E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

भारत में चुनाव की समस्याएं

■ मुहम्मद निज़ामुद्दीन
(गोपालगंज, बिहार)

भारत में चुनाव को लोकतंत्र का महापर्व कहा गया है किन्तु इस देश में चुनाव संबंधी अनेक समस्याएं खड़ी हुई हैं। उन समस्याओं का निवारण 16वीं लोकसभा चुनाव को देखते हुए कुछ लिखने का मन कर रहा है जो सचमुच में सही एवं आंखों देखा दृश्य है जिस तरह से ईद, बक़रीद, होली, दीवाली का त्योहार भारतवासी के लिए महत्त्वपूर्ण त्योहार हैं। उसी तरह चुनाव भी पर्वों में एक महत्त्वपूर्ण पर्व के रूप में अमीर, ग़रीब, शिक्षित-अशिक्षित सभी समुदाय के लोग इसमें भाग लेते हैं। इसकी महत्त्वपूर्ण समस्याएं निम्न हैं–

(1) बूथ क़ब्ज़ा : देश में चुनाव संबंधी एक भयंकर समस्या है। चुनाव के समय बुथ छापामारी वह दांव है जिसे कोई उम्मीदवार दूसरे उम्मीदवार को हराने के लिए लगाता है। जिस उम्मीदवार के पास बल है, बोलवाला है, उसके लोग मतदान केन्द्रों पर छापेमारी कर सारे मत अपने पक्ष में डलवाने में समर्थ हो जाते हैं। बुथ पर मारपीट और संघर्ष की घटना तो आम बात है, कभी-कभी ख़ून-ख़राबा और गोली कांड जैसी घटनाएं भी हो जाती हैं। कई बार चुनाव कराने वाले पदाधिकारियों को भी अपनी जान गंवानी पड़ती है।

चुनाव आयोग ने इस दिशा में अहम पहल किया है ताकि बुथ छापामारी की समस्या समाप्त हो जाए (1) कई चरणों में चुनाव कराना तथा अर्द्धसैनिक बलों की तैनाती, पेट्रोलिंग मजिस्ट्रेट द्वारा मतदान केन्द्रों का निरीक्षण माइक्रो ऑबजारबर की बहाली चुनाव आयोग के द्वारा चुनाव स्वच्छता का प्रतीक है।

(2) मताधिकार का दुरुपयोग : भारत में अनेक मतदाता मताधिकार का दुरुपयोग करते पाये जाते हैं। ठीक ही कहा जाता है कि भूखे आदमियों के लिए मतदान का कोई महत्व नहीं है। देश भर में भूखमरी की समस्या इतने बड़े पैमाने पर व्याप्त है कि पैसे ख़र्च करके ऐसे मतदाताओं का मत भी आसानी से ख़रीद लिया जाता है। जाति, वर्ग, सम्प्रदाय जैसी संकीर्ण भावनाओं को उभारकर भी मत प्राप्त कर लिए जाते हैं। चुनाव क़ानून की पूर्णत: उपेक्षा की जाती है। देश में चुनाव आचार-संहिता का भी सही ढंग से पालन नहीं किया जाता। जबकि चुनाव आयोग के द्वारा लोकसभा सदस्य के लिए 25 लाख एवं विधानसभा सदस्य के लिए 10 लाख राशि ख़र्च करने का नियम है। किन्तु सर्वेक्षण किया जाए तो एक निर्वाचन क्षेत्र से एक उम्मीदवार इस सीमित ख़र्च से अधिक ख़र्च करते हैं।

(3) दल-बदल : देश के सामने चुनाव संबंधी सबसे बड़ी समस्या तो दल-बदल की है। विभिन्न नेता अपना दल बदलते रहते हैं, जिससे राजनीतिक अस्थिरता क़ायम रहती है। दल-बदल विरोधी सं॰ संशोधन अधिनियम, 1985 के बन जाने से बहुत हद तक समस्या सुलझने की आशा है। फिर भी देश में यह समस्या अभी बनी हुई है। जनता दल का कई बार विभाजन इस समस्या का स्पष्ट प्रमाण है।

(4) ख़र्चीला चुनाव : आधुनिक युग में चुनाव ख़र्चीला हो गया है। उम्मीदवार अपनी जीत के लिए पानी की तरह पैसा बहाता है। अत: ग़रीब, परंतु योग्य व्यक्ति चुनाव में ख़ड़ा होने की हिम्मत नहीं कर पाता। यूं तो चुनाव में किसी एक उम्मीदवार द्वारा ख़र्च करने की सीमा भी बांध दी गयी है, परन्तु उसका पालन होता ही कहां है ? स्वाभाविक है कि चुनाव लड़ना कोई आसान काम नहीं रह गया हैं।

(5) अनुशासन का अभाव : राजनीतिक दलों के लोगों में अनुशासन की कमी भी एक भयंकर समस्या बन गयी है। पार्टी के निर्णय की अवहेलना उसके सदस्यों द्वारा ही किया जाना एक आम बात हो गयी है। सबसे दुर्भाग्य की बात तो यह है कि कभी-कभी दल के सदस्य अपने दल के उम्मीदवार के विरुद्ध भी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रचार कार्य करते पाये जाते हैं।

(6) राजनीतिक दलों की भरमार : निर्वाचन संबंधी सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि देश में राजनीतिक दलों

की भरमार हो गयी है । यह बात सही है कि राष्ट्रीय स्तर के राजनीतिक दलों का गठन हो चुका है । स्वाभाविक है कि देश के मतदाता किसे सही समझे और किसे ग़लत, यह निर्णय नहीं कर पाते । यह सर्वविदित है कि देश में राजनीतिक दलों की बहुलता अनेक राजनीतिक समस्याएं उत्पन्न करती हैं । इससे देश की जनता का राजनीतिक विचार परिपक्व नहीं हो पाता है ।

(7) राजनीतिक दल ठोस सिद्धांतों पर आधृत नहीं : भारत में अधिकांश राजनीतिक दलों का गठन ठोस सिद्धांतों पर नहीं हुआ है । अनेक दल संकीर्ण सिद्धान्तों पर आधारित हैं और सामप्रदायिकता को प्रोत्साहित करते हैं । प्रत्येक दल में नारेबाज़ी की संख्या बढ़ती जा रही हैं, जिससे जनता गुमराह हो जाती है और सही समय पर सही निर्णय नहीं ले पाती ।

(8) अन्य समस्याएं : निर्वाचन संबंधी अन्य कमज़ोरियों की गणना भी निर्वाचन संबंधी समस्याओं के अंतर्गत ही की जा सकती है । ऐसी कमज़ोरियां निम्नलिखित हैं :

(i) निर्वाचन में बेहिसाब ख़र्च एवं भ्रष्टाचार ।

(ii) केन्द्र और राज्य के मंत्रियों द्वारा सरकारी कार्य के नाम पर चुनावी दौरे तथा सरकारी पद एवं सरकारी तंत्रों का दुरुपयोग ।

(iii) चुनाव की भनक मिलते ही सत्तारूढ़ दल द्वारा मनमाने ढंग से वैसे सरकारी अधिकारियों का स्थानांतरण जिनके सहयोग से सत्तारूढ़ दल अधिक स्थानों पर विजय प्राप्त करने की आशा रखता है ।

(iv) मतदाता सूची बनाते समय भी भ्रष्ट उद्देश्य से सही मतदाताओं का नाम छोड़कर फ़र्ज़ी मतदाताओं के नाम मतदाता सूची में जोड़ दिये जाते हैं ।

(v) मतदाता याचिका अधिनियम भी दोषपूर्ण है जिससे यह पता लगाना कठिन हो जाता है कि भ्रष्ट तरीक़े अपनाने के लिए किस व्यक्ति को दोषी ठहराया जाए ।

(vi) भारत में वैसे दलों और समूहों पर प्रतिबंध लगाने के भी स्पष्ट नियम नहीं है जो चुनाव के नाम पर साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता तथा जातीयता जैसी संकीर्ण भावनाओं को उभारकर देश की एकता और अखंडता पर कुठाराघात करते हैं ।

(vii) चुनाव की राजनीति में कुख्यात अपराधियों और समाजविरोधी तत्वों को विभिन्न राजनीतिक नेताओं तथा उम्मीदवारों द्वारा बढ़ावा चुनाव संबंधी गंभीर समस्या उत्पन्न करती हैं ।

(viii) निर्दलीय उम्मीदवारों की अधिकता भी चुनाव संबंधी एक प्रमुख समस्या हैं ।

(ix) कमज़ोर वर्ग (ख़ासकर अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों) को मतदान करने से वंचित करने का प्रयास भी चुनाव संबंधी ही एक समस्या है ।

अत: अंत में निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि उपरोक्त लिखित समस्याओं को दूर कर चुनाव को निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण वातावरण में इसे संपन्न करायी जा सकती हैं ।

अपने घर को
इस्लाम के प्रकाश से रोशन कीजिए
स्वयं पढ़िए, अपने प्रियजनों, संबंधियों
और अन्य लोगों को भी पढ़ाइए

कान्ति
स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 250/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

दावत साप्ताहिक दावत
www.dawatonline.com
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 600/-
आजीवन : Rs. 10,000/-

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति
www.kanti.in
सहयोग राशि वार्षिक : Rs. 220/-
आजीवन : Rs. 5,000/-

सहयोग राशि वार्षिक स्वदेश में : Rs. 220/- विदेशों में 30 अमेरिकी डॉलर आजीवन : Rs. 5,000/-
ज़िन्दगी-ए-नव
ماہنامہ زندگی نو
www.zindgienau.com

मांगे जाने पर नमूने की प्रति निशुल्क भेजी जाएगी।

MANAGER, DAWAT TRUST,
D-314, DAWAT NAGAR, ABUL FAZL ENCLAVE,
JAMIA NAGAR, NEW DELHI-110025,
TEL.: Dawat: 09818799113, Kanti: 09818799223,
E-mail: dawattrust@yahoo.co.in

बदलाव

■ श्रुति शर्मा

ड्राइंग रूम से बड़ी ज़ोर के हंसी-ठहाकों की आवाज़ें आ रही थीं। थोड़ी देर में राज तेज़ क़दमों से कमरे से बाहर आया और सीधा रसोई में चला गया...वहां अपनी बेटी को देख थोड़ा पीछे ही रुक गया। फिर कुछ सोचकर बोला, ''बेटा, तुम्हारी मां कहां है ? जाओ उसे कहो की कुछ पकौड़े और तल दे, वर्मा अंकल (राज के बॉस) आये हैं।''

बेटी ने अपने दोनों हाथ कमर पर रखे और पलट कर देखा, ''पापा कोई नयी बात नहीं, आप रोज़ ही किसी न किसी को साथ ले आते हो'', बेटी ने अपनी एक भौं उठा कर उत्तर दिया।

अच्छा दादी मां जाओ अब, अपनी मां को बुलाओ।

(बेटी मां-मां आवाज़ लगाते हुए वहां से चली गयी।)

अजी...आपको क्या हो गया है ? ज़रा घर के बच्चों के बारे में भी सोचिए, बच्चे अब बड़े हो रहे हैं। आप रोज़-रोज़ घर में शराब लाते हैं, ये बात ठीक नहीं (राज की पत्नी ने राज कि इस बुरी आदत पर अपना एतिराज़ ज़ाहिर किया)। रसोई में प्रवेश करने से पहले उसने एक बार राज की और देखा और कहा, ''बच्चों के सामने यूं शराब पीकर आना कहां कि अक़लमंदी है ?''

हां-हां ठीक है, चलो अब कुछ और खाने को भी परोसोगी या बातें ही करोगी। बाहर साहब आये हैं, उन्हें मना नहीं कर सकते। तुम तो जानती हो आजकल पीना एक स्टेटस सिंबल माना जाता है। नहीं पिएंगे-पिलाएंगे तो साहेब ऑफ़िस जाकर सभी लोगों के बीच मेरा मज़ाक़ बना देंगे। (राज ने अपनी पत्नी के कंधे पर हाथ रखकर उसे समझते हुए कहा।)

राज कि पत्नी का गुस्सा भी शायद कुछ हद तक जायज़ था।

वैसे भी, आज जहां हमारे समाज ने कई क्षेत्रों में ऊंचाइयां हासिल की हैं, वहीं से उन ऊंचाइयों का स्तर गिराने में भी कोई क़ोर क़सर नहीं छोड़ी है। मित्रों, जब इन्सान खुद ही अपना दायरा बढ़ाता और सीमित करता है तो भला उसमें समाज कि कही बातों, मान्यताओं, संस्कारों और स्टेटस सिंबल की बात ही कहां आती है।

बदलाव प्रकृति का नियम है, लेकिन बदलाव से मानवता का किसी भी रूप में हनन नहीं होना चाहिए।

अच्छा, तुम्हारे बॉस को तुम्हारे काम से ज़्यादा तुम्हारा पीना-पिलाना पसन्द है।

अरे भागवान अब नशा मत उतारो ऐसी कड़वी बातें करके।

(रसोई में हो रही बातों की आवाज़ पास वाले कमरे तक पहुंची तो वहां से राज की बूढ़ी मां बाहर आयीं।

...अरे मां तुम क्यों बाहर आ गयी। जाओ अपना पूजा-पाठ करो...बेटे के बोलने पर उसके मुह से शराब की महक आयी तो वह दरवाज़े पर ही कुछ दूरी पर खड़ी होकर कुछ सोचने लगी—राज अपनी आमदनी का अधिकतर भाग शराब और पार्टियों में ख़र्च कर रहा है। राज के पिता एक सरकारी मुलाज़िम थे। उन्होंने पाई-पाई जोड़कर जो पैसे इकट्ठा किये वो सब राज की पढ़ाई और बेटी की शादी में ख़र्च हो गये। बस पेंशन है जो मुई इस महंगाई के सामने छोटी पड़ जाती है। शायद हमने उसे जीवन में भरपूर स्नेह और मनोरंजन के पल नहीं दिये, बस अपनी विवशताओं को ही गिनाया है। राज कि मां अपने आपको मन ही मन कोस रही थी। करती भी तो क्या ?? अपने दिये हुए संस्कारों को नशे में डूबता देख उसकी मां ने चुप रहना ही ठीक समझा।

अरे मां, इतना मत सोचो, जाओ भीतर जाओ (राज जैसे मां का चेहरा पढ़ रहा था)।

मां बिना बोले भीतर चली गयी।

(ठक-ठक, ठक-ठक)

शायद कोई नीचे आ रहा है, राज की पत्नी ने खिड़की से बाहर झांका।

हां-हां, मैं ही हूं बहु...तुम्हारा ससुर। और ये आवाज़ मेरी लाठी से आ रही है। इसके नीचे लगा रबड़ का टुकड़ा थोड़ा घिस गया था सो मैंने निकाल दिया। इसलिए अब मेरी तरह मेरी बूढ़ी लाठी भी आवाज़ करती है।

(बाबू जी को देख राज ने नज़रे इधर-उधर घूमाने

लगा)

हां सरकार, क्या हुक्म है ? पिता जी ने अपने माथे पर हाथ रखकर उसे सैल्यूट किया...राज को लगा शायद बाबू जी उसे डांटेंगे, इसलिए उसने अपनी नज़र नीची की ।

बेटा, इस तरह मुझे शर्मिंदा मत करो । तुम पर मुझे बहुत गर्व है । तुमने हमारे परिवार का नाम रोशन किया है । तुमने अफ़सर बनकर इस इन्सान पर बहुत उपकार किये हैं । बेटा आज जो भी हमारे पास है वे सब तुम्हारा दिया ही तो है । हम जो खाना खाते हैं, जो कपड़े पहनते हैं, रहने की जगह, प्यार करने वाले पोते-पोतियां, सभी कुछ तो तुम से ही मिला है । यहां तक की अस्पताल जाने तक के पैसे भी हम तुम्हीं से तो लेते हैं । तुम राजा हो हम तो तुम्हारी प्रजा हैं । बस ऐसी की कृपा करते रहना बेटा ।

राज ने अपने पिता को हमेशा एक कड़क मिज़ाज इन्सान के रूप में देखा, जो हमेशा उसकी छोटी से छोटी ग़लतियों पर डांटते । लेकिन ये रूप देखकर वे कुछ न कह सका । बस लाल नशीली आंखों में आंसू लिए वहां से बिना कुछ बोले लड़खड़ाता हुआ-सा वहां से चला गया । शायद बाबू जी की बातों का उस पर कुछ असर हुआ था । असर भी ऐसा कि कुछ ही दिनों में राज के घर का माहौल बदलता-सा दिखायी देने लगा ।

अब वो दोस्तों के बीच जाकर शराब नहीं पीता था । बस वे ख़ामोश रहता था । बस कुछ ऐसा हुआ था कि राज थोड़ा बदल गया था और ख़ामोश भी रहने लगा था ।

उसके बदलाव का कारण जानने कि जिज्ञासा से राज कि बेटीं ने अपनी मां से पूछा, ''मां, पापा इतने कैसे बदल गये ?'' मां ने बेटी कि जिज्ञासा को देखते हुए बड़े शांत भाव से उत्तर दिया, ''बेटा कई बार समय के साथ बदलाव भी ज़रूरी हैं, इन बदलावों के खट्टे-मीठे अनुभवों को चखकर ही हम अपने जीवन कि सही दिशा निर्धारित कर पाते हैं ।''

बेटी ने मुस्कराते हुए मां की बात पर सहमति जता दी और मां ने भी उसकी हंसी के बदले उसे दोनों आंखें बंद कर नटखटपन से चलने का इशारा किया...और दोनों वहां से आंखों में चंचलता और खुशी का भाव लेते हुए चली गयीं ।

इस्लामिक अकेडमी फॉर चिल्ड्रेन

ह्यूमन डेवलपमेंट सोसाइटी, निज़ामपुर, गोरखपुर (यू०पी०)

के अन्तर्गत

1989 ई० से शिक्षा के क्षेत्र में सेवारत

दीनी और आधुनिक शिक्षा का सुन्दर संगम, कंप्यूटर शिक्षा, अरबी साहित्य की शिक्षा

सेक्रेट्री ह्यूमन डेवलपमेंट सोसाइटी, निज़ामपुर, गोरखपुर (यू०पी०)

उसकी तह तक

मैं जानता हूं-
न्यूटन के गति के नियमों को-
बखूबी ।

फिर भी-
चल रहा हूं-
पृथ्वी को उठाये-
अपने भीतर-
तमाम घर्षण-
विकर्षण के बावजूद भी ।

अन्दर की दूरियां-
तय कर रही है-नज़दीकियां-
हम और हमारे बीच-
बन गयी है-सोच-
अल्ट्रासाउंड सी ।

भीतर का आदमी-
बज रहा है-
किसी झुनझुने की तरह-
निरंतर ।

अतीत की नदी में-
तैर रही है-
मन की नांव ।

जो जाना चाहती है-
तमाम झंझावतों के-
उपरांत भी-
उसकी तह तक-
उसके निर्णय तक ।

बनना चाहती है-
कोलम्बस-
जो खोज निकाले-
नयी दुनिया ।

होना चाहती है-जेम्सवाट-
जिसके भगोने से-
निकलती हो भाप-
बनते हो चावल-
हमारे लिए ।

मगर मैं-
यह भी जानता हूं-
कि पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से-
नहीं बच पाता-कोई ।

डॉ० सुरेश उजाला
108 तकरोही, पं० दीनदयालपुरम मार्ग,
इन्दिरा नगर, लखनऊ (उ०प्र०)

कांटा

महंगाई और बजट के उपरांत
नेता जी सपाट बोले
मैं वो कांटा हूं जितना छेड़ोगे ।
उतना ही भीतर घुस जाता हूं
बेहतर है नमक रोटी खाते रहो
सब्सीडरी की मुझे भी चिंता है
तुम अपनी रोटी खाओ
चाहे पके या न पके
भूल से भी देखा मेरी ओर
या मेरा परिचय जानना चाहा
रहता हूं तुम्हारे आस-पास
पर छेड़ों मत.....मैं वो कांटा हूं ।

अरुण कुमार श्रीवास्तव
25 डी, तुलारामबाग़, इलाहाबाद (उ०प्र०)

उपनिवेशीकरण की काली किताब

❖ इग्नासियो रामोने

यूरोप के ही एक देश फ्रांस में इन दिनों एक अनोखी बहस पैदा हो चुकी है । क्या उपनिवेशवाद यूरोप का विस्तारवादी साम्राज्यवाद था जो यूरोप की सीमाओं से बाहर फैला और शेष दुनिया के निवासियों का शोषण और दमन करने के लिए उन पर क़ब्ज़ा किया । फ्रांस ही नहीं बल्कि उपनिवेशकाल के इस विस्तारवादी इतिहास में बड़े पैमाने पर बेलजियम, स्पेन, पुर्तगाल, इटली ने भी योगदान किया है । ये उपनिवेशवादी साम्राज्य रहे हैं और अब तक उस ज़माने को 'शानदार युग' की तरह पुस्तकों में पेश किया जाता रहा है । लेकिन अब यूरोप के देशों में उस शानदार युग की प्रदर्शनियां लगायी जा रही हैं, पुस्तकें फ़िल्में और टेलीविज़न कार्यक्रम पेश किये जा रहे हैं जो उपनिवेशवाद की अस्ली हक़ीक़त को सामने ला रहे हैं ।

अमेरिका की जीत का नतीजा हुआ था अमेरिकी इंडियन सभ्यताओं का विनाश और भारी नरसंहार । उपनिवेशीकरण के समर्थकों और विरोधियों के बीच तभी से बहस चल रही है । धर्मशास्त्री यह पूछते हैं कि इंडियनों के साथ युद्ध करना और उन्हें ग़ुलाम बनाना क्या न्यायपूर्ण है ? कुछ कहते हैं, हां, क्योंकि ईश्वर ने उन्हें ग़ुलाम निम्नकोटि का बनाया है । उन्हें अपने अपराधों का, अपने निकम्मेपन का, अपने पापों का और अपने जंगलीपन का फल भोगना चाहिए । दूसरे कहते हैं, नहीं, क्योंकि ईश्वर ने हमारी तरह ही अन्य लोगों को बनाया है जिनमें हमारे जैसे गुण हैं और हमारे जैसे अधिकार ।

इसकी शुरुआत हुई फ्रांस के ही एक पूर्व जनरल ओसारसेज की इस स्वीकारोक्ति के साथ कि अल्ज़ीरिया की लड़ाई (1954-1962) के दौरान सेना के द्वारा उत्पीड़न और दमन किया गया था । ऐसा लगता है मानो अनौपनिवेशीकण के इतने वर्षों के 'उपनिवेशीकरण की काली किताब' फिर खुल गयी हो । इस संस्मरण ने फ्रांस में नाटकीय ढंग से बहस चालू कर दी है । इसके दो कारण हैं : पहला-अल्जीरिया की आज़ादी की लड़ाई में विकट हिंसा हुई थी । दूसरा-युद्ध में शामिल सैनिकों की पीढ़ी जिनकी उम्र उस समय कोई 20 साल रही होगी, अपनी ज़िन्दगी के सबसे कठोर अनुभव के बारे में अधिक से अधिक जानना चाहती है । इस सवाल पर वे लोग भी भारी दिलचस्पी रखते हैं जो अल्जीरिया में बसे लाखों यूरोपीय वापस लौटे और वे अल्जीरियाई लोग और उनकी औलाद भी इस सवाल से जुड़ी हैं जो फ्रांस में आकर बस गये हैं ।

यूरोप के सीमा विस्तार का यह आन्दोलन पन्द्रहवीं सदी में शुरू हुआ और बीसवीं सदी के दूसरे भाग में समाप्त हुआ । अपने शीर्ष काल, 1938 के आस-पास उपनिवेशकारी यूरोप का दुनिया के 40 प्रतिशत से ज़्यादा भू-भाग पर आधिपत्य था । दूसरे विश्वयुद्ध की पूर्व संध्या पर केवल ब्रिटेन और फ्रांस का उपनिवेशी देशों के 85 प्रतिशत भाग पर क़ब्जा था । ऐसा अनुमान है कि इस समय पूरे नक्षत्र के कुल बाशिंदों के 70 प्रतिशत वे लोग हैं जिन्होंने उपनिवेशवाद फैलाया या जो उसके शिकार हुए ।

उपनिवेशवाद आधुनिक युग के साथ शुरू हुआ जिससे बड़े-बड़े आविष्कार और बड़ी-बड़ी खोजें हुईं और मध्यकाल समाप्त हुआ । क्रिस्टोफर कोलम्बस ने 12 अक्तूबर 1492 को अपने पांव अमेरिका में रखे । उसी से शुरू हुआ कि यूरोप, केवल वहीं दुनिया में अपना विस्तार, विजय, नियंत्रण और उपनिवेशीकरण करेगा । इसे करने वालों में से पहले स्पेनवासी और पुर्तगाली थे । पोप एलेक्जेंडर-4 ने 3 मई 1493 को खोजी गयी और खोजी जाने वाली दुनिया को स्पेन और पुर्तगाल के बीच बांट

उपनिवेशवाद एवं बाज़ारवाद

दिया जिससे कि 'कैथोलिक आस्था और धर्म का उत्कर्ष हो और सब जगह बड़े और जंगली (बर्बर) राष्ट्रों को गुलाम बनाया जाए और साथ ही समाप्त किया जाए ।'

अमेरिका की जीत का नतीजा हुआ था अमेरिकी इंडियन सभ्यताओं का विनाश और भारी नरसंहार । उपनिवेशीकरण के समर्थकों और विरोधियों के बीच तभी से बहस चल रही है । धर्मशास्त्री यह पूछते हैं कि इंडियनों के साथ युद्ध करना और उन्हें गुलाम बनाना क्या न्यायपूर्ण है ? कुछ कहते हैं, हां, क्योंकि ईश्वर ने उन्हें गुलाम निम्नकोटि का बनाया है । उन्हें अपने अपराधों का, अपने निकम्मेपन का, अपने पापों का और अपने जंगलीपन का फल भोगना चाहिए । दूसरे कहते हैं, नहीं, क्योंकि ईश्वर ने हमारी तरह ही अन्य लोगों को बनाया है जिनमें हमारे जैसे गुण हैं और हमारे जैसे अधिकार ।

1550 में वालोडोलिड में एक विद्वत आयोग के सामने विवाद खड़ा हुआ दोनों प्रकार के विचार रखने वालों के बीच जवान जीने द सपुलवेदा का मानना था कि उपनिवेशी राज्य एक कर्तव्य है । बर्तलोने द लाज़ काज़ाल का विचार था कि यह अपराध है । विजय लाज़ काजाज़ की हुई । पर उनके विचार के अनुसार जो नये क़ानून बने उन्हें लागू नहीं किया गया । फिर मोटाश राबेले या रोन्सार एक मानवीय उपनिवेशीकरण के पक्षधर थे । उन्होंने विजेताओं (कोक्वीस्तादोरों) की झूठी महिमा की निन्दा की ।

उपनिवेशवाद से मुक्ति पाने वाला पहला महाद्वीप अमेरिका है लेकिन उसकी यह आज़ादी मेट्रोपोल से हुई, पर यह विरोधाभास है कि उसके अन्दर उपनिवेशवादी ताक़तें मज़बूत हुई हैं । यही कारण है कि इस नक्षत्र पर जितने देश उपनिवेशवाद से मुक्त हुए उनमें केवल अमेरिका (साथ ही, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड) ऐसा देश है जहां उपनिवेशवाद में फंसी आबादी (इंडियन) सत्ता से वंचित, भेदभाव से ग्रसित और सीमांत बन गयी । यह अमेरिका और अर्जेंटीना ऐसे देश हैं जो आज़ाद हुए, उपनिवेशवाद वहीं ख़त्म हुआ पर उन्होंने अपने मूल निवासी इंडियन को लगभग ख़त्म कर डाला ।

स्पेन और पुर्तगाल, तीन अन्य नाविक शक्तियां, इंग्लैंड, फ्रांस और हॉलैंड उत्तरी अमेरिका, भारत और मसाले के टापू (आज का इंडोनेशिया) में अपने उपनिवेश बनाने का अभियान शुरू करते हैं । ऐसा वे व्यापारवादी सिद्धांत (मार्केंटाइल थ्योरी) के नाम पर करते हैं । तीन सदियों तक यह सिद्धांत हावी रहा । व्यापारवाद, उपनिवेशों को मेट्रोपोल पर आर्थिक रूप से निर्भर बनाता है और उनका प्रबंधन अक्सर कंपनियों द्वारा करता है । इसमें उपनिवेशों पर तीन प्रकार के प्रतिबंध लगाये जाते हैं : उनके उत्पादों को मैट्रोपोलों के उत्पादों से प्रतिस्पर्धा नहीं करने दी जाती, किसी तीसरी पार्टी को उपनिवेश और उसके मेट्रोपोल के बीच हस्तक्षेप करने से रोकना और उपनिवेश को केवल मेट्रोपोल से ही व्यापार करने को मजबूर करना' ।

यदि उपनिवेश भी बाज़ारवादी नीतियां अपनाते हैं और उन्हें इसमें अधिक से अधिक कठिनाई होती है तो व्यापार की आज़ादी के नाम पर उदारवादी लोग प्रतिरोध को प्रोत्साहन देते हैं । इसकी वजह से उत्तरी अमेरिका के उपनिवेश में 1776 में विद्रोह और आज़ादी की लड़ाई भड़की । तीस साल बाद दक्षिणी अमेरिका में यही हुआ । ये अलगाववादी उपनिवेश मैट्रोपोल से आर्थिक मामलों में तो उपनिवेशवाद विरोधी बन गये पर मूल निवासी इंडियनों और अश्वेतों के प्रति भयंकर रूप से उपनिवेशवादी मानसिकता के बने रहे और गुलामी की प्रथा चलाते रहे । इससे अमेरिकी विरोधाभास की व्याख्या होती

है । उपनिवेशवाद से मुक्ति पाने वाला पहला महाद्वीप अमेरिका है लेकिन उसकी यह आज़ादी मेट्रोपोल से हुई, पर यह विरोधाभास है कि उसके अन्दर उपनिवेशवादी ताक़तें मज़बूत हुई हैं । यही कारण है कि इस नक्षत्र पर जितने देश उपनिवेशवाद से मुक्त हुए उनमें केवल अमेरिका (साथ ही, आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड) ऐसा देश है जहां उपनिवेशवाद में फंसी आबादी (इंडियन) सत्ता से वंचित, भेदभाव से ग्रसित और सीमांत बन गयी । यह अमेरिका और अर्जेंटीना ऐसे देश हैं जो आज़ाद हुए, उपनिवेशवाद वहीं ख़त्म हुआ पर उन्होंने अपने मूल निवासी इंडियन को लगभग ख़त्म कर डाला ।

उपनिवेशवाद का पहला युग समाप्त हो गया है । उन्नीसवीं सदी के शुरू के उदारवादी जैसी एलैक्सी द त्रोकवील या दौमीन्गो एफ सारमियेंतो ने इन नरसंहारों पर अपनी आंखें बंद रखी है और उन्हें उपनिवेश छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया । उदाहरण के लिए जांवापिस्त सेई अपने राजनीतिक अर्थशास्त्र की पूर्ण पाठ्य पुस्तक में 1803 में लिखते है, ''व्यापार करने वाले लोगों के सच्चे उपनिवेश ने दुनिया के सभी खंडों से आज़ाद लोग होते हैं । व्यापार करने वाले सभी लोगों की यही कामना होनी चाहिए कि वे आज़ाद हों जिससे वे ज़्यादा मेहनती और ज़्यादा धनवान बन सकें क्योंकि जितनी उनकी संख्या बढ़ेगी और वे जितने ज़्यादा उत्पादक बनेंगे, उतना ही वे आदान-प्रदान के अवसर और सुविधाएं पैदा कर सकेंगे । ऐसे लोग हमारे उपयोगी मित्र होंगे और वे हम से न विशेषाधिकार मांगेंगे, उनके लिए दुनिया की सीमाओं पर प्रशासन, जल सेना और फ़ौजी व्यवस्था ही बनानी होगी । एक समय आयेगा जब लोग इतनी बेवक़ूफ़ियों के लिए शर्मिंदा होंगे और जब उपनिवेशों की हिमायत करने वाले उन लोगों के अलावा कोई और न होगा जिन्हें उपनिवेशों से लेन-देन के ऊंचे पद आमजन की क़ीमत पर मिले होंगे ।

पूरी उन्नीसवी सदी में उपनिवेशों के पक्षधर और विरोधियों में टक्कर होती रही । फ्रांस जिसने 1830 में अल्ज़ीरिया पर क़ब्ज़ा जमा लिया, इस विवाद में बचा न रहा । यहां जो अपराध किये गये उनकी कुछ ने भर्त्सना की ।

उदाहरण के लिए निक्टर ह्यूगो ने अपनी पुस्तक, ''शोज़ व्यू'' में लिखा, ''कल शाम 16 अक्तूबर 1852 जनरल लैफ्लों ने मुझे बताया, हमलों में देखा गया कि सैनिक खिड़कियों से बच्चों को नीचे फेंक रहे थे और नीचे खड़े सैनिक उन्हें बंदूक़ की नोक पर ले रहे थे । उन्होंने औरतों के कान के छल्ले छीनने के लिए उनके कान काटे और अंगूठी लेने के लिए हाथ और पैर काट डाले ।'' दूसरे लोग सेंट-सीमों का हवाला देते हुए कहते हैं कि विद्वानों, बैकरों और उद्योगपतियों द्वारा संचालित उपनिवेशीकरण ने विज्ञान, चिन्तन और प्रगति के लाभ सभी को और सब जगह पहुंचाए ।

1870 के बाद उपनिवेशवाद में एक नया अध्याय जुड़ गया साम्राज्यवाद । औद्योगिक क्रान्ति के बाद औद्योगिक ताक़तें तकनीकी प्रगति से मज़बूत हो गयी और वे सेना लेकर देशों को विजय करने निकल पड़ी । जूल्स फैरी के कथनानुसार, ''उपनिवेशी राजनीति औद्योगिक राजनीति की बेटी है''। उपनिवेशी ताक़त बनना राष्ट्रीय सम्मान का प्रमुख अंग बन गया । अफ़्रीक़ा इस नाटक का मंच बन गया । पहले तो इसमें परम्परागत खिलाड़ी थे--ब्रिटेन और फ्रांस । फिर उनमें नये खिलाड़ी आ जुटे--बेलजियम, जर्मनी, इटली । प्रशांत और सुदूर पूर्व में अमेरिका और जापान ने भी उपनिवेशी चेहरा दिखाया । इन नयी विस्तारवादी नीतियों में डार्विन के सिद्धांत को अपनाया गया । पिछड़े लोगों का सफ़ाया करने से संपूर्ण मानवता का निश्चित रूप से लाभ होगा । जूल्स फैरी के अनुसार श्रेष्ठ नस्लों का पिछड़ी नस्लों के प्रति एक कर्तव्य हैं ।''

समाजवादियों ने वैश्विक स्तर पर उपनिवेशिकरण की भर्त्सना की लेकिन ऐसा उन्होंने बड़े संकोच के साथ किया । एंजिल से लेकर मार्क्स तक के लेखों में नस्लवाद की बू आती है जब उपनिवेशी आबादी की व्याख्या करते हैं । लेनिन और उनका लेख, ''साम्राज्यवाद'' पूंजीवाद का सर्वोच्च मंच'' आने पर समाजवाद का चेहरा क्रान्तिकारी रूप से उपनिवेशवाद विरोधी बना है । इस आधार पर और राष्ट्रीय भावनाओं के उत्कर्ष से बीसवीं सदी में उपनिवेश विरोधी संघर्ष बढ़ते गये । दूसरे महायुद्ध ने, जिसने यूरोप को ध्वस्त कर दिया, उपनिवेशी ताक़तों को कमज़ोर किया ।

पूंजीवादी साम्राज्य और आर्थिक शोषण

■ डॉ॰ सआदतुल्लाह हुसैनी

ब्याज और सट्टेबाज़ी पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था के दो महत्वपूर्ण आधार हैं । इन दोनों के द्वारा साम्राज्यवाद को इस बात का अवसर मिलता है कि वह वैश्विक संसाधनों पर क़ब्ज़ा करे और विश्व स्तर पर पूंजी के विनिमय और हस्तांतरण को अपनी मर्ज़ी और ज़रूरत के अनुसार नियंत्रित करे । बाज़ारों पर प्रभावी हो और ग़लबा हासिल करे और दुनिया की सम्पत्ति को समेट कर कुछ हाथों में केन्द्रित कर दे ।

ब्याज और जुए के द्वारा वैश्विक आर्थिक व्यवस्था असुदृढ़ता या अस्थिरता का शिकार हो जाती है । पूंजीपति इस अस्थिरता का शोषण करता है ।

ब्याज और जुए के अतिरिक्त वैश्विक आर्थिक संस्थान (जो वैश्विक आर्थिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग हैं) भी पूंजीवादी साम्राज्य के लिए अपने उद्देश्य की पूर्ति के महत्वपूर्ण और प्रभावकारी साधन हैं । उन संस्थानों को इस्तेमाल करते हुए ऐसी नीतियां दुनिया पर और विशेष रूप से तीसरी दुनिया से संबंधित ग़रीब देशों पर थोपता है, जिसके नतीजे में उसके लिए अपने एजेंडे को पूरा करना आसान हो जाता है ।

ब्याज पूंजीवादी व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है । ब्याज की तबाहकारियों को समझने के लिए अमेरिका के आर्थिक संकट का उदाहरण पर्याप्त है । आर्थिक संकट के विश्लेषकों में इस बात पर लगभग मतैक्य पाया जाता है कि इसका आरंभ उस ऋण से हुआ है जो ब्याज पर दिया जाता है ।

ब्याज पर आधारित व्यवस्था सबसे पहले निर्बाध रूप से ख़र्च करने और आवश्यकता से अधिक व्यय करने का स्वभाव बनाता है । जब लोग अपनी संपूर्ण पूंजी ख़त्म कर देते हैं, इसके बाद ही ब्याज खाने वालों का कारोबार शुरू होता है ।

अतएव सूदी कारोबार के लिए, विशेष रूप से उपभोक्ता संबंधी ऋण के कारोबार की उन्नति के लिए, यह आवश्यक है कि लोग अपनी आय से अधिक ख़र्च करें, इसलिए ब्याज-व्यवस्था लोगों को आय से अधिक भोग-विलास की प्रेरणा देती है । विज्ञापनों की चकाचौंध से लोगों को ज़्यादा-से-ज़्यादा ऐश करने और भोग-विलास पर उभारा जाता है और उन्हें ख़रीदने के लिए आसान क़र्ज़ उपलब्ध कराये जाते हैं । क़र्ज़ों के भुगतान के लिए और अतिरिक्त क़र्ज़ का प्रस्ताव होता है । इस प्रकार क़र्ज़ के जाल में व्यक्ति को फंसा दिया जाता है ।

पूंजीवादी व्यवस्था के सबसे बड़े केन्द्र अमेरिका में घरेलू क़र्ज़ (Household Debts) 1970 से प्रतिवर्ष बढ़ते रहे; यहां तक कि वर्तमान आर्थिक संकट के पश्चात 2009 ई॰ में उनमें कमी आयी । 1975 ई॰ में कुल घरेलू क़र्ज़ 743 बिलियन डॉलर था, जो कुल आमदनी का 60 प्रतिशत था । 2000 ई॰ में यह क़र्ज़ 7000 बिलियन डॉलर और 2008 ई॰ में 13794 बिलियन डॉलर हो गया । यह आय का 134 प्रतिशत था । मानो अमेरिकी अपनी आय से 34 प्रतिशत अधिक ख़र्च कर रहे थे । 2008 ई॰ में एक अमेरिकी के पास औसतन 13 क्रेडिट कार्ड थे; जिनके द्वारा वह अपनी आय से कहीं अधिक ख़र्च करने में लगा हुआ था । 43 प्रतिशत अमेरिकी परिवार अपनी आय से अधिक ख़र्च कर रहे थे । ख़र्च करने की इस दीवानगी ने अमेरिका में बचत बिल्कुल कम कर दी थी ।

अमेरिकी स्वास्थ्य विभाग के अनुसार भावी वर्षों में रिटायर होने वाले 96 प्रतिशत अमेरिकी दान और सदक़ों पर निर्भर होंगे । अर्थात जीवन भर कमाने के पश्चात उनके पास इतनी बचत नहीं होगी कि वे अपना बुढ़ापा चैन से गुज़ार सकें ।

लोगों के ख़र्च करने के इस स्वभाव से दोनों प्रकार के पूंजिपतियों का लाभ था । एक तो वे पूंजीपति थे जो उपभोग सामग्री के उत्पादन में व्यस्त थे । उन्हें ख़ूब उत्पाद करने और लाभ कमाने का अवसर मिल रहा था और दूसरी ओर वे पूंजीपति थे जो लोगों को ख़र्च करने के लिए सूदी (ब्याज वाले) क़र्ज़ जारी कर रहे थे और उनके ब्याज से लाभ कमा

रहे थे ।

अतएव ब्याज खाने वालों ने नित नये तरीक़ों से लोगों को क़र्ज़ देना शुरू कर दिया । घर बनाने के लिए क़र्ज़, कार ख़रीदने के लिए क़र्ज़ आदि अमेरिकी आर्थिक जीवन का अनिवार्य अंग बन गया । इससे आगे बढ़कर दैनिक उपभोग की वस्तुओं की ख़रीदारी के लिए भी क़र्ज़ दिये जाने लगे और क्रेडिट काड्र्स जारी किये गये, जिनके द्वारा लोग क़र्ज़ पर चीज़ें प्राप्त कर सकते थे । यहां तक कि क़र्ज़ देने वालों की मार्केट पूर्ण Saturate हो गयी, किन्तु ब्याज खाने वालों की हवस (लालसा) ख़त्म नहीं हुई । उन्होंने क़र्ज़ लेने वालों की नयी मार्केटों की तलाश शुरू की और उन ग़रीब और निर्धन लोगों की ओर उन्मुख हुए जो कोई ज़मानत न होने के कारण बैंकों से क़र्ज़ नहीं ले सकते थे ।

उन ग़रीबों को घर बनाने के लिए क़र्ज़ दिये गये । उन्हें सब-प्राइम क़र्ज़दार कहा जाता है । चूंकि उन्हें क़र्ज़ देना ख़तरे से ख़ाली न था और बैंकों उन्हें क़र्ज़ नहीं देते थे, अत: मध्यम निवेश बैंक अस्तित्व में आये । उन्होंने बैंकों से ब्याज पर क़र्ज़ लिया और ब्याज दर बहुत अधिक बढ़ाकर ग़रीब क़र्ज़दारों में वितरित कर दिया । अतएव सब-प्राइम क़र्ज़दारों को 30-32 प्रतिशत की ब्याज दर पर भी क़र्ज़ दिये गये। शीघ्र और अधिक से अधिक लाभ कमाने के लालच में उन कम्पनियों ने उन क़र्ज़ों को सिक्योरिटीज़ में बदला और M.B.S. या C.D.O के रूप दोबारा पैक करके बेचना शुरू किया । इस प्रकार उन क़र्ज़दारों से संबद्ध ज़ोखिम (Risk) पूरी व्यवस्था में फैल गया ।

जब इन्वेस्टमेंट बैंकों (निवेश बैंकों) ने आसान वृद्धि ब्याज से लाभ कमाना आरंभ किया तो इस बहती गंगा में हाथ धोने के लिए इंश्योरेंस कम्पनियां भी मैदान में कूद पड़ीं । उन्होंने उन क़र्ज़ों को इंश्योर किया । इस प्रकार बड़े बैंक, इंवेस्टमेंट कम्पनियां, सिक्योरिटीज़ ख़रीदने वाले, इंश्योरेंस कम्पनियां सभी एक ही समय में ग़रीब सब-प्राइम क़र्ज़दारों से अपने-अपने हिस्से का ब्याज कमाना चाह रहे थे ।

फ़ैडरल बैंक ने ब्याज की दर में मामूली वृद्धि की और इसके साथ ही पूरी व्यवस्था छिन्न-भिन्न होना शुरू हो गयी । ग़रीब क़र्ज़दार क़र्ज़ वापस नहीं कर सके । उन पर आधारित सिक्योरिटीज़ के दाम गिरने लगे और शृंखलीय अभिक्रिया (Chain Reaction) के नतीजे में पूरी व्यवस्था रेत के घरौंदे की तरह बैठ गयी ।

इस संकट से ज्ञात होता है कि ब्याज पर आधारित क़र्ज़ कितने ख़तरनाक होते हैं और कैसे वे पूरी व्यवस्था में अस्थिरता पैदा करते हैं ।

ब्याज है सरासर अन्याय

ब्याज न्याय की अपेक्षाओं के विपरीत है । यदि ब्याज सहित क़र्ज़ मौलिक मानवीय आवश्यकताओं के लिए दिया जाए तो बात अत्यन्त अमानवीय होगी कि किसी मजबूर व्यक्ति की मौलिक आवश्यकताओं को पूंजीपति लाभ कमाने का साधन बनाए और बजाय इसके कि ब्याजरहित क़र्ज़ के द्वारा उसकी सहायका करे, ब्याज के द्वारा उसका ख़ून चूसने की कोशिश करे । और यदि ब्याज सहित क़र्ज़ किसी उत्पादन के काम या व्यापार के लिए दिया जाए तब भी यह बात अन्यायपूर्ण है कि व्यापार में लाभ या हानि प्रत्येक स्थिति में निश्चित राशि ब्याज स्वरूप ली जाए । यदि व्यापार में लाभ बहुत अधिक हो तो यह क़र्ज़ देने वाले के साथ अन्याय है कि उसे बहुत ही साधारण लाभ पर संतोष करना पड़े और यदि व्यापार में बहुत कम लाभ हो या घाटा हो तो यह व्यापारी के साथ अन्याय है कि उसे घाटे के बावजूद निश्चित रक़म ब्याज स्वरूप देनी पड़े ।

ब्याज पर आधारित अस्थिर अर्थव्यवस्था

ब्याज पर आधारित व्यवस्था की अनिवार्य विशेषता यह होती है कि इसमें अस्थिरता होती है । और उन्नति और मंदी के चक्कर एक के बाद दूसरे आते रहते हैं ।

जब ब्याज-दर कम होती है तो लोग बचत नहीं करते और उनका रुझान अधिक से अधिक क़र्ज़ लेने और ख़र्च करने की ओर माइल होता है । इसके नतीजे में ख़र्च करने के रुझान में अभिवृद्धि होने लगती है । शॉपिंग मॉल आबाद हो ज़ाते हैं । गाड़ियां ख़रीदने वालों की क़तार लग जाती है । प्रत्येक व्यक्ति घर बनाना और फ़्लैट ख़रीदना चाहता है । बैंक घर बनाने और कार ख़रीदने आदि के लिए ही नहीं, टी-शर्ट ख़रीदने और होटल में छुट्टी गुज़ारने के लिए भी क़र्ज़ों की पेशकश करते रहते हैं । परिणामस्वरूप मांग बढ़ जाती है । कम्पनियां प्रोडक्शन बढ़ा देती हैं । प्रोडक्शन

बढ़ने से रोज़गार के अवसर बढ़ते हैं । शहरों की चकाचौंध बढ़ती है ।

यह दौर कुछ ही समय में अपनी पराकाष्ठा को पहुंचता है और फिर ब्याज अपने चमत्कार दिखाना शुरू करता है । इसके बाद इसके अनिवार्य परिणाम के रूप में एक-दूसरा दौर शुरू होता है ।

मांग बढ़ने के कारण चीज़ें महंगी होने लगती हैं । उपभोग और उत्पादन बढ़ने से क़र्ज़ों की मांग बढ़ जाती है । एक ओर उपभोक्तागण भी क़र्ज़ों के लिए बड़े पैमाने पर बैंकों की ओर रुख़ करते हैं, दूसरी ओर उत्पादक भी तेज़ी के साथ उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक क़र्ज़ हासिल करना चाहते हैं । फिर बचत में कमी के कारण बैंकों के पास पूंजी की कमी होने लगती है । पूंजी (बचत) की कमी और ऋणों (क़र्ज़ों) की मांग में वृद्धि ब्याज की दरों में वृद्धि का कारण बनती है ।

ब्याज एक धोखा है

किसी भी देश में हर तरह की करेंसी बैंकों के द्वारा जारी होती है । बैंक उसे क़र्ज़ों के रूप में जारी करते हैं और उन क़र्ज़ों पर ब्याज भी लगाते हैं । उन्हीं क़र्ज़ लेने वालों के माध्यम से करेंसी मार्केट में आती है ।

मान लीजिए कि किसी देश में केन्द्रीय बैंक ने सौ करोड़ रुपये के नोट जारी किये हैं । स्पष्ट है कि यही सौ करोड़ रुपये मार्केट में मौजूद रहेंगे । बैंक उन सौ करोड़ रुपयों को क़र्ज़ों के रूप में जारी करेगा । अब बैंक ब्याज के साथ 110 करोड़ रुपये प्राप्त करना चाहता है । मार्केट में केवल 100 करोड़ रुपये हैं । ये बढ़े हुए 10 करोड़ रुपये, जो बैंक ब्याज के रूप में लेना चाहता है, वह मार्केट में मौजूद ही नहीं है । इसकी अदायगी के लिए या तो बैंक बढ़े हुए अतिरिक्त नोट छापता है जिससे महंगाई में वृद्धि के द्वारा आम आदमी पर बोझ पड़ता है या कुछ लोगों को क़र्ज़ की अदायगी के लिए अतिरिक्त क़र्ज़ लेना पड़ता है, जिससे क़र्ज़ के कभी न ख़त्म होने वाले चक्कर चलते हैं ।

ब्याज से जन कल्याण के काम और कम लाभ देने वाले उद्योग प्रभावित होते हैं

चूंकि प्राय: उद्योग बैंकों से प्राप्त होने वाली पूंजी पर निर्भर होते हैं, इसलिए ब्याज पर आधारित व्यवस्था में किसी भी उद्योग में काम करने के लिए कम से कम उतना लाभ पैदा करना अनिवार्य है, जिससे बैंक के ब्याज का भुगतान किया जा सके । इन्सानी ज़रूरतें हर प्रकार के उद्योगों से जुड़ी होती हैं । कुछ उद्योग अधिक दर पर लाभ देते हैं, जबकि कुछ कम दर पर । यदि किसी उद्योग का लाभ दर ब्याज से कम हो तो वह उद्योग चल ही नहीं सकता ।

परिणामस्वरूप बहुत-से ऐसे उद्योग, जिनसे ग़रीब-निर्धन जनता के कल्याण और भलाई संबद्ध हो, एक ब्याज पर आधारित व्यवस्था में पनप ही नहीं सकते । मिसाल के तौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में अस्पताल इसलिए नहीं चल सकते कि यहां बैंक की ब्याज दर पर अधिक लाभ मिलने की संभावना नहीं होती । छोटे शहरों में भी रोग-जांच के बड़े यंत्र (जैसे एम॰आर॰आई॰ मशीन) नहीं लगाए जा सकते । इसलिए कि बैंक का ब्याज अदा करने के बाद पूंजीधारी के पास कुछ नहीं बचता । इस प्रकार बहुत सारे उद्योग जो 2-3 प्रतिशत से 10-15 प्रतिशत तक की परिधि में लाभ देते हैं, एक ब्याज पर आधारित व्यवस्था में अव्यावहारिक होते हैं । प्राय: वे संस्थान जिनका संबंध जनकल्याण और भलाई के कामों (जैसे निर्धनों और मध्यम वर्ग के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, रिसर्च और लेखनकार्य आदि) से होता है, इसी श्रेणी में आते हैं । इसलिए एक ब्याज पर आधारित व्यवस्था जनकल्याण और भलाई के कामों की हत्या करने वाली होती है ।

अधिक लाभ देने वाली संस्थाएं भी हर प्रकार की स्थितियों से अधिक लाभ नहीं देतीं । अतएव विशेष रूप से मंदी के दौर में संभावित लाभ, ब्याज दर से कम हो तो कोई व्यापारी, व्यापार का जोखिम लेना नहीं चाहता । नतीजे के तौर पर अधिक लाभ की प्रतीक्षा में पूंजी बेकार पड़ी रहती है । इस स्थिति को 'स्टैगफ़्लेशन' कहते हैं । यह स्थिति भी ब्याज पर आधारित व्यवस्था की अनिवार्य विशेषता है । इसके नतीजे में मंदी की हालत और ज़्यादा सख़्त हो जाती है और पूरी अर्थव्यवस्था पर सक्ता-सा छा जाता है ।

इस प्रकार ब्याज और ब्याज पर आधारित वैश्विक अर्थव्यवस्था इन्सानों का ख़ून चूसने और उनके माल की क़ीमत पर कुछ गिने-चुने पूंजीपतियों को फ़ायदा पहुंचाने का साधन है ।

सट्टेबाज़ी

पूंजीवादी व्यवस्था का दूसरा महत्वपूर्ण हथियार सट्टेबाज़ी है । साम्राज्य ने सट्टे की बहुत-सी नयी-नयी क़िस्में पैदा कर रखी हैं और आधुनिक आर्थिक बाज़ारों में प्रत्येक स्तर पर सट्टा होता है । इसलिए कुछ लेखकों ने इस व्यवस्था ही को "सट्टेबाज़ पूंजीवादी व्यवस्था" (Casino Captalism) का नाम दिया है ।

कुछ अनुमानों के अनुसार, इस समय दुनिया में प्रतिदिन लगभग 2 ट्रेलियन डॉलर सट्टेबाज़ी (Speculation) में लगते हैं । जबकि वस्तुओं का वास्तविक क्रय-विक्रय केवल 30 बिलियन डॉलर (सट्टेबाज़ी का केवल 1.5 प्रतिशत) का होता है । ब्रिटिश अर्थशास्त्री स्यूसान स्ट्रेंजेज़ (Susane Stranges) ने इस पर टिप्पणी करते हुए सही लिखा है–

"पश्चिमी देशों की आर्थिक व्यवस्था एक बड़े जुआ-गृह के सदृश होती जा रही है । प्रतिदिन उस जुआ-गृह में इतनी बड़ी रक़मों के जुए खेले जाते हैं जिनकी कल्पना भी कठिन है । सुबह दुनिया के एक भाग में गेम शुरू होता है और रात होते ही गेम (खेल) दुनिया के दूसरे भाग में स्थानांतरित हो जाता है । (इसी प्रकार चौबीस घंटे गेम जारी रहता है ।) दुनिया के तमाम बड़े शहरों की गगन-चुम्बी इमारतों में स्थित कार्यालयों के कमरे, सिग्रेट पर सिग्रेट पी रहे ऐसे नवयुवकों से भरे हुए हैं जो इस गेम में हर समय व्यस्त हैं । उनकी आंखें क़ीमतों में पल-पल के उतार-चढ़ाव को प्रकट कर रही कंप्यूटरों की स्क्रीनों पर टिकी हुई हैं और इलेक्ट्रॉनिक मशीनों और अन्तर महाद्वीपी टेलीफ़ोनों के द्वारा वे यह खेल खेल रहे हैं । इनमें और उन जुआरियों में कोई अन्तर नहीं है, जिनकी नज़रें घूमते हुए पहिये के सिलवर बॉल पर टिकी होती हैं । वे लाल या काला, सम, विषम आदि पर अपनी चिप्स फेंकते रहते हैं ।"

इस्लाम का दृष्टिकोण ब्याज के संबंध में

इस्लाम ने इस शोषण की जड़ काटने के लिए ब्याज को बिल्कुल अवैध (हराम) घोषित किया है । ब्याज का निषेध वैसे तो संसार के समस्त धर्मों की शिक्षाओं में मौजूद है; किन्तु इस समय विश्व स्तर पर इस्लाम ही ब्याज से मुक्त अर्थव्यवस्था का आवाहक और ध्वाजावाहक है । इस्लाम ने ब्याज को अवैध (हराम) घोषित किया है और इसकी अवैधता के संबंध में अत्यन्त संवेदनशील है । इस्लाम ब्याज के किसी भी रूप को किसी भी स्थिति में बरदाश्त करने को तैयार नहीं है ।

ब्याज का स्पष्ट निषेध

पवित्र क़ुरआन ने बहुत स्पष्ट शब्दों में ब्याज का निषेध किया है । कहा–

"ऐ ईमान वालो ! दो गुना और चौगुना करके ब्याज मत खाया करो, और अल्लाह से डरा करो, ताकि तुम सफलता पाओ, और उस आग से डरो जो (ख़ुदा के) अवज्ञाकारियों के लिए तैयार की गयी है ।" (3:130-131)

ब्याज यहूदियों की रुसवाई का महत्वपूर्ण कारण

पवित्र क़ुरआन कहता है कि यहूदी जिन कारणों से अपमानित और रुसवा हुए और ईश्वर (अल्लाह) के प्रकोप के भागी बने, उनमें एक मुख्य कारण उनका ब्याज खाना है–

"और उनके ब्याज लेने के कारण से, यद्यपि उनको इससे रोका गया था, और उनके लोगों का अनाधिकार माल खाने के कारण से (भी उनको दंड मिला), और हमने उनमें से इन्कार करने वालों (विधर्मियों) के लिए दर्दनाक यातना तैयार कर रखी हैं ।" (4:161)

ब्याज बरकत ख़त्म कर देता है

पवित्र क़ुरआन यह भी कहता है कि ब्याज खाने के परिणामस्वरूप बरकत समाप्त हो जाती है और धन चाहे देखने में बढ़ता हुआ महसूस हो रहा हो, किन्तु वास्तव में कम होने लगता है–

"और अल्लाह ब्याज को मिटाता है (अर्थात ब्याज धन से बरकत को ख़त्म करता है) और सदक़ा (दान-पुण्य) को बढ़ाता है । (अर्थात दान-पुण्य के द्वारा धन की बरकत को अधिक करता है), और अल्लाह किसी भी अकृतज्ञ अवज्ञाकारी को पसन्द नहीं करता ।" (2:276)

और जो धन तुम ब्याज पर देते हो कि (तुम्हारी पूंजी) लोगों के धन में मिलकर बढ़ता रहे, तो वह अल्लाह की दृष्टि में नहीं बढ़ेगा । किन्तु जो धन तुम ज़कात (दान-पुण्य) में देते हो (केवल) अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हुए, तो वही लोग (अपना धन अल्लाह के यहां) बढ़ाने वाले हैं ।
(क़ुरआन, 30:39)

आर्थिक आज़ादी के लिए मतदाता वृत्ति की ज़रूरत

ज़िन्दगी की दौड़ में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए आप सभी जी-तोड़ प्रयास कर रहे हैं । आपके मां-बाप ही नहीं बल्कि पूरा परिवार आप से न जाने कितनी आशा लगाए उस शुभ घड़ी का इंतिज़ार कर रहा है जब आप अपने इस अभियान में सफल होकर भारी-भरकम आय देने वाले किसी रोज़गार को प्राप्त करेंगे और घर को सारे दुख-दैन्य और अभावों से मुक्ति मिल सकेगी ।

सुखद जीवन का यह सपना स्वाभाविक ही है और अच्छे सपने देखना उचित भी, किन्तु उसकी सफलता के लिए केवल आपका जी-तोड़ श्रम ही काफ़ी नहीं है । आपके सपनों की सफलता या असफलता में सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था एक अति महत्वपूर्ण कड़ी है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती । जो लोग इसकी उपेक्षा करके आगे बढ़ना चाहते हैं, उनकी समझ पर केवल तरस ही खाया जा सकता है । जो सुखद सपना आपकी आंखों में है वही सपना, अन्य समस्त युवाओं द्वारा भी संजोया गया है, किन्तु समाज की स्थितियां क्या कह रही हैं ? क्या वे इस योग्य हैं कि वे सबके सपने पूरे कर सकें और सबके साथ न्याय कर सकें ? यदि आप समाज की स्थिति को गहराई से देखें तो आपको सहज ही समझ में आ जाएगा कि इस व्यवस्था में न्याय नाम की कोई चीज़ नहीं है । ''जिसकी लाठी, उसकी भैंस'' जैसा जंगल राज चल रहा है । हर मज़बूत व्यक्ति अपने से कमज़ोर व्यक्ति को जंगली जानवर की तरह खा जाने के लिए उतारू है । न्याय, नैतिकता, मानवता, धर्म और विश्वास की सभी मर्यादाएं ध्वस्त हो गयी हैं । आपको भी इस वहशी युद्ध में उतरना होगा । बल्कि यदि यह कहा जाए कि आप जाने-अनजाने इस वहशी युद्ध में उतरे हुए ही हैं । आपको भी स्वयं को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करके अपने से कमज़ोर के मुंह का कौर छीनना पड़ेगा ताकि आप अपने सपनों को साकार कर सकें । इसके लिए आपको यदि ओछे-हथकंडे भी अपनाने पड़ें, तो आप पीछे नहीं हट सकते और यदि आपने ऐसा किया तो फिर सपना टूट कर बिखर जाएगा ।

आप अपने सपने को बिखरने से बचा सकेंगे या नहीं, यह तो मैं नहीं बता सकता, किन्तु यह अवश्य बता सकता हूं कि अधिकांश का यह सपना पूरा नहीं हो सकता । क्योंकि वर्तमान व्यवस्था में इसकी दूर-दूर तक भी गंजाइश नहीं है । सारी व्यवस्था के सूत्र कुछ सीमित हाथों में है और पूरा समाज उन हाथों की कठपुतली बना हुआ है । जिस सर्वश्रेष्ठ योग्यता के बल पर आप भारी आय देने वाला रोज़गार प्राप्त करना चाहते हैं, यह भी उन्हीं हाथों का खेल मात्र है । आपकी श्रेष्ठ प्रतिभा का उपयोग समाज में न्याय, नैतिकता, सद्‌भाव, शांति या समृद्धि लाने के लिए नहीं बल्कि उन्हीं क्रूर हाथों को मज़बूत करने के लिए होगा जो पूरी मानवता के लिए अभिशाप बने हुए हैं । क्या आपने सोचा कि जो आपके भाई, बहन, साथी और सहपाठी सर्वश्रेष्ठता की इस दौड़ में पिछड़ जाएंगे, उनका क्या होगा ? क्या उनकी स्थिति क़त्लखाने के जानवरों जैसी ही नहीं हो जाएगी । यदि हां तो फिर इस क़त्लखाने को मज़बूत करने में आपकी भागीदारी क्यों ?

यह सब इसलिए कहा जा रहा है ताकि इस व्यवस्था के क्रूर यथार्थ को आपके सामने रखा जा सके । प्रतिभावान होने का यह अर्थ तो नहीं होना चाहिए कि आप न्याय का विचार करना ही छोड़ दें और घोर स्वार्थी बन कर अन्याय को और मज़बूत कर दें । प्रतिभावान होने का मतलब सामान्य या उनसे भी कमज़ोर लोगों को हक़ मारना नहीं हो सकता । प्रतिभावान होने की सार्थकता तो इसमें है कि समाज में विद्यमान सभी प्रकार के अन्याय को आप अपने कौशल और शक्ति से समाप्त कर दें । आज देश को आवश्यकता है ऐसे ही उत्साही युवाओं की जो केवल स्वयं के बारे में सोचने के बजाय पूरे समाज के बारे में सोच सकें । यही वह उम्र है जो इस कठिन चुनौती को स्वीकार कर सकती है । आप भी यह काम बख़ूबी कर सकते हैं । विश्व की समस्त सात्विक शक्तियां आपके साथ हैं । आवश्यकता है तो केवल आपके द्वारा लिए जाने वाले दृढ़ संकल्प की जो सबको दुख, दैन्य और दरिद्रता से मुक्त कर

सके ।

किन्तु अपनी सफलता के लिए केवल इस प्रकार का संकल्प ले लेना ही पर्याप्त नहीं होगा बल्कि अन्याय की जड़ को भी समझना होगा । यह केवल शक्ति से जीता जा सकने वाला युद्ध नहीं है बल्कि इसके लिए न्याय की स्पष्ट दृष्टि होना परम आवश्यक है । अत: आपको अपने लक्ष्य और उस तक पहुंचने के मार्ग को लेकर किसी प्रकार का भ्रम नहीं होना चाहिए । इस प्रकार का भ्रम समाज में मौजूद अन्याय व शोषण को और भी अधिक गहरा सकता है । अर्थात अन्याय किस प्रकार हो रहा है और उसे समाप्त करने का सरलतम उपाय क्या है, यह आपको ठीक प्रकार से समझना होगा ।

यहां मैं केवल इस अन्याय को समाप्त करने का सबसे सरल मार्ग बता रहा हूं । इस छोटे से लगने वाले उपाय द्वारा अत्यन्त शक्तिशाली दिखने वाला पूंजीवादी राक्षस पूरी तरह समाप्त हो जाएगा और पूरे समाज के अभाव, बेरोज़गारी, ग़रीबी, शोषण और अपमान के अतिरिक्त हत्या, लूट, चोरी और छल-कपट जैसे जघन्य अपराधों से भी मुक्ति मिल सकेगी । इसके लिए आपको शस्त्र उठाने या किसी क़ानून को तोड़ने की भी आवश्यकता नहीं है । पहली बात तो यह है कि आप अच्छी तरह समझ लें कि आप इस देश के मालिक हैं और इस देश की सारी सम्पदा में आपका समान अधिकार है ।

किन्तु क्या आप जानते हैं कि इस देश की सम्पत्ति का कुल मूल्य कितना है और आप कितनी सम्पत्ति के स्वामी है ? आपको तो केवल यह बताया गया है कि इस देश के नवजात शिशु पर कितना विदेशी ऋण है किन्तु पैदा होते ही यह नहीं बताया जाता कि वह राष्ट्र की सामूहिक सम्पदा में कितनी सम्पत्ति का स्वामी हैं । एक सोचे समझे षड्यंत्र के द्वारा आपको इस जानकारी से वंचित रखा जाता है । भूख और अभाव के कारण सड़क पर दम तोड़ते या जानवरों जैसा जीवन जीने वाले नागरिकों के लिए इस मिल्कियत की क्या कोई सार्थकता हो सकती है ? किसी व्यक्ति के ताक़तवर होने का यह अर्थ तो नहीं कि वह कमज़ोर के इस मूलभूत संपत्ति अधिकार को ही छीन ले । क्योंकि इसका छिनना तो स्वतंत्रता और जीने के अधिकार का छिन जाना ही है इसलिए ऐसे सभी नियम क़ानून, मान्यताएं और परम्पराएं ग़लत हैं जो नागरिक को इस मूलभूत अधिकार से वंचित करते हैं ? यदि सबका अधिकार समान है तो एक व्यक्ति औसत सीमा तक संपत्ति का ही स्वामी माना जाना चाहिए क्योंकि न्याय पर आधारित किसी व्यवस्था में इससे अधिक संपत्ति का अधिकार एक व्यक्ति को दे पाना संभव ही नहीं है ।

अत: किसी को औसत से अधिक संपत्ति रखने का अधिकार देना कमज़ोर व्यक्तियों के संपत्ति अधिकार को ख़त्म करना ही है । अर्थात औसत से अधिक संपत्ति का व्यक्ति को केवल प्रबंधक माना जा सकता है, स्वामी नहीं । अत: औसत से अधिक संपत्ति से मिलने वाले अतिरिक्त लाभ का स्वामी भी उसे नहीं माना जा सकता ।

लेकिन, वर्तमान व्यवस्था यही अन्याय कर रही है । इसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार धन संग्रह की स्वतंत्रता है । इसी स्वतंत्रता के नाम पर शक्तिशाली व्यक्ति कमज़ोर व्यक्ति के हिस्से के संसाधनों पर भी अपना हक़ जमा लेता है और उसे स्वतंत्र रूप से जीने के अधिकार से वंचित कर देता है । आप विचार करें कि यह स्वतंत्रता है या उद्दंडता ? क्या यह परोक्ष रूप से "जिसकी लाठी, उसकी भैंस" अर्थात जंगल राज ही नहीं है ? किन्तु हम न्याय के नाम पर इसी जंगलराज को मान्यता दे रहे हैं । भौतिक विज्ञान की उन्नति ने सारे यंत्रों-उपकरणों, कृत्रिम ऊर्जा तथा मुद्रा प्रणाली के विकास के द्वारा शक्तिशाली लोगों की शक्ति को और भी अधिक बढ़ा दिया है । अत: कमज़ोर व्यक्ति तुलनात्मक रूप से अधिक कमज़ोर हो कर अपने जीने के अधिकार से वंचित हो रहा है । समाज में विद्यमान भारी आर्थिक विषमता, ग़रीबी और बेरोज़गारी का मूलभूत कारण यही है ।

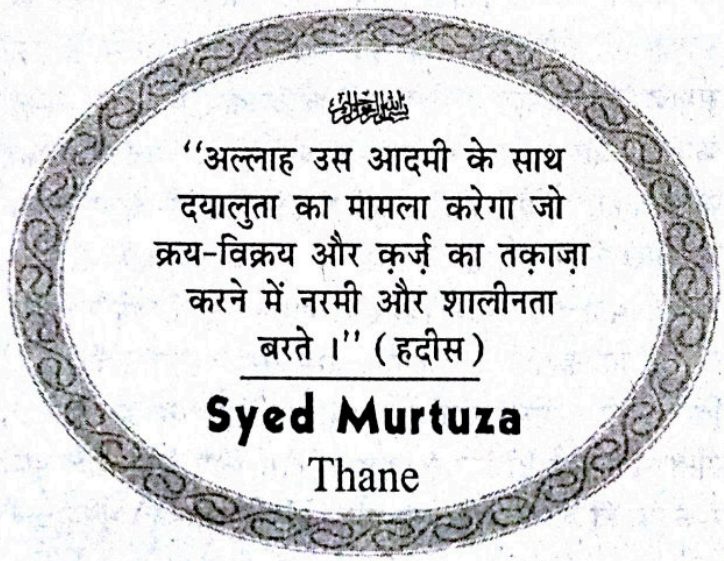

आपको अन्याय की इस जड़ को समाप्त करना होगा । इसके लिए आपको निजी संपत्ति की गोपनीयता को समाप्त करने, औसत से अधिक संपत्ति पर ब्याज़ की दर से कर लगाने तथा प्राप्त राशि का वितरण सभी मतदाताओं में समान रूप से ''मतदाता भत्ता'' के रूप में वितरीत करने की मांग उठानी होगी । अन्य सभी करों को ख़त्म कने की मांग भी उठानी होगी क्योंकि सभी कर आम नागरिक को अभावग्रस्त करने वाले, उसका भयादोहन करने वाले और समाज में अनैतिकता व भ्रष्टाचार फैलाने वाले हैं । एक संपत्ति कर से ही इतनी भारी आय हो सकेगी कि इसमें से सरकार के सभी व्यय काट कर शेष राशि को मतदाता भत्ता के रूप में सभी मतदाताओं के बीच वितरित करने पर प्रत्येक मतदाता को ''पांच हज़ार रुपये प्रति माह'' का भुगतान निरंतर सरलता से किया जा सकता है ।

अतः अब रोज़गार के साथ-साथ मतदाता-वृत्ति (वोटर पेंशन) की मांग उठनी चाहिए । मतदाता-वृत्ति न तो एहसान है और न ही भीख । बल्कि यह आपका जन्मसिद्ध अधिकार है । यह राष्ट्र की सामूहिक संपत्ति से मिलने वाला अतिरिक्त लाभ है । इसका किसी व्यक्ति के श्रम, त्याग या पुरुषार्थ से कुछ भी संबंध नहीं है । यह मशीन से होने वाली आय है, जिससे पूरे समाज को समान लाभ मिलना चाहिए । यह विकास से मिलने वाला अतिरिक्त लाभ है जो किसी एक व्यक्ति की बपौती नहीं हो सकती । इस लाभ का थोड़े से लोगों में ही वितरण होना अन्याय है, शोषण है और सम्पूर्ण मनुष्यता के प्रति अपराध भी ।

आप इस बात को कान खोलकर सुने लें कि अब सब लोगों को रोज़गार प्रदान करना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव है । ऐसा करना बुद्धिमानी भी नहीं है क्योंकि मशीन के रूप में हमें एक अत्यन्त शक्तिशाली नौकर मिल चुका है जो मनुष्य मात्र को कठिन श्रम तथा अभाव के कष्ट से मुक्ति दिला सकता है । जो लोग रोज़गार देने की बात करते हैं वे सभी अर्थशास्त्री हों या राजनेता, न्यायविद् हों या समाज सेवक, वे या तो धूर्त हैं या मूर्ख । आप उनके बहकावे में न आएं । अतः अब मतदाता वृत्ति (वोटर पेंशन) के लिए एक सशक्त आंदोलन किया जाना चाहिए । इसके सफल होने पर एक भी व्यक्ति बेरोज़गार, ग़रीब, शोषित, बेबस या भिखारी नहीं होगा और सभी लोग स्वतंत्रता, संपन्नता और स्वाभिमान का जीवन जी सकेंगे । इससे संपन्न लोगों को भी समाज से सुरक्षा, सम्मान और आत्मीयता प्राप्त होगी ।

अतः ईसा की दया, मुहम्मद साहब की ब्याज़ मुक्त अर्थव्यवस्था, गुरुनानक की हक़ की रोटी, महात्मा गांधी का ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त, मार्क्स का साम्यवाद, अम्बेडकर का आर्थिक न्याय, लोहिया का समाजवाद, दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद, विनोबा का सर्वोदय, जयप्रकाश नारायण की सम्पूर्ण क्रांति, उपनिषदों का ईश तथा सनातन धर्म का शुभ-लाभ मतदाता भत्ता ही है । अतः सारी ताक़त इसी के लिए लगायी जानी चाहिए । संत कबीर कहते हैं–

एक साधै सब सधै, सब साधै सब जाय ।
जो गहि सेवै मूल को, फूले फले अघाय ।।

इसके लिए समाज के सभी वर्गों से निम्न मुद्दों का उठाया जाना आवश्यक है । इससे हर मतदाता को जगाना होगा ताकि वह मतदाता भत्ता के लिए वोट दे । चुनाव में दूसरा कोई मुद्दा नहीं उठना चाहिए ।

रोशन लाल अग्रवाल
नेमीचन्द गली नं॰ 4, के॰एन॰ काम्पलेक्स,
रायपुर (छ॰ग॰)-492001

दुनिया भर में फूल

सच का एक समन्दर देख
आकर मन के अन्दर देख
दुनिया भर में फूल खिलें
ऐसे प्यारे मंज़र देख
तू कि इतना जोश न रख
होश भी अपने अन्दर देख
शीश महल तो टूटेंगे
राजाओं के खंडहर देख
दुश्मन-दुश्मन शोर न कर
पहले अपने अन्दर देख
आग लगाने वाले सुन
अपनी आग बुझाकर देख ।

अहद 'प्रकाश'
भोपाल (म॰प्र॰)

भिखारी ठाकुर-भोजपुरी साहित्य का अप्रतिम राजहंस

■ विद्या प्रकाश

भिखारी ठाकुर की गणना भोजपुरी साहित्य के उन मौलिक तथा अग्र पांक्तेय रचनाधर्मी साहित्यकारों में की जाती है जिन्होंने अपनी सशक्त लेखनी से भोजपुरी का न केवल भण्डार भरण किया, बल्कि देश-विदेश में व्यापक लोक प्रियता भी प्राप्त की । अपनी व्यापक और सूक्ष्म रचनाधर्मिता के कारण भारतीय लोक साहित्यिक जगत में उनकी लोकप्रियता का अनुमान इसी से किया जा सकता है कि अपनी 'अबहीं नाम भईल बाथोरा' उक्ति को चरितार्थ करते हुए उनकी कृतियां भारत भूमि के अलावा सात समुन्दर पार के मारीशस, फिजी और सूरीनाम जैसे देशों में भी समान रूप से लोकप्रिय हैं तथा वे चाव से पढ़ी जाती हैं । इस राजहंस की कृति पताका आज देश, काल तथा भाषा की बंदिशों और लघु सीमाओं को लांघते हुए चतुर्दिक फहरा रही है ।

भिखारी ठाकुर का जन्म 18 दिसम्बर, सन 1887 को बिहार के कुतुबपुर दियारा, छपरा (सारण) में हुआ था । उनके पिता का नाम दल सिंगार ठाकुर तथा माता का नाम मनतुरना देवी था । उनके गुरु का नाम भगवान साह था । वे जाति के नापित (नाई) थे तथा पुश्तैनी व्यवसाय और लगन के मौसम में यजमानों के वैवाहिक निमंत्रण पत्र बांटने के सिलसिले मे पुर पौस्त में बराबर आया जाता करते थे जिससे उन्हें जीवन जगत का व्यापक अनुभव कण प्राप्त हुआ । उनका देहावसान 1971 में हुआ ।

उनकी प्रसिद्ध कृतियों में बिदेसिया, गबरधिचोर, बेटी बेचवा, पिया निसही, गंगा नहान, राधेश्याम बहार, सीताराम बहार, नाई बहार, भाई विरोध, रामनाम कीर्तनमाला, बुढ़शाला के बयान आदि उल्लेखनीय हैं । देश के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद की प्रेरणा से भोजपुरी भाषा में फ़िल्म निर्माण के सिलसिले की शुरुआत हुई तथा भोजपुरी भाषा में बनने वाली 'गंगा मइया तोहे चियरी चढ़इबो' पहली फ़िल्म थी जिसे राजेन्द्र प्रसाद ने भी देखा था ।

60 के पश्चात् भोजपुरी फ़िल्म के निर्माण के प्रारम्भिक दौर में बनने वाली फ़िल्मों में भिखारी की 'बिदेसिया' भी थी जिसमें भोजपुरी फिल्मों के तत्कालीन सुपर स्टार सुमीत कुमार, नाज, पद्मा खन्ना, जीवन तथा जौनपुर के हरि शुक्ला ने अभिनय किया था ।

बापू की समस्त समाजोद्धार विषयक विचार धारा लोकनाट्यकार तथा लोक साहित्यकार भिखारी ठाकुर की तमाम कालजयी नाटकों के कथानक और कथा सामग्री हैं चाहे वह छूआछूत (अस्पृश्यता) हो, अनमेल विवाह हो अथवा वयोवृद्ध अनुभवसमृद्ध बुजुर्गों की सेवा हो । भिखारी ठाकुर की बेटी बेचवा, भाई विरोध, बिदेसिया तथा गबरधियोर जैसी अपार लोकप्रिय नौटंकियों का मूल कथानक यही है । बिदेसिया में एक सवर्ण युवक तथा दलित युवती के मध्य प्रेम के माध्यम से खोखली जाति व्यवस्था पर चोट की गयी है ।

भिखारी ठाकुर को बंगाल के गीतांजलिकार रवीन्द्रनाथ टैगोर की भांति भोजपुरी प्रदेश का हृदयहार तथा लोक नाट्य का कण्ठहार माना जाता है । उनकी जीवन्त सृजनधर्मिता के चलते उन्हें भोजपुरी साहित्य का विलियम शेक्सपियर माना जाता है । शेक्सपियर की भांति वे रंगमंच के परदा और पवनिका खींचने वाले सुत्रधार से लेकर लेखक और निदेशक तथा सर्वेसर्वा यानी पीर बावर्ची भिश्ती खर थे । वे अपनी नौटंकियों में सूत्रधार से लेकर लबार, प्रवाचक, उपदेशक, अभिनेता, गायक, नृत्यकार, तथा संवाद लेखक तक की गम्भीर उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिकाओं का प्रभावोत्पादक साफल्यपूर्वक निर्वहन करते थे ।

स्कूली शिक्षा से वंचित हो कर भी उन्हें देश दुनिया का असीम व्यावहारिक अनुभव था । हालांकि भिखारी कालीन समस्याएं आज की भिन्न पिरिस्थितियों में परिवर्तन स्वरूपों में विद्यमान हैं किन्तु भिखारी के प्रशंसक उनका अनुकरण कर कुछ नवीन रचने के बजाय उन्हें दोहराने तथा पुनरावृत्ति में ही व्यस्त और मस्त हैं । उनके वंशजों में उनके पौत्र राजेन्द्र राय हैं जो कुतुबपुर दियारे में रह रहे हैं । उनके एक प्रपौत्र राकेश कुमार ठाकुर वहीं के प्राथमिक विद्यालय में नियोजित अध्यापक हैं तो दूसरे प्रपौत्र सुशील ठाकुर बेरोज़गार हैं ।

मोदी को समर्थन क्यों ?

■ सी॰ के॰ रहमानी

आजकल कुछ लेखक राष्ट्रीय और क्षेत्रीय अख़बारों में इस बात की पैरवी करते नज़र आ रहे हैं कि अल्पसंख्यक ख़ासकर मुसलमानों को मोदी का साथ देकर उन्हें प्रधानमंत्री बनाने में मदद करनी चाहिए । इसके साथ ही ये लेखक इस बात को बताना नहीं भूलते या यह याद दिलाते रहते हैं कि कांग्रेस ने मुसलमानों के लिए आज तक कुछ नहीं किया । इन लेखकों का यह भी कहना है कि मुसलमानों को अपनी सोच बदलनी चाहिए । ये सभी बातें कुछ इस अंदाज़ में कही जाती हैं कि मुसलमानों के साथ-साथ बहुसंख्यक समुदाय को पढ़ते समय लगे कि मोदी एंड कंपनी और भाजपा उनकी कितनी हमदर्द/शुभेच्छु है ।

यह बात मानने में कोई गुरेज नहीं कि कांग्रेस ने मुसलमानों के लिए कुछ नहीं किया । यह भी सही है कि उसने इस तरह की भूमिका बनायी ताकि मुसलमान डरते रहें और कांग्रेस से दूर न जाने पाएं । इस बात का भी पूरा प्रयास रहा कि उन्हें अनपढ़ रखा जाय ताकि वह अपनी अलग पहचान क़ायम रखने के लिए जिद्दोजहद करते रहें । इस मामले में कांग्रेस इसलिए भी ज़िम्मेदार कही जाएगी क्योंकि वह सत्ता में ज़्यादा रही है ।

लेकिन इसके इतर दूसरे सवाल भी हैं जिनका जवाब देते हुए लोग घबराते हैं, चकराते हैं या झगड़ने लगते हैं । सवाल यह है कि जिन लोगों ने आग लगायी है उनसे बुझाने की उम्मीद कैसे की जाए ? डरने और डराने के लिए ज़िम्मेदार कौन है ? जब भेड़िया ही नहीं होगा तो भेड़ को डराएगा कौन ? क्या इस बात से इन्कार किया जा सकता है कि संघ, भाजपा, शिवसेना, विश्व हिंदू परिषद जैसे संगठनों की बुनियाद ही मुस्लिम विरोध पर टिकी है । अगर इस देश में मुसलमान न हों तो कथित हिंदू हितैषी पार्टियों का क्या वजूद रह जाएगा । फिर वह हिंदू हित की बात किससे करेंगे और किसके ख़िलाफ़ लड़ेंगे । जहां मुस्लिम हमदर्दी तक को तुष्टीकरण मान लिया जाता हो या फिर नेताओं को यह डर रहता हो कि अगर हम इन्साफ़ की बात कहेंगे या अल्पसंख्यकों से हमदर्दी रखेंगे तो हिंदू नाराज़ हो जाएंगे तो उन लोगों को समर्थन क्यों कर दिया जाए ।

विषवमन, वैमनस्यता, के लिए जो लोग पूरे देश में रथ यात्रा निकालते हैं और परोक्ष और अपरोक्ष रूप से यह संदेश देते हैं कि मुसलमान हमारे दुश्मन हैं तो वैमस्यता रखने वाले लोग क्यों अल्पसंख्यकों से मित्रभाव रखेंगे ? आप बाबरी मस्जिद ध्वस्त करते हैं किस लिए ? क्या बाबर या उसका सिपहसालार ज़िंदा है जिसे अपमानित करने या उसे यहां से खदेड़ने के लिए यह 'राष्ट्रीय शर्म' का काम किया ? ज़ाहिर आप यहां के मुसलमान को अपमानित और आहत करना चाहते हैं और आम लोगों में यह संदेश देना चाहते हैं कि मुसलमानों से हमारा कोई रिश्ता नहीं है । मानों वह कोई दूसरी दुनिया के लोग हों । उन्होंने यह संदेश भी दिया कि हम और अल्पसंख्यक दो अलग धाराएं हैं जिन्हें हमेशा अलग और लड़ते रहना चाहिए । तभी तो बाबरी विध्वंस की बरसी पर ये संगठन विजय दिवस मनाते हैं । विजय दिवस किसे अपमानित करने के लिए मनाते हैं ? जिन अंग्रेज़ों से देश के सभी समुदाय त्रस्त थे, जिनके ज़ुल्मों से कोई अछूता नहीं है उनके जाने पर हिंदू संगठन विजय दिवस क्यों नहीं मनाते, क्योंकि उनके विजय दिवस मनाने से उन्हें सत्ता नहीं अमेरिका से फटकार मिलेगी । अगर सरकार रस्मी तौर पर स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस न मनाए तो शायद वह दिन भी सूना रह जाए ।

जो लोग मोदी की तरफ़दारी करते हैं क्या उन मोदी ने अपनी भूल स्वीकार की या भीष्म पितामह ने कोई सद्भाव यात्रा निकाली ? नहीं ! रथयात्रा का संदेश तो आपस में लड़ाना ही था । सद्भावना के लिए रथ यात्रा तो कभी भी निकाली जा सकती है । जो मोदी प्रधानमंत्री पद के दावेदार हैं उन्होंने 'कुत्ते का पिल्ला' जैसे शब्दों का इस्तेमाल और किया । यहां हम साफ़ करते चलें कि कांग्रेस से भी हमें कोई सहानुभूति नहीं है कारण हम ऊपर बता चुके हैं । इसके बावजूद यदि मुसलमान कांग्रेस को समर्थन करते हैं तो यह उनकी मजबूरी है क्योंकि उनके पास प्यार से कटने के

अलावा कोई राजनीतिक विकल्प नहीं है ।

जब यू०पी० में सपा-बसपा विकल्प के रूप में दिखायी तो अल्पसंख्यकों ने उनका साथ दिया । अब दिल्ली में विकल्प के रूप में आम आदमी पार्टी आयी है तो उसे समर्थन मिला । जो लोग मुसलमानों से मोदी को समर्थन देने की बात करते हैं शायद उन्होंने गुजरात दंगों की वीडियो फ़िल्म नहीं देखी । अगर देखी होती तो उनका भी कलेजा फट जाता और उन्हें समर्थन देने की सलाह नहीं देते । एक सवाल यह भी है कि मोदी या भाजपा ने अल्पसंख्यकों के लिए ऐसा क्या किया है जो उन पर भरोसा किया जा सके । दंगों को 11 साल हो गये लेकिन आज तक मोदी ने पछतावे की बात नहीं कही । उन्होंने कभी अपनी भूल स्वीकार नहीं की । मोदी आज भी एक वर्ग विशेष का नेता कहलवाना ज़्यादा पसंद करते हैं, जबकि किसी भी राज्य या राष्ट्राध्यक्ष को सभी समुदाय का नेता होना चाहिए ।

कुछ लोग यह लिखते हैं कि दंगों के लिए मोदी दोषी नहीं हैं । कुछ लिखते हैं कि उनको किसी अदालत ने दोषी नहीं ठहराया है । जब देश या राज्य में अराजकता फैलती है तो उसे रोकने की ज़िम्मेदारी किसकी है ? जब क्षेत्र में कोई अप्रिय वारदात होती है तो थानेदार, एस०पी०, एस०एस०पी० को दोषी क्यों माना जाता है ? क्यों उन्हें दंडित किया जाता है । यह कहकर पल्ला क्यों नहीं झाड़ लिया जाता कि अमुक वारदात उन्होंने नहीं की । इसलिए की वहां की क़ानून व्यवस्था बनाए रखने की ज़िम्मेदारी उनकी होती है । राज्य या राष्ट्र में किसी भी घटना के लिए राज्य का मुखिया ही ज़िम्मेदार होता है ।

दरअस्ल जब किसी शासक को यह लगने लगता है कि किसी समुदाय विशेष की हत्याएं कराने से उसकी कुर्सी सुरक्षित है या उसे ऐसा करने से सत्ता मिल जाएगी तो यह बिल्कुल वैसा ही जैसे किसी शेर के मुंह ख़ून लगना । शेर जल्दी ख़ून का स्वाद छोड़ना नहीं चाहेगा । इसी तरह वह शासक भी उस आसान रास्ते को छोड़ना नहीं चाहेगा, ख़ासकर तब उसकी बुनियाद ही सांप्रदायिकता पर टिकी हो ।

राजनीति में एक उदाहरण हर नेता देने को तैयार रहता है । कहता है कि फ़लां सरकार के शासन में भी तो दंगे हुए । मतलब यह कि जैसा उन्होंने किया वैसा ही करने का अधिकार उन्हें भी मिल गया ? मतलब आप हत्यारे और मुंसिफ़ ख़ुद ही बन गए । जितने भी दंगे हुए वे मानवता पर कलंक हैं, क्योंकि उसमें निर्दोष लोगों की जान जाती है । मलियाना कांड, भिवंडे दंगे, अलीगढ़, मेरठ, भागलपुर, गुजरात या फिर 1984 में सिख विरोधी दंगे आदि । अमानवीय कलंक का हिस्सा हैं । दंगों में भले कुछ न किया हो लेकिन कम से कम 84 के दंगे में कांग्रेस ने इतना तो किया कि उसने पीड़ितों को भरपूर मुआवज़ा दिया, उन्हें रहने को मकान दिए और कांग्रेस नेता एच०के०एल० भगत पर दंगों को शह देने का आरोप था । उन्हें साइड लाइन ही नहीं कर दिया गया, बल्कि उनका राजनीतिक कैरियर भी ख़त्म कर दिया । बाबरी मस्जिद न बचाने वाले पी०वी० नरसिंह राव के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ । उनका भी राजनीतिक कैरियर ख़त्म हो गया, लेकिन भाजपा नेताओं को दंगों का मलाल तक नहीं ।

यहां तक कि गुजरात के दंगा पीड़ित अल्पसंख्यकों को मुआवज़ा भी नहीं दिया गया, जिनका सब कुछ बर्बाद हो गया था । शिविरों में रह रहे लोगों को सरकारी सहायता तक नहीं । बताया जाता है कि कुछ लोगों को सहायता राशि के नाम पर डेढ़ सौ रुपये का चेक दिया गया । यह उनका मज़ाक़ उड़ाना या ज़ख़्मों पर नमक छिड़कना नहीं तो और क्या है ? वह तो भला हो कुछ स्वयंसेवी संस्थाओं का, जिन्होंने उन्हें सहारा दिया और क़ानूनी सहायता भी दिलायी । इसी तरह मुज़फ़्फ़रनगर के दंगाइयों को क्या सज़ा मिलेगा, उल्टे वे लोग हीरो बन गए जिनके कारण लोग दंगे की भेंट चढ़ गये । जिनके कारण लोगों को अपना गांव छोड़ना पड़ा, जिनके कारण बच्चे अनाथ हो गये । जो लोग शिविरों में रह रहे हैं उनकी मदद करने में इसलिए लोग संकोच कर रहे हैं कि कहीं उनसे दूसरे समुदाय के लोग नाराज़ न हो जाएं । यहां सद्भावना यात्रा किसी नेता ने निकाली ?

एक बात यह भी कही जाती है कि 'बीती ताहि बिसार दे आगे की सुध लेय', लेकिन इसके लिए रास्ता तो बने । यह भी सामाजिक मान्यता है कि ग़लती करने के बाद माफ़ी मांग ली जाए और अपने किये का प्रायश्चित कर लिया तो उसे माफ़ कर दिया जाता है और माफ़ी मांगने वाला बड़ा हो जाता है, लेकिन मोदी माफ़ी मांगकर या पापों का प्रायश्चित कर बड़े बनने को नहीं प्रधानमंत्री बनने को तैयार हैं ।

बिच्छू-कोबरा गैंग...

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

रेल यात्रियों सावधान ! यात्रा में आपको कभी भी बिच्छू-कोबरा गैंग मिल सकता है । इसका कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि आप किस ट्रेन में और किस दर्जे में यात्रा कर रहे हैं । अच्छी कहलाने वाली ट्रेनें भी इनकी हरकतों से वंचित नहीं हैं । सुरक्षाकर्मी भी इनसे मिले होते हैं, इसलिए जहां इनकी मौजूदगी दिखी, ये रफ़ूचक्कर हो जाते हैं । टी॰टी॰ और अन्य रेलकर्मियों का यही हाल है । कोई इनसे पंगा नहीं लेना चाहता ! रेल यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा की किसी को परवाह नहीं है ।

अभी पिछले दिनों 31 मार्च को मैं इस बिच्छू-कोबरा गैंग के आतंक का प्रत्यक्षदर्शी और भुक्तभोगी बना । मैं उस रात पूर्णतः एसी ट्रेन दुरंतो एक्सप्रेस (12271) से नयी दिल्ली आने के लिए लखनऊ में बी इ कोच 1 में सपत्नीक बैठा । यह कोच पूरे प्लेटफार्म पर चक्कर लगाने के बाद बड़ी मुश्किल से मिला, क्योंकि बी इ 1 इंजन के पीछे लगा था और बी इ 2 ट्रेन का सबसे पिछला कोच था ।

बर्थों का रिज़र्वेशन (पी॰एन॰आर॰ नं॰-2619347693) पहले से करा रखा था । बर्थ नम्बर 63 और 64 पर बैठते ही पन्द्रह-बीस की तादाद में बिच्छू-कोबरा गैंग के सदस्य घुसे । जिनमें से कुछ का ही बर्थ रिजर्व था । लग रहा था कि कइयों के पास टिकट नहीं हैं । ये सभी कोच के एक गेट के पास की बर्थों पर, जहां हम सबकी बर्थ थी, हुड़दंग मचाते हुए आकर बैठ गये । रात के लगभग सवा ग्यारह बज रहे थे । भारी शोरगुल और हंगामे के बीच सिगरेट की कसों ने पूरा वातावरण प्रदूषित कर दिया । तेज़ दुर्गन्ध से मेरी पत्नी का सर चकराने और दुखने लगा । ट्रेन चल पड़ी । इनके हंगामे को देखते हुए ऐसा लग रहा था कि ये सभी पूरी रात यात्रियों को परेशान करेंगे ।

मैंने विषम हालात को देखते हुए कुछ बोलना उचित न समझा । लगभग बारह बज चुके थे । अब गैंग वालों की शराब-कबाब की बारी आयी । सिगरेट का दौर तो सुबह दिल्ली पहुंचने तक चलता रहा । शराब की पांच-सात बोतलें खुलीं । खाने का ढेर सारी चीज़ें थीं उनके पास, जिन्हें खाकर वे शराब गटकते रहे । कोच के आधे हिस्से को मयखाना बना डाला । इतनी बदबू कि बैठना बहुत मुश्किल हो रहा था, लेकिन मुझ समेत किसी यात्री में यह हिम्मत नहीं थी कि कुछ विरोध-शब्द बोल सके । बोलने का मतलब एकदम साफ़ था– पिट जाना ।

जब शराब-कबाब का दौर चल रहा था, तभी एक टी॰टी॰ महोदय कोच के उसी ओर गेट खोलकर घुसे, जिध र हम लोग थे और हुड़दंग चल रहा था । टी॰टी॰ ने टिकट मांगा, तो एक सज्जन ने उसे शराब की बोतल थमा दी और दूसरे ने कहा– नहीं जानता हमारे बिच्छू-कोबरा गैंग को ? इतना सुनना था कि बोतल रखकर टी॰टी॰ महोदय भाग खड़े हुए । फिर कोई टी॰टी॰ नहीं आया । सुरक्षाकर्मी पहले से ही नदारद थे । पता चला किसी ए॰सी॰ कोच में सुरक्षाकर्मी आराम फ़रमा रहे हैं । पूरी रात इनका तांडव जारी रहा । देर रात एकभद्र महिला का सब्र जवाब दे गया । उन्होंने यह कहकर विरोध जताया कि हंगामा बंद करो । सुबह ड्यूटी पर जाना है, इसलिए सोना ज़रूरी है ।

मैंने भी महिला का समर्थन किया, लेकिन विरोध करने का अच्छा नतीजा नहीं निकला । पूरी रात कोच 'जीवंत नरक' में ही तब्दील रहा । गैंग के गुंडे अपशब्दों की बौछार करने लगे । हालात भांपकर महिला ने चुप रहने में ही अपनी भलाई समझी । गुंडा तत्व किस तरह गुंडागर्दी करके लोकतंत्र को हड़प लेते हैं और विधि-विधान और क़ानून की मौजूदगी में जनता की परेशानियां किस हद तक बढ़ा देते हैं, इसकी एक नहीं अनेक घटनाएं घटती रहती हैं । उक्त घटना के सिलसिले में रेल-प्रशासन को चाहिए कि इसे गंभीरता से लेते हुए कड़ी कार्रवाई करे और असामाजिक तत्वों की हरकतों से यात्रियों को सुरक्षित रखे ।

मुनअम पब्लिक स्कूल

(सी०बी०एस०ई०, दिल्ली से सम्बद्धता प्राप्त, 10+2, ईंग्लिश मिडियम विद्यालय)

महाराजगंज, पो० दादपुर, जिला हजारीबाग, झारखण्ड।

नामांकण सुचना

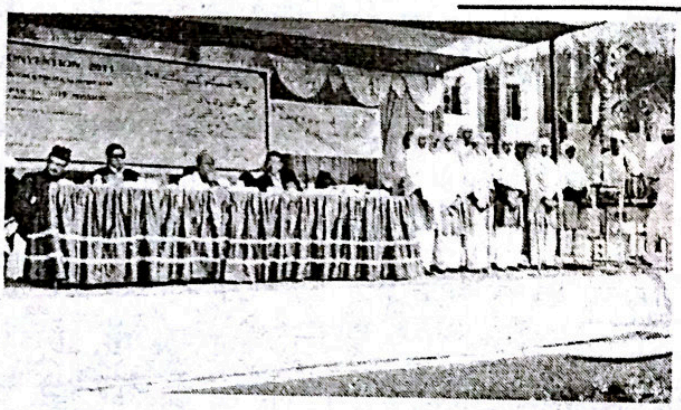

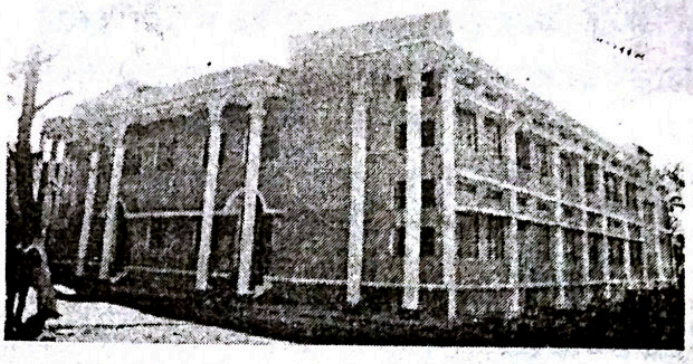

हजारीबाग के प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपुर पहाडी क्षेत्र में स्थापित, विशाल कैम्पस में फैला एक अति-आधूनिक शैक्षणिक संस्था जहां छात्र-छात्राओं के लिए माडर्न स्कूल की तमाम सुविधाएं उपलब्ध हैं।

सफलता का सत्रहवां साल - मुस्लिम लडकीयों के लिए नायाब तोहफा

लडकीयों के लिए 100 बेड का शानदार हॉस्टल

सत्र 2013-2014 के लिए छात्रावास में रह कर शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्र-छात्राएं 150/- रू० अदा कर के फार्म एंव प्रास्पेक्टस स्कूल काउंटर से प्राप्त करें या 175/- रू० का ड्राफ्ट भेज कर डाक से भी प्राप्त किया जा सकता हैं। विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें -

मो० 09431530878, Website : munammission.org

E-mail-munam_school2000edu@yahoo.com

एस०एम० नईम
डायरेक्टर
एम०ए०, बी०एड

वकील अहमद
प्रिन्सिपल
बी०एस०सी०, बी०एड

महिला उत्पीड़न–समस्या क्यों ?

■ डॉ॰ एम॰ अजमल

एक बार फिर मीडिया में महिला अधिकार, उसकी अस्मिता और स्वतंत्रता चर्चा में है । आश्चर्यजनक यह बात है कि इन मूल विषयों पर चर्चा के लिए हमें किसी बड़ी सोसायटी में होने वाले जुर्म और मुजरिम का इन्तिज़ार रहता है । तरुण तेजपाल उसी संस्कृति में पले बढ़े हैं जो आज हर भारतवासी की आकांक्षा और तमन्ना है । उनकी सहायक शोभा (चौधरी) भी उसी वर्ग से आती है । कथित पीड़िता भी उसी वर्ग से होगी तभी वह तरुण के साथ-साथ रहती थी । आज की सभ्यता की सबसे बड़ी विडम्बना व विरोधाभास यह है कि यह बोतल से 'जिन्न' को निकाल तो देता है मगर उसे दोबारा क़ैद करना नहीं सिखाती । इसी विरोधाभास के कारण आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में फ़साद अव्यवस्था फैली हुई है । नारी मुक्ति, स्वछन्दता, महिला सशक्तिकरण अच्छे उद्देश्य थे परन्तु उनको जिस प्रकार समाज में लागू किया जाने की कोशिश की गयी है ''बिटिया'' हो ''निर्भया'' हो या 'तहलका' उसी के विकृत आयाम हैं । मीडिया, स्वार्थी तत्व, भारतीय संस्कृति के तथाकथित ठेकेदार, राजनीति पार्टियां सब अपने-अपने स्वार्थों के तहत पीड़ित को सहानुभूति देते या नहीं देते हैं ।

तरुण तेजपाल के कथित दुर्व्यवहार से पीड़ित वर्ग को गुजरात सरकार के ''साहब'' द्वारा प्रताड़ित की गयी महिला पर मौन धारण किये हुए हैं । वह मुनगर में यौन शोषण से पीड़ित महिलाओं के उत्पीड़कों को उनके समर्थकों को जनसभाओं में गौरवांवित करते हैं । इसी मीडिया ने नहीं बताया कि तहलका पीड़िता से कहीं अधिक अत्याचार गुजरात दंगों में इन्हीं ''साहब'' के दौर में हुआ जहां सैंकड़ों की संख्या में महिलाओं से जघन्य अपराध करके बलात्कार उनके परिजनों के सामने करके उसकी सी॰डी॰ बनाकर पूरे संसार में अपना शौर्य दर्शाने के लिए प्रसारित की गयी । अब यही लोग छेड़-छाड़ की कुकृत्य पर दुनिया आसमान एक किये हुए हैं । ज़ाहिर है कि इन्हें पीड़िता से ज़्यादा सरोकार गुजरात में हुए ''महिला जासूसी कांड'' से फोकस हटाना भर है ।

मुख्य मुद्दा यह है कि वर्तमान भारतीय समाज एक परिवर्तन की स्थिति में है जहां वह हज़ारों साल पुराने संस्कारों तथा आधुनिक प्राय: विकृत, पाश्चात्य सांस्कृतिक मूल्यों के बीच सामंजस्य बैठाने की नाकाम कोशिश कर रही है । जबकि हाल यह है कि यह संस्कृति जहां उपजी एवं पली बढ़ी है वहीं इसके सारे सामाजिक ताने-बाने एवं परिवार की धारणा को छिन्न-भिन्न कर दिया है । परिवार की स्थिति यह है कि पूरे पश्चिम में विवाह पूर्व एवं विवाह से बाहर शारीरिक संबंध एक साधारण बात है । 13-14 वर्ष की अवस्था तक लड़का-लड़की अधिकतर सब कुछ कर चुके होते हैं जो विवाह के बाद ही होता था । और अब पश्चिम की शैतानी संस्कृति में लिव इन रिलेशनशिप, समलैंगिक विवाह, डेटिंग इत्यादि ईजादों को मान्यता दे दी है । नतीजा सामने है रिश्ते, ख़ानदान बिखर गये, बग़ैर मां-बाप के बच्चों की तादाद क़ानूनी बच्चों के बराबर हो गयी, विवाह से अधिक तलाक़ हो रहे हैं । पति को भरोसा नहीं कि पत्नी उसके अलावा किस-किस के साथ जायका

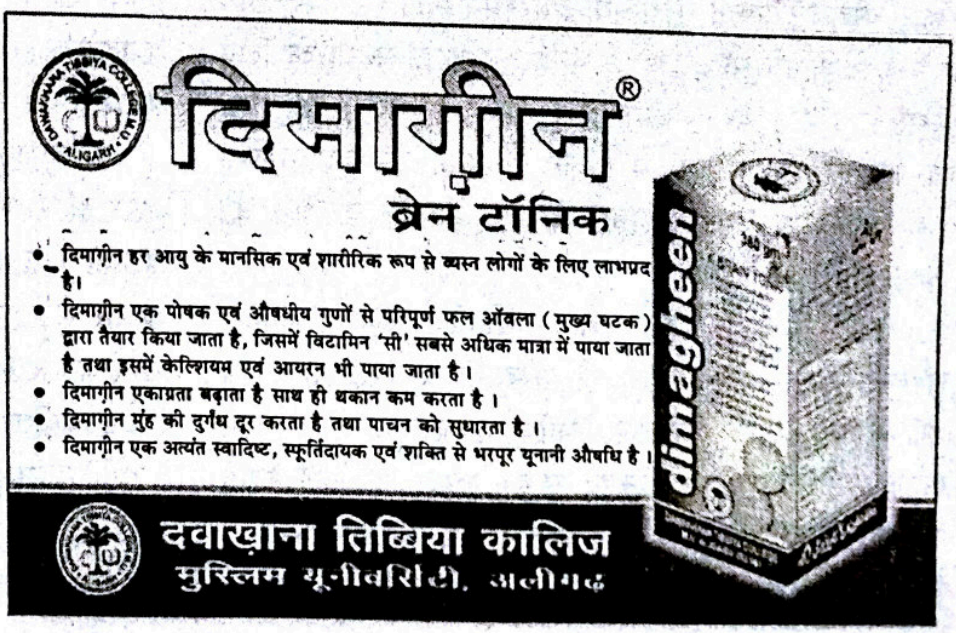

बदल रही होगी और पत्नी को भरोसा नहीं कि पति पता नहीं कहां-कहां हरामकारी व अय्याशी कर रहा होगा ।

अपनी इस शैतानी संस्कृति को उन्होंने अपनी फ़िल्मों व मीडिया के माध्यम से पूरे संसार में अपने एजेंडों के माध्यम से फैला दिया है । पश्चिमी शिक्षा, मनोरंजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं प्रिंट व इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से अपने पाले हुए भ्रष्ट राजनेताओं, नौकरशाहों, मीडिया विशेषत: (फ़िल्मी जगत से जुड़ा मीडिया) की पकड़ दिन-प्रतिदिन मज़बूत हो रही है । इसमें मीडिया स्थानीय, क्षेत्रीय तथा अंग्रेज़ी मीडिया का विशेष योगदान है । आप किसी भी पत्र या पत्रिका को उठा लीजिए उसमें नारी देह का अश्लीलतम प्रदर्शन प्रचुर मात्रा में मिलेगा । इसको बताया जाता है कि यह पढ़े-लिखे एवं आधुनिक होने के आवश्यक गुण हैं । फिर हमारे यहां भी पश्चिम के समान ''परिवार'' को तबाह करके ''कैरियर'' व ''बराबरी'' के नाम पर एक भयानक प्रक्रिया आरंभ होकर गति पकड़ रही है । पहले संयुक्त परिवार समाप्त हुआ । अब परिवार ही नहीं रहा ।

सबसे महत्वपूर्ण यह कि स्त्री पुरुष को पूरक के स्थान पर प्रतिद्वंदी बनाने का शैतानी कृत्य बंद होना चाहिए । आज़ादी, आधुनिकता या किसी भी नये नाम पर अंधाधुंध पुराने तरीक़ों को छोड़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए ।

उदाहरण के लिए आरुषी हत्याकांड को लीजिए माता-पिता कैरियर एवं मनोरंजन के चक्कर में सुबह से शाम तक प्रत्येक रूप से एक परिपक्व एवं तथाकथित आधुनिक बच्ची को नौकरों के सहारे छोड़कर पहले क्लीनिक फिर मनोरंजन में व्यस्त रहते हैं ऐसे में शैतान मौक़ा पाकर दोनों को ग़लत कामों के लिए फंसा लेता है । यह प्रक्रिया लंबे अर्से तक चली होगी फिर मां-बाप ने बेटी को जिस हालत में देखा उसे वह बर्दाश्त नहीं कर सके क्यों ? वह वहां आधुनिकता के धर्म का निर्वाह क्यों नहीं कर पाए ?

आज गांव से शहर तक महिला उत्थान, महिला सशक्तीकरण के नाम पर जो संस्कृति बन रही है उसमें स्त्री-पुरुष, स्कूल, कॉलेज, ऑफ़िस, बस, ट्रेन, हास्टल, काल सेन्टर, कोचिंग सेन्टर, स्थान-स्थान पर आवश्यक अथवा अनावश्यक मेल जो निर्बाध बढ़ रहा है ऊपर से सूचना क्रांति के यंत्रों मोबाइल वग़ैरह-वग़ैरह ने सारी दुनिया मुट्ठी में करने के नाम पर अश्लीलता, अनैतिक यौन संबंधों को रोज़मर्रा का रूटीन बना दिया उससे पूर्व में जुड़ी शर्म एवं ग्लानि समाप्त हो गयी है, यह सब विवाहित एवं अविवाहित दोनों प्रकार के हैं । प्रकट है कि सब ही अपने आकर्षक परिधानों व स्टाईलों में मिलते हैं, एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं साथ-साथ उठते-बैठते और काम करते हैं, तो इसकी वैज्ञानिक एवं नेचुरल प्रतिक्रिया वही होगी जिसे आज हाहाकार की नौटंकी से उछाला जा रहा है । स्त्री-पुरुष शारीरिक संरचना में भिन्नता तथा दोनों में पाये जाने वाले हार्मोन्स के प्रभाव के कारण यह कभी संभव नहीं होगा, कभी इतिहास में नहीं हुआ है कि दोनों को खुला छोड़ दो हर तरह का मौक़ा हो और शैतान वह सब न कराये जिससे आज हम पीड़ित होने का ढ़ोंग कर रहे हैं ।

हम ज़हर खाना भी चाहते हैं, शराब पीना भी चाहते हैं, ड्रग्स लेना भी चाहते हैं और यह भी चाहते हैं कि स्त्री-पुरुष रोज मिले-जुले और उसकी अवांछित प्रतिक्रिया व कुपरिणाम न हों यह कैसे संभव है ? आप जब तक मानव संरचना एवं उनकी अप्राकृतिक रूप से परिवर्तित नहीं कर देते आप ऐसी उम्मीद नहीं कर सकते कि व्यसक स्त्री-पुरुष कम या बड़ी उम्र के निर्बाध इकट्ठे हों और उसके स्वाभाविक नतीजे पैदा न हों । आज ऐसा ही हो रहा है कि बोया पेड़ बबूल का आम कहां से होय । अपराध की जड़ खोदने के स्थान पर बीमारी के लक्षणों पर केन्द्रित होकर समस्या का समाधान खोजना पूर्णत: मूर्खता है । इस मूर्खता के कारण प्रतिदिन हम नयी समस्या से रूबरू हो रहे हैं । हाल ही में लिव इन रिलेशनशिप पर सुप्रीम कोर्ट का फ़ैसला इसका एक और उदाहरण है । फ़ैसला कहता है कि इस प्रकार से रहने वाले स्त्री-पुरुष अगर संबंध विच्छेद करते हैं और उनके सन्तानें भी हैं तो उनके लिए भी प्रावधान किया जाना चाहिए इस रिश्ते के तहत रहने वाले अपने-अपने विवाहित जोड़ीदारों का किस प्रकार जीवन नरक करेंगे वह कोई भी समझ सकता है । विवाह के अतिरिक्त सैक्स संबंध को क़ानूनी बनाने की अंधी आधुनिकता (पश्चिमी शैतानी

मानसिकता) की होड़ ने समलैंगिक विवाह का भी फ़ित्ना खड़ा कर दिया है ।

इतने व्यापक स्तर पर छूट देने के बाद आप अकेले कमरों या फ्लैटों पर कहां-कहां पुलिस, सी०सी०टी०वी० कैमरा तथा यौन हिंसा निरोधक समितियां बनाएंगे ? आजकल लिव इन रिलेशनशिप के बाद महिला पार्टनर का मर्डर या ब्लैकमेल बढ़ता जा रहा है । इसमें महिला के पास क्या सुरक्षा क़ानूनी अथवा सामाजिक है वह सारा ख़तरा सिर्फ़ अपने विवेक पर लेती है तथा नतीजे भी वह अकेले ही भूगतने को विवश होती हैं । समलैंगिकों का मसला इससे भी अधिक जटिल, अप्राकृतिक जोखिम से भरा हुआ है । परन्तु इस अमानवीय, अप्राकृतिक तथा शैतानी कृत्य को संयुक्त राष्ट्र ने समर्थन दिया है । अमेरिका में इसके लिए बहुत से प्रांतों में क़ानून बन गया है । ब्रिटेन में फ्रांस में बहुत से यूरोपीय देशों में यह क़ानूनी हो गया है । अब इस रिश्ते में स्त्री-पुरुष तो है नहीं या तो स्त्री-स्त्री होंगी या पुरुष-पुरुष फिर आपसी मर्ज़ी के बिना सैक्स का इल्ज़ाम लगेगा तो क्या सज़ा होगी । लिव इन रिलेशन में भी यही पेचीदगी है कि बिल्कुल अजनबी स्त्री पुरुष नितांत नये परिवेश में जीवन शुरू करते हैं तो ऐसे ज़रा-सा मनमुटाव होने पर भी महिला जाकर कह देगी कि सैक्स मेरी मर्ज़ी के बग़ैर हुआ है तो फिर हर बेड रूम के लिए सी०सी०टी०वी० आवश्यक करना होगा । पता नहीं पश्चिम की अंधी नक़ल ने हमें कितना जानवर बना दिया है कि हमारा अपना विवेक, तर्क, सांस्कृतिक मूल्य सब निष्क्रिय हो गये हैं ।

हमने अंधाधुंध एक तरफ़ा, प्रतिक्रियात्मक क़ानून महिला सुरक्षा के लिए बनाए उनका हाल हमने जहेज़ उत्पीड़न क़ानूनों के दुरुपयोग में देखा कि किस प्रकार इस क़ानून ने सबसे अधिक सास, नन्द, देवरानी, जेठानी के रूप में महिलाओं को ही प्रताड़ित किया । इस अंधाधुंध एक तरफ़ा क़ानूनसाज़ी ने कुछ महिलाओं को पुरुषों से भी अधिक उत्पीड़क बना दिया है । केवल दिल्ली में ही डॉक्टर महिलाओं द्वारा महिलाओं का उत्पीड़न ज़ोर पकड़ रहा है । वह अपनी नौकरानियों पर किस प्रकार अमानवीय अत्याचार कर रही हैं । वह हाल ही में एक सांसद की डॉक्टर की पत्नी के द्वारा नौकरानी कि की गयी हत्या से ज़ाहिर है । दिल्ली में ही साल भर में ऐसे केसों की अच्छी-ख़ासी तादाद रही है । महिलाओं पर अत्याचार के मामले में महिलाएं भी पीछे नहीं हैं तो समस्या के व्यापक आयाम के चलते इस पर पूरी व्यापकता से बहस होनी चाहिए यह नहीं कि अंधाधुंध भीड़ का इन्साफ़ मीडिया ट्रायल आरंभ कर दिया जाए ।

सबसे महत्वपूर्ण यह कि स्त्री पुरुष को पूरक के स्थान पर प्रतिद्वंदी बनाने का शैतानी कृत्य बंद होना चाहिए । आज़ादी, आधुनिकता या किसी भी नये नाम पर अंधाधुंध पुराने तरीक़ों को छोड़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए । इसका पता लगाना चाहिए कि मीडिया द्वारा कौन-सी ताक़तें विशेषत: फ़िल्म जगत का कारपोरेट सेक्टर इन्सानों को जानवर बनाकर लिव इन व समलैंगिकता के लिए प्रेरित कर रही है । इन शक्तियों के विरुद्ध सबको खड़ा होना चाहिए विशेषत: महिलाओं को । क्योंकि इन्सान जानवर बनेगा तो महिला ही सबसे ज़्यादा पीड़ित होगी । आज क़ानून तथा रीति-रिवाजों की नाकामी ने साबित कर दिया है कि मानव द्वारा बनाए गये क़ानून सदैव से समाज़ को सम्पूर्ण मार्गदर्शन नहीं दे पाये हैं । वह पूरी तरह नाकाम हैं । पूरा मार्गदर्शन केवल ईश्वरीय मार्गदर्शन में ही है । इसके बग़ैर हम अशांत एवं शांतिरहित समाज ही बना सकते हैं ।

एक और ख़ुसूसी पेशकश

'साप्ताहिक कान्ति', 'कान्ति मासिक', 'सेरोज़ा दावत' और मासिक 'ज़िन्दगी-ए-नव' दावत ट्रस्ट के तहत प्रकाशित होते हैं जिनकी संयुक्त वार्षिक सहयोग राशि 1290 रुपये होती है । यदि कोई व्यक्ति अपने या अपने सगे-संबंधियों व परिजनों के लिए चारों पत्र/पत्रिकाएं एक साथ एक वर्ष के लिए जारी करवाना चाहें तो केवल एक हज़ार रुपये एकमुश्त भेजकर जारी करवा सकते हैं ।

पत्राचार और अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें-

मैनेजर, दावत ट्रस्ट

डी-314, दावतनगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025
Tel.: Dawat: 011-26949539, 09818799113
Kanti: 011-26949430, 09818799223
Zindagi: 09818799113, Fax: 011-26958816
Email: managerdawat@gmail.com

ऑन लाइन ट्राज़ैक्शन के लिए

DAWAT TRUST, A/C No. 990839004
INDIAN BANK, JAMIA MILLIA ISLAMIA BRANCH
IFS CODE : IDIB000J029

नोट : ऑन लाइन ट्रांज़ैक्शन के बाद इदारे को सूचित कर दें ।

Asif Akhter
09326939512

M.B.

Engineering Enterprises

All Kinds of Fly Ash Bricks, Mould Makers, Spare Parts Supplier & Engineering Works

Pan Mixer Machine
Conveyor Belt
Vibrator Table

Vertical Machine Bricks Mold
Rotary Table Machine Mold
Hydraulic Jack

Infront of Om Kirana Store, Old MSEB Office, New Yerkheda, Kamptee-441002 Dist - Nagpur

मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं प्लास्टिक उत्पाद

■ डॉ॰ अनुराग कुमार श्रीवास्तव

पिछले कुछ सालों से समाज में विभिन्न रूपों में प्लास्टिक प्रोडक्ट के इस्तेमाल का चलन बढ़ा है । बच्चे का बर्थ डे हो या विवाह की वर्षगांठ, विवाहोत्सव, तिलक बरक्षा और गोद भराई का रस्म हो अथवा मृतक का शुद्धक तथा त्रयोदशाह हो, प्लास्टिक के मग, प्लेट, प्याली, गिलास तथा खानेदार थाली का चलन आम बात हो गयी है । इसी के साथ अलग-अलग वेरायटी के प्लास्टिक उत्पाद के बराबर उपयोग से कैंसर और डायबिटीज जैसी गंभीर और ख़तरनाक बीमारियां फैलने लगी हैं तथा इनके इस्तेमाल से बहुसंख्यक लोग इन जानलेवा बीमारियों की चपेट में आकर मौत के मुंह में जा रहे हैं ।

यदि आप नियमित रूप से प्लास्टिक की प्याली में चाय पी तथा थाली में भोजन कर रहे हैं तो आप सावधान तथा ख़बरदार जो जाइए क्योंकि प्लास्टिक की जिस प्याली में आप चाय की चुस्की ले तथा थाली में भोजन कर रहे हैं, वह स्वास्थ्यनाशक तथा रोगकारक है । चाय के कप तथा तश्तरी ही नहीं, घटिया प्लास्टिक से निर्मित पानी की बोतल, टिफ़िन बाक्स, लंच बाक्स तथा खिलौने भी कैंसर जैसी गंभीर प्राणघातक बीमारियों को जाने-अनजाने मौन निमंत्रण दे रहे हैं । चिकित्सकों के कथनानुसार कैंसर की चपेट में आने वाले मरीज़ों में पांच से सात प्रतिशत रोगी प्लास्टिक के उत्पादों के इस्तेमाल से कैंसर से पीड़ित होकर मृत्यु के ग्रास बन रहे हैं । दैनिक जीवन में प्लास्टिक की खपत में बढ़ोत्तरी होने के साथ ही मरीज़ों की तादाद में भी इज़ाफ़ा हो रहा है ।

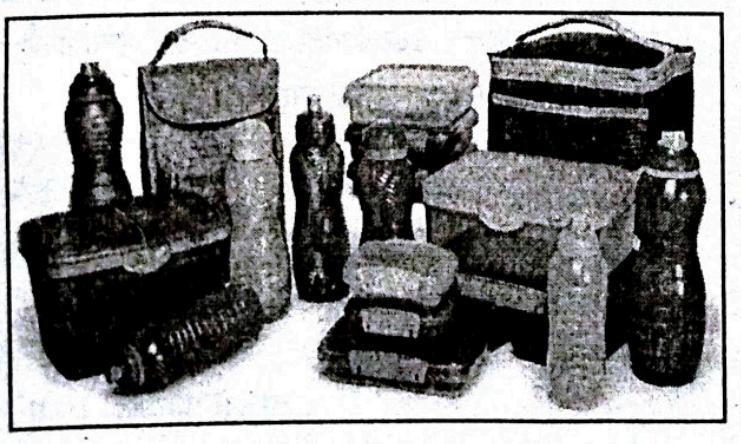

चिकित्सा वैज्ञानिकों तथा स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार प्लास्टिक में मौजूद रसायन से शरीर में कैंसर की बीमारी उत्पन्न होती है । गरम चाय प्लास्टिक के सूक्ष्म रसायन को अपने में लि‍ा लेती है जिससे कैंसर की बीमारी का ख़तरा बढ़ जाता है । सस्ते क़िस्म के शिलौनों के प्रयोग से भी अप्रत्यक्षत: कैंसर को बढ़ावा मिल रहा है । इसी प्रकार टिफ़िन बॉक्स तथा लंच बॉक्स में रखे गर्म खाद्य पदार्थों में भी प्लास्टिक रसायन के घुलन तथा मिश्रण से कैंसर का दुष्प्रभाव होता है । प्लास्टिक की बोतल का बराबर इस्तेमाल भी ख़तरे से ख़ाली नहीं ।

दरअस्ल प्लास्टिक उत्पाद रंग, रंजक और इसी प्रकार के तमाम अन्यान्य सूक्ष्म अकार्बनिक रसायनों के सम्मिश्रण से बनाये जाते हैं । रंग और रंजक औद्योगिक उत्पाद हैं जिनका उपयोग प्लास्टिक की थैलियों तथा अन्य सामग्रियों को चमकीला बनाने के उद्देश्य से किया जाता है । रंजक पदार्थों में हानिकारक कैडमियम नामक तत्व पाया जाता है । अधिकतर प्लास्टिक के प्यालों या गिलास को रिसाइकिल प्लास्टिक से तैयार किया जाता है । इनके निर्माण में जिन रासायनिक तत्वों का प्रयोग होता है, वे खाद्य अथवा पेय पदार्थों के साथ मिलकर प्रयोक्ता के शरीर में प्रविष्ट होते हैं । प्लास्टिक की बोतल के अधिक गर्म होने पर उसमें मौजूद रसायन डाइऑक्सिन का रिसाव शुरू कर देते हैं । डाइआक्सिन मानव शरीर की अंत:कोशिकाओं को आंतरिक रूप से दुष्प्रभावित करते हैं जिससे महिलाओं में स्तन कैंसर का ख़तरा बढ़ जाता है । प्लास्टिक की बोतल

के निर्माण में बिसफेनाल नामक केमिकल का इस्तेमाल किया जाता है । इनका पुनर्प्रयोग करने की स्थिति में ये रासायनिक तत्व जल में घुलनशील होने लगते हैं जो कैंसरकारक होते हैं । प्लास्टिक की बोतलों के निर्माण में पी०वी०सी० का भी प्रयोग किया जाता है तथा इसमें थैलेट्स नामक रसायन पाया जाता है, जो मानव शरीर में लीवर कैंसर की संभावना में वृद्धि कर देता है ।

अधिक दिन नहीं हुए जब भारतीय समाज में बच्चों के जन्मोत्सव, वैवाहिक तथा धार्मिक समारोहों एवं अन्य कार्यक्रमों में खाने-पीने के उद्देश्य से मिट्टी से निर्मित छोटे-बड़े कुल्हड़, कसोरा, दोना-पत्तल आदि का इस्तेमाल होता था । दुकानदार काग़ज़ निर्मित ढेंगा और पुड़िया में सामान देता था । दक्षिण भारत में केले के पत्तों पर भोजन परोसने का चलन है । इनके प्रयोग से मानव स्वास्थ्य पर किसी प्रकार का हानिकारक दुष्प्रभाव नहीं पड़ता था । अब इनके स्थान पर प्लास्टिक उत्पाद का चलन बढ़ जाने से मानव स्वास्थ्य पर प्राणघातक बीमारियों की शक्ल में हानिकारक प्रभाव पड़ने लगा ।

इनसे सुरक्षा की दृष्टि से इनके स्थान पर हमें कांच की बोतल, गिलास, स्टील फ्लास्क, चीनी मिट्टी तथा साधारण मिट्टी से बने पात्र का अपने दैनिक जीवन में अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए । पर्यावरण असंतुलन को बढ़ाने वाले तथा स्वास्थ्य के लिए ख़तरनाक पॉलिथीन की थैलियों के उत्पादन, व्यवसाय तथा प्रयोग पर क़ानूनन प्रतिबंध लगा दिया जाना चाहिए । मिनरल वाटर अथवा साफ़्ट ड्रिंक की प्लास्टिक बोतलों को एक बार प्रयोग के पश्चात तत्काल नष्ट कर दिया जाना चाहिए । प्लास्टिक उत्पाद के प्रयोग से होने वाले नुक़सान के प्रति लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है ।



कविता

यातायात

सड़कों पर बढ़ रही है भीड़
जगह-जगह लगने लगे हैं जाम,
सड़क पर चलना सड़क पार करना
होता जा रहा है एक दुरूह काम ।

दिनोंदिन बढ़ रही है दुर्घटनाएं
बिन आयी मौत मर रहे हैं लोग,
वाहनचालकों में रोड रेज़ नाम का
फैल रहा है एक नया घातक रोग ।

हर कोई हवा के घोड़े पर सवार है
जैसे-तैसे आगे निकलने को बेक़रार है,
सिविक सेंस रोड सेंस नियम क़ानून
सबके उल्लंघन पर उतारू है जनून ।

पानी बिजली फ़ोन सीवर विभाग वाले
सड़कों की बरबादी में पूरा सहयोग देते हैं,
बाक़ी बची कोर क़सर अतिक्रमणकारी
अपनी कारगुज़ारी से पूरी कर देते हैं ।

बीच सड़क में निर्माण सामग्री के ढेर
जगह-जगह नज़र आते हैं,
आम रास्ता रोक कर शामियाने
बेहिचक बेख़ौफ़ तान दिये जाते हैं ।

बारातें रैलियां और जलूस भी
इस भेड़ियाधसान में योगदान देते हैं,
जब तक चाहें कभी भी कहीं भी
अच्छा-ख़ासा चलता ट्रैफ़िक रोग देते हैं ।

सड़कों की मरम्मत तब तक टाली जाती है
जब तक अख़बार और जनता हल्ला नहीं मचाती है,
सड़कें बनाने में भी हिस्सा बांट का
खुला खेल चलता है,
इसीलिए नयी बनी सड़का का जीवन
भी उतना ही सीमित होता है ।

■ **ओमप्रकाश बजाज**
बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर,
जबलपुर-482001 (म०प्र०)

उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका

● संपादन प्रभाग

उत्तरी अमेरिका विश्व का तीसरा बड़ा महाद्वीप है, जबकि दक्षिणी अमेरिका विश्व का चतुर्थ महाद्वीप कहलाता है । दो करोड़ 42 लाख 55 हज़ार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैले उत्तरी अमेरिका की खोज सन 1492 ई॰ में कोलम्बस द्वारा की गयी थी, इसे 'नयी दुनिया' के नाम से जाना गया ।

मध्य अमेरिका व कैरेबियान सागरीय क्षेत्र तक फैले उत्तरी अमेरिका में 29 देश स्थित हैं । उत्तरी अमेरिका का नाम अमेरिगो विस्पुक्की नामक साहसी यात्रा के नाम पर अमेरिका पड़ा । उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी भाग में पश्चिमी कार्डिलेरा (रॉकी पर्वतमाला) और पूर्वी भाग में अप्लेशियन पर्वत विस्तृत हैं । रॉकी पर्वत की प्रमुख श्रृंखलाओं में कास्केड, सियरानेवादा, कोस्ट रेंज और सियरामाद्रे हैं । उत्तरी अमेरिका का उच्चतम पर्वत शिखर माउंट मेककिनले अलास्का है, जो 6194 मीटर ऊंचा है । कोलोरेडो व मेक्सिको का पठार यहीं स्थित हैं ।



उत्तरी अमेरिका की पांच झीलों सुपीरियर मिशीगन, ह्यूरन, ईरी और ओंटेरियो के समूह को महान झील कहते हैं । यहां मिसीसिपी, मिसौरी, रियोग्रांडे, यूकन, अरकंसास, कोलोरेडो, ओहियो, कोलम्बिया, स्नेक, रेड आदि अनेक नदियां प्रवाहित होती हैं । उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट पर न्यूफाउंडलैंड के दक्षिणी पश्चिमी तटीय भाग को 'गांड बैंक' कहते हैं, यह क्षेत्र 96 हज़ार वर्ग किमी में विस्तृत है और मत्स्य पालन का प्रमुख क्षेत्र है । उत्तरी अमेरिका में संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिणी पूर्वी तट (मेक्सिको की खाड़ी) पर चलने वाले चक्रवात हरीकेन और टारनडो कहलाते हैं ।

सुपीरियर झील, जो 82 हज़ार 350 वर्ग किमी क्षेत्र में फैली है, उत्तरी अमेरिका की विश्व की सबसे ताज़े जल की झील है । एस्ट्रोडोम में विश्व का सबसे बड़ा गुम्बद है । उत्तरी अमेरिका के न्यूयार्क नगर में अमेरिकन म्यूजियम ऑफ़ नेचुरल हिस्ट्री विश्व का सबसे बड़ा अजायबघर है, न्यूयार्क सिटी में ही स्थित ग्रांड सेन्ट्रल टर्मीनल विश्व का सबसे बड़ा स्टेशन है ।

उत्तरी अमेरिका के शीतोष्ण घास के मैदान 'प्रेयरी' कहलाते हैं, यहां रेड इंडियन और नीग्रो प्रमुख प्रजातियां निवास करती हैं । न्यूयार्क में विश्व का सबसे बड़ा बन्दरगाह और इसी महाद्वीप में प्रमुख कार उद्योग का केन्द्र डेट्रायट स्थित है ।

उत्तरी अमेरिका के कनाडा का बुड बफेलो नेशनल पार्क विश्व का सबसे बड़ा पार्क है । यहां कोलम्बिया के पठार तथा रॉकी पर्वत के मध्य स्थित येलोस्टोन पार्क में विश्व का सबसे बड़ा गीजर ओल्ड फेथफुल सागर नामक गीजर है । कनाडा का कागज़ उद्योग मांट्रियल में केन्द्रित है । उत्तरी अमेरिका के कैनेडियन पैसिफिक रेल मार्ग एवं यूनियन पेसिफिक रेल मार्ग, दो प्रमुख रेल मार्ग हैं ।

विश्व के चतुर्थ महाद्वीप दक्षिणी अमेरिका का क्षेत्रफल एक करोड़ 77 लाख 98 हज़ार 500 वर्ग किमी है । इसमें 15 देश स्थित हैं । विश्व की सबसे लंबी पर्वतमाला एंडीज और सर्वाधिक ऊंचा शिखर माउंट ओजोस डेल सलादो दक्षिणी अफ़्रीक़ा में ही हैं । एंडीज पर्वतमाला नये मोड़दार पर्वतों के क्रम में आते हैं । एंडीज पर्वतमाला उत्तर में ट्रिनीडाड द्वीप से प्रारंभ होकर दक्षिण में स्टाटन द्वीप तक

विस्तृत है । यह क़रीब 7200 किमी लंबी है ।

वेनेज़ुएला में स्थित एंजिल नामक प्रपात विश्व का सबसे ऊंचा झरना है । दक्षिणी अमेरिका में पेरू-बोलिविया सीमा पर विश्व की सबसे अधिक ऊंची नौकायन झील टिटिकाका स्थित है । ब्राजील नदी में बहने वाली अमेजन नदी विश्व में अपवाह क्षेत्र की दृष्टि से दक्षिणी अमेरिका की प्रथम नदी है । इसका अपवाह क्षेत्र 70 लाख 50 हज़ार वर्ग किमी है । यह नदी विश्व की सबसे लंबी द्वितीय नदी है ।

चिली-अर्जेंटीना सीमा पर विश्व का सबसे ऊंचा ज्वालामुखी ओजेस डेल सलादो दक्षिणी अफ़्रीक़ा में स्थित है । विश्व की सबसे ऊंचाई पर स्थित बोलिविया राज्य की राजधानी लापाज दक्षिणी अमेरिका में ही है । दक्षिणी अमेरिका में गुयाना, ब्राजील तथा पैंटागोनिया के पठार हैं । अमेजन, ब्रेंकों, मदीरा, ओरिनको, परानापराग्वे, उरूम्वे, रियो ग्रांडे की सुल आदि प्रमुख नदियां यहीं पर हैं । अर्जेंटीना में विस्तृत घास के मैदान 'पेम्पाज' एवं सबसे बड़ा नगर रियो डी जेनरो ब्राजील) के अलावा वनों से रबड़ सिनकोना, चंदन, कार्नोब आदि वन्य वस्तुएं दक्षिणी अमेरिका से ही प्राप्त होती हैं । ब्राजील के कहवा बाग़ों को 'फजैंडा' और उष्ण आर्द्र वनों को सेल्वाज कहते हैं । दक्षिणी अमेरिका के चिली में इस महाद्वीप का शुष्कतम भाग व मरुस्थल आयकामा का मरुस्थल स्थित है । दक्षिणी अमेरिका के प्रमुख बंदरगाहों में बेलेस (पारा) साओलुइस, रियोडिजेनेरो, रियोग्रांडे, ब्यूनस आयर्स, सेंटयागो व तुमबस आदि प्रमुख हैं ।

शक्तिशाली जीव है घोंघा

दुनिया का सबसे शक्तिशाली जीवन न हाथी है, न गेंडा, न बैल या घोड़ा । यह है जीवों में सबसे तुच्छ समझा जाने वाला घोंघा ।

सामान्यत: वर्षा के मौसम में घर के आसपास लॉन में, मैदान में, खेत-खलिहान में या बाग़ीचे में घोंघा पाया जाता

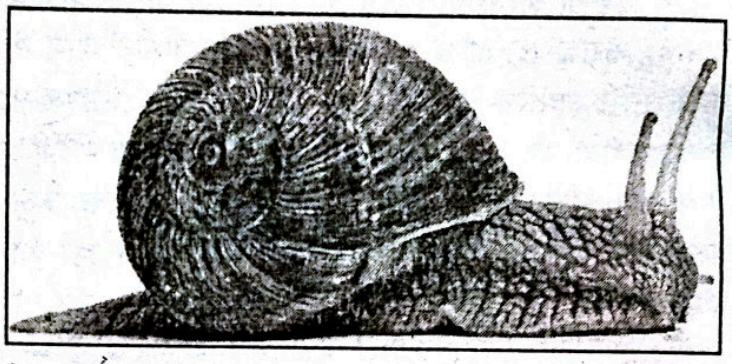

है । भूमि पर रेंग-रेंगकर अपने गंतव्य की दिशा में बढ़ने वाला यह जीव आकार में छोटा तथा वज़न में हलका होता है । वह 100 ग्राम से भी कम होता है मगर वह अपने वज़न से भी 400 गुना भारी वस्तुओं को धीमे-धीमे खींचकर ले-जा सकता है, जबकि शारीरिक दृष्टि से उससे ज़्यादा बड़े और वज़नदार जीव अपने से ज़्यादा वज़नदार चीज़ों को खींचकर नहीं ले जा सकते । इस प्रकार हुआ न यह ताक़तवर ।

घोंघे की रफ़्तार बहुत धीमी होती है तथा वह लगभग 5 मीटर प्रति घंटा की गति से चलता है ।

''हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : सबसे बड़ी नेकी यह है कि आदमी अपने बाप के दोस्तों के साथ अच्छा सलूक करे ।''

(मुस्लिम)

डॉ॰ अब्दुल ख़ालिक़

मुंबई

कमाल का है काक्रोच

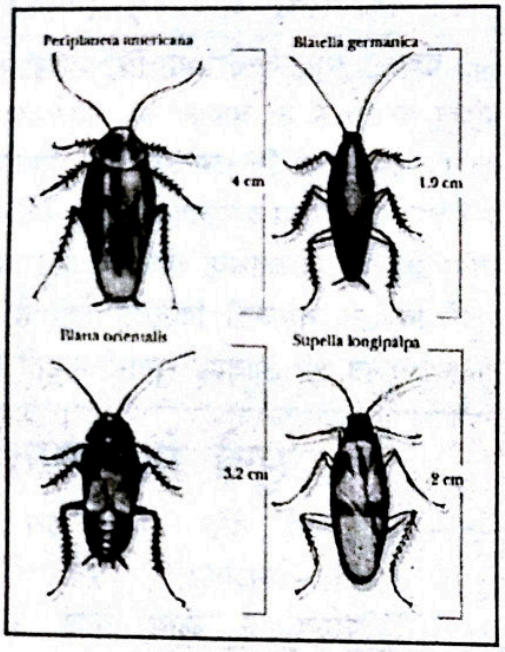

काक्रोच आमतौर पर घरों में पाया जाने वाला सबका जाना-पहचाना नन्हा-सा जीव है जिसकी शारीरिक बनावट देखकर आपको डर लगता होगा मगर इस नन्हें जीव में पायी जाने वाली अनेक ऐसी विशेषताएं हैं जिन्हें सुनकर आप आश्चर्यचकित हो जाएंगे ।

आकार की दृष्टि से दुनिया का सबसे बड़ा काक्रोच साउथ अमेरिका में पाया जाता है । यहां इसकी लंबाई 6 इंच होती है तथा इसके पंखों का फैलाव एक फुट तक होता है ।

विश्व भर में काक्रोच की पांच हज़ार से अधिक प्रजातियां पायी जाती हैं ।

काक्रोच एक बार में चालीस मिनट तक अपनी सांस रोके रह सकता है । यदि काक्रोच का सिर काट दिया जाए तो वह एक सप्ताह तक जीवित रह सकता है । वह बिना खाना खाये एक महीने तक ज़िन्दा रह सकता है तथा बिना पानी पिये एक सप्ताह जीवित रह सकता है । दौड़ने के मामले में वह किसी मैराथन धावक से कम नहीं है । वह एक घंटे में तीन मील तक आसानी से दौड़ सकता है । उसमें सूंघने की शक्ति ग़ज़ब की होती है । घ्राण .क्षमता के कारण वह अपने परिवार के सदस्यों का सरलता से पता कर सकता है ।

● जूही श्रीवास्तव

इन्हें भी जानिए

1. व्हेल मछली पानी का ही नहीं, अपितु दुनिया का सबसे भारी जीव है ।
2. भालू घायल होने पर आदमी की तरह रोता है ।
3. कछुए की औसत आयु 300 वर्ष है ।
4. एक टिड्डी एक बार में अपने वज़न से दस गुणा तक खाना खाती है ।
5. मधुमक्खियां अल्ट्रावायलेट किरणें भी देख सकती हैं ।
6. शुतुरमुर्ग़ का अंडा सात पौंड से भी ज़्यादा वज़न का होता है ।
7. कीवी नामक चिड़िया दो फुट तक भी नहीं उड़ सकती है ।
8. ज़ोर आज़माइश का शौक़ हिरनों में अधिक पाया जाता है ।
9. बतासी चिड़िया दिन भर में दस हज़ार कीड़े चट कर जाती है ।

रोहित यादव
सैदपुर, मंडी अटेली-123021

माल का लालच और ईमान दोनों किसी बन्दे के दिल में हरगिज़ जमा नहीं हो सकते ।

मद्रासी

मद्रासी होटल
मालवीय रोड
रायपुर (सी०जी०)
फोन : 0771-2539516,2236788

मद्रासी होटल
शॉप नं० 1-7
मोतीबाग़ चौपाटी, रायपुर
फोन : 0771-2533946, 5053603

भाप से चलने वाली कारें कब बनी?

जिस समय मोटरकारों का आविष्कार हुआ था, उस समय आरंभिक दौर में भाप से चलने वाली कारें अत्यधिक लोकप्रिय थी । इसका कारण यह था कि जहां बिजली से चलने वाली कारों की बैटरियों को कुछ समय के बाद चार्ज करने की आवश्यकता होती थी, वहीं तेल से चलने वाली कारें बहुत बदबूदार धुआं छोड़ती थी, जबकि भाप से चलने वाली ये कारें न केवल कोयले या मिट्टी के तेल से चल सकती थी, बल्कि अन्य किसी भी कार को गति के मामले

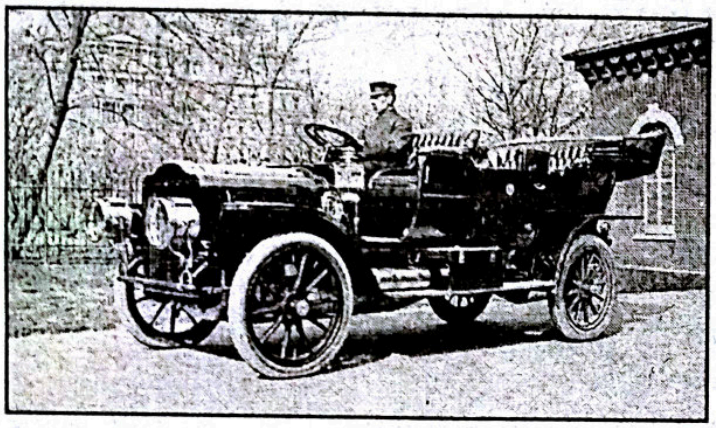

में पीछे छोड़ देती थी । सन 1926 में यह कार 127 मील प्रति घंटे की रफ़्तार से चली थी ।

भाप से चलने वाली कार का डिज़ाइन फ़ोटोग्राफ़ी के उपकरण बनाने वाले स्टेनली बंधुओं ने सन 1896 में तैयार किया था । हालांकि इन कारों में काफ़ी कमियां भी थी । जैसे, इन कारों को काफ़ी मात्रा में ताज़े पानी की ज़रूरत पड़ती थी और भाप बनने में 25 से 30 मिनट तक का समय लग जाता था । कुछ समय बाद गैस पर आधारित कारों का विकास होने के साथ ही इन कारों की मांग कम हो गयी ।



बादलों की गड़गड़ाहट से पहले बिजली क्यों चमकती है ?

बच्चों, तुमने देखा होगा कि बारिश के मौसम में जब बादल गरजते हैं तो बादलों की गड़गड़ाहट सुनायी देने से पहले आसमान में बिजली चमकती दिखायी देती है । ऐसा क्यों होता है ? ऐसा इसलिए होता है क्योंकि प्रकाश का वेग ध्वनि के वेग से अधिक होता है और यही कारण है कि पहले बिजली चमकती दिखायी देती है और उसके बाद बादल गरजने की आवाज़ सुनायी पड़ती है ।

सुनो मेरी बात

बंधुओ देना ध्यान इस ओर
सोच-समझकर देना वोट
पसन्द न आये कोई प्रत्याशी
तो नोटा का बटन दबा दो
वोट डालने अवश्य ही जाना
लोकतंत्र को सबल बनाना
नेता के झांसे में न आना
निकल पड़े नेता सड़कों पर
वादों का आश्वासन लेकर
वोट मांगते हाथ जोड़कर
जैसे भीख कटोरा लेकर
इनके झांसे में नहीं आना
भ्रष्टाचार अब है मिटाना
अवसरवादी नेताओं को
वोट न देना वोट न देना
जाति-पाति का भेद मिटाकर
अच्छे लोगों को चुन के है लाना ।

यशपाल जैन 'आदर्श'

जयपुर

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 09818799223, 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

Ficon

FROM DREAM TO DESTINY





The Avenues
Plot No. 3, Ahbab Co-op.,
Housing Society,
Police Line Takli, Nagpur

Galaxy heights
PLOT NO. 18, GORLE LAY-OUT,
POLICE LINE TALKILY, NAGPUR

NAEEM KHAN
9870990080
9371002783

#85, Parshant Nagar,
Near CID Office Anant Nagar Road,
Police Line Takli, Nagpur - 440013
E-mail : naeem@ficon.infra.com

Posted on 20-21 April 2014
May 2014
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.04.2014

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2012-2014
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2012-14

IRFAN
9423681927
SHAFIQUE
9890362882





Rajdhani

SKF, NBC, FLT, ZKL, USSR BEARING, 'V' PULLEY 'V' BELT, BEARING SLEEVE, BEARING BLOCK OILSEAL, CHAIN SPROCKETS, ELECTRIC MOTOR, PUMP, H.T. NUT BOLT, GREASE, HARDWARE & POWER TOOLS, INDUSTRIAL GENERAL, MATERIAL SUPPLIER.

MILL STORES

Panchpaoli Road, Chitra Talkies Square,
Bhaldarpura, Nagpur - 440 018,
Ph. : 0712-2764861, Fax : 0712-2730609
E-mail : rajdhanimill@rediffmail.com
rajdhanimillstore@ymail.com

SKF NBC BEARINGS FLT ZKL ABC

